ECP

प्रारम्भिक पालि ज्ञान पाठ्यक्रम

(Elementry Course of Pali)

पालि प्रबोध

समीक्षण

आचार्य ब्रह्मदेव नारायण शर्मा

पाठ लेखन

आचार्य संघसेन सिंह
आचार्य विजय कुमार जैन
डा. अवधेश कुमार चौबे
डा. गुरचरण सिंह नेगी
डा. प्रियसेन सिंह

सम्पादन एवं संयोजन

डा. जयप्रकाश नारायण

सहायता

डा. सच्चिदानन्द तिवारी
डा. अजय कुमार मिश्र

प्रकाशनम्

प्रो. रमाकान्त पाण्डेय
निदेशक, मुक्तस्वाध्यायपीठम्
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली

प्रथममुद्रणम् – 2014

टङ्कण

मैसर्स अमर प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली – 110 009

पृष्ठ विन्यास

राजीवकुमारसिंह
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली

पत्र परिचय

प्रस्तुत 'प्रारम्भिक पालि ज्ञान पाठ्यक्रम' पाँच पाठों में विभक्त है। इसके अन्तर्गत प्रथम पाठ में पालि भाषा का परिचय तथा इसका उद्भव एवं विकास विवेचित है। इसमें पालि भाषा में गुम्फित त्रिपिटक साहित्य का परिचय दिया गया है। द्वितीय पाठ में धम्मपद से चयनित 47 गाथाओं में बुद्धवचनों को साररूप में प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त सीलवैभवं, असिस्टाचारफलं, दानमाहात्म्यं, पूज्जस्स सम्मानं तथा सुगते भत्ति शीर्षकों के माध्यम से पालि वाङ्मय के कुछ प्रेरक-प्रसंगों को उपस्थापित किया गया। तृतीय पाठ में पालि व्याकरण की परम्परा, उसकी वर्णमाला, सन्धि, समास, कारक व विभक्ति, शब्दरूप और धातुरूप दिये गये हैं। चतुर्थ पाठ में पालि वाक्य रचना को विविध उदाहरणों के द्वारा समझाया गया है। पञ्चम पाठ में अनुवाद कौशल तथा पालि गद्यांश समझने के विकास के लिए कुछ अपठित पालि गद्यांश अभ्यासार्थ दिये गये हैं।

पाठ्य-सामग्री के अन्त में प्रायोगिक प्रश्न (Assignments) के स्वरूप तथा उनके लिए सहायक ग्रन्थों के निर्देश भी दे दिए गये हैं।

—◆—

प्रथम पाठ (Unit-I) पठमो पाठो

1. पालि भाषा और साहित्य का सामान्य परिचय

पाठ संरचना

1.1 प्रस्तावना

पालि भाषा और साहित्य पाठ में आपका स्वागत है। आप जानते हैं कि 'पालि' भारत की पुरातन भाषा है। संस्कृत की तरह यह भी एक जीवन्त भाषा है और संस्कृत की ही तरह इसमें पठन-पाठन और धार्मिक कार्य व लेखन की परम्परा विद्यमान रही है। इस पाठ में आप पालि भाषा के उद्भव और विकास तथा पालि साहित्य एवं पालि व्याकरण के

विषय में पढेंगे। भगवान् बुद्ध ने इसी भाषा में सम्पूर्ण मानव समाज को कल्याणकारी उपदेश दिया तथा सुख और शांति से जीने का मार्ग बतलाया तथा अहिंसा का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया। भगवान् बुद्ध के वचन का संग्रह तिपिटक (त्रिपिटक) भी इसी भाषा में प्राप्त होते हैं।

1.2 उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन से आप–

- पालि भाषा का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- पालि भाषा के स्वरूप से अवगत हो पायेंगे।
- पालि भाषा की विशेषताओं को समझने में सक्षम होंगे।
- पालि साहित्य की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- पालि शब्द की व्युत्पत्ति से अवगत हो सकेंगे।
- पालि धम्म संगीतियों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

1.3 पालि भाषा का परिचय

पालि भाषा भारत की प्राचीन भाषाओं में से एक है। इस विषय में भाषा-शास्त्री विद्वानों के बीच दो प्रकार की राय है। एक मत पालि भाषा को आर्यभाषा परिवार की भाषा मानता है और दूसरे मत के अनुसार यह भाषा प्राचीनतम जनभाषाओं से उद्भूत है। इस विषय में जो भी तथ्य मान्य हो, किन्तु इतना तो कहा ही जा सकता है कि यह भाषा मूलतः उत्तरभारत की भाषा है और गौतम बुद्ध के उद्‌भव के पहले से अस्तित्व में रही होगी। बुद्ध के उपदेशों की संवाहिका होने के कारण बौद्ध धर्म के विस्तार के साथ ही एशिया के अनेक देशों में जा पहुँची। व्याकरण और संरचना की दृष्टि से यह संस्कृत की अपेक्षा सरल है।

पालि भाषा का प्रारंभिक नाम 'मागधी' था। इसका 'पालि' नाम तो बहुत बाद में रखा गया। वस्तुतः 'पालि' शब्द का प्रारंभिक प्रयोग बुद्ध-वचनों के पाठ (Text) के रूप में होता था। बुद्ध-वचनों के पाठ के रूप में प्रयुक्त यह शब्द पूरे बुद्ध-वचन और उस पर विकसित उत्तरकालीन साहित्य के लिए प्रयुक्त होने लगा। मागधी नाम वाली भाषा का पालि नाम वाली भाषा बनने के पीछे यही राज़ (भेद) है। 'पालि' भाषा 'मगध' क्षेत्र की राजभाषा रही, इसीलिए इसे 'मागधी' भी कहा जाता रहा है। पालिभाषा में निबद्ध साहित्य में बुद्धवचनों के साथ-साथ ई.पू. 5वीं शताब्दी से ई. 5वीं शताब्दी तक के भारतीय दार्शनिक विचारों, संस्कृतियों राजनैतिक एवं भौगोलिक इतिहास आदि की ज्ञानराशि सन्निहित है।

1.3.1 'पालि' शब्द की व्युत्पत्ति के विषय में विविध मत

'पालि' शब्द की व्युत्पत्ति के विषय में विद्वानों के विचार पृथक्-पृथक् हैं। पालि साहित्य और बौद्ध विद्या के विशिष्ट विद्वानों के पालि सम्बन्धी विचार इस प्रकार हैं–

क. आचार्य बुद्धघोष - आचार्य बुद्धघोष ने 'अट्ठकथाओं' में 'पालि' शब्द का प्रयोग 'बुद्ध-वचन' या 'मूल-त्रिपिटक के पाठ' के अर्थ में किया है। यथा– 'इमानि ताव पालियं अट्ठकथायंपन' (विसुद्धिमग्ग)।

इसी प्रकार दीपवंस, चूळवंश आदि में 'पालि' शब्द का प्रयोग 'बुद्ध-वचन' या 'मूल-त्रिपिटक' के अर्थ में किया गया है।

ख. म. म. विधुशेखर भट्टाचार्य – महामहोपाध्याय विधुशेखर भट्टाचार्य ने 'पालि' शब्द का विकास 'पंक्ति' शब्द से माना है। 'पालि' शब्द का क्रमिक विकास निम्न प्रकार है– 'पंक्ति > पन्ति > पत्ति> पल्लि > पालि'।

भिक्षु जगदीश कश्यप ने इस मत का खण्डन करते हुए कहा कि 'पालि' शब्द 'पंक्ति' अर्थ में तिपिटकों में प्रयुक्त नहीं हुआ है। यदि 'पालि' शब्द का अर्थ 'पंक्ति' होता तो 'अट्ठकथाओं' में उसका बहुवचन में प्रयोग मिलता; इसके विपरीत कथाओं में 'पालि' का मौलिक स्वरूप तक नहीं मिलता।

ग. भिक्खु सिद्धार्थ – भिक्खु सिद्धार्थ ने 'पालि' शब्द का मूल संस्कृत 'पाठ' शब्द माना है। उनकी अवधारणा है कि वेदपाठी ब्राह्मण जब बौद्ध हुए तो पूर्व परिचित 'वेद-पाठ' के लिए प्रयुक्त 'पाठ' का प्रयोग बुद्ध-वचनों के लिए भी करने लगे। क्रमशः वही 'पाठ' शब्द 'पाळ> पळि > पालि' हो गया।

उक्त अवधारणा के लिए आवश्यक है कि 'पाळ' शब्द का प्रयोग पालि-साहित्य में हो, किन्तु भिक्खु जी ने इस दिशा में कोई उद्धरण नहीं दिया है।

घ. भिक्खु जगदीश कश्यप – भिक्खु जगदीश कश्यप के अनुसार 'पालि' शब्द का प्राचीनतम रूप 'परियाय' शब्द के रूप में मिलता है। तिपिटकों में 'परियाय' शब्द का अनेकधा प्रयोग मिलता है। यथा–'को नाम अयं भन्ते धम्मपरियायोति', 'भगवता अनेकपरियायेन धम्मो पकासिती' आदि। उक्त स्थलों में 'परियाय' शब्द का आशय 'बुद्धोपदेश' से है। इस तरह 'परियाय' शब्द से ही 'पालि' शब्द बना है। भिक्खु जगदीश कश्यप के अनुसार परियाय शब्द का क्रमिक विकास इस प्रकार हुआ है – परियाय > पालियाय > पालियाव > पालि।

इस तरह बौद्ध विद्या के क्षेत्र में 'पालि' शब्द 'बुद्ध-वचन' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ।

ङ. डॉ. मैक्स् वेल्सन् – जर्मनी के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. मैक्स् वेल्सन् ने 'पाटलि' या 'पाडलि' अर्थात् पाटलिपुत्र की भाषा का संक्षिप्त रूप 'पालि' माना है, किन्तु अपनी अवधारणा के पुष्टीकरण में ठोस प्रमाण नहीं दिया है।

च. कोश-ग्रन्थों के अनुसार – पालि भाषा के कोश-ग्रन्थ 'अभिधानप्पदीपिका' में 'पालि' शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है– 'पालेति रक्खतीति पालि' अर्थात् जो पालन करती है, रक्षा करती है, उसे पालि कहते हैं। यह व्युत्पत्ति 'महावंस' की निम्न अवधारणा को पुष्ट करती है– 'जब भिक्खुओं ने, जो समग्र तिपिटक और उनकी अट्ठकथाएँ कण्ठस्थ कर ले गये थे, एकत्र होकर जनता के कल्याण के लिए उन्हें लेखबद्ध किया था।'

अमरकोश के टीकाकार राय मुकुट के अनुसार 'पा रक्षणे' धातु से 'ऋतन्यञ्जि' सूत्रानुसार 'बाहुलकात्' 'आलि' प्रत्यय करके पालि शब्द बना है। अमरकोश के दूसरे टीकाकार भानूजी दीक्षित ने 'पालि' शब्द की व्युत्पत्ति निम्न प्रकार से बतलाई है– 'पाल रक्षणे' धातु से 'अच इः' सूत्रानुसार 'इ' प्रत्यय होकर 'पालि' शब्द बना है। पाणिनीय सूत्र 'राजदन्तादिषु परम्' (2.2.31) में वर्णित राजदन्तादिगण में 'गोपालिधानपूलासम' से 'पालि' शब्द का संस्कृत भाषा में व्यवहार प्राचीन काल से व्यवहृत है।

1.3.2 पालि भाषा का उद्भव और विकास

पालि भाषा का उद्भव क्षेत्र (Home Land) कौन सा था, विद्वानों ने इस विषय में कई सिद्धान्तों की उद्भावना की है, उनमें से मुख्य हैं– प्राचीन 'मगध क्षेत्र', प्राचीन

'कोसल' क्षेत्र, मध्यप्रदेश का साँची–विदिशा क्षेत्र, मध्यप्रदेश का भरहुत क्षेत्र, गुजरात का गिरनार क्षेत्र तथा प्राचीन उत्कल प्रदेश आदि स्थलों को पालि का उद्भव स्थल माना जा सकता है।

तथागत (भगवान बुद्ध) की सम्यक सम्बोधि ही पालि साहित्य का आधार है। भगवान् बुद्ध ने उपदेशों के माध्यम के रूप में लोक–भाषा को स्वीकार किया। बुद्ध के सभी उपदेश मौखिक थे। बुद्ध के समय में उपदेशों का लेखन नहीं हुआ था। उस समय धार्मोपदेशों को स्मृति में रखने की विशेष परम्परा थी। बुद्ध–वचनों को धारण करने वाले अनेक भिक्षु थे। बुद्ध जब–जब बोलते, तीव्र स्मृति के धानी भिक्षु उन्हें कण्ठस्थ कर लेते थे। ऐसे भिक्षुओं के लिए विनयधार, धाम्मधार, सुत्तन्तिक, मातृकाधार आदि विशेषण प्राप्त होते हैं।

सम्बोधि प्राप्ति के पश्चात् भगवान् बुद्ध ने 45 वर्ष के लम्बे समय में जो कुछ भी धर्म प्रर्वतन किया, उसका वाङमय इतना विशाल और बहुआयामी था कि स्थूल या सूक्ष्म रूप से विभाजन किये बिना उसके आदि अन्त को समझना कठिन था। अतः भगवान् बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद अनेक संगीतियां आयोजित की गयी थी। बुद्ध ने अपने जीवनकाल में जो कुछ भी सोचा या कहा वह सभी त्रिपिटक में संग्रहीत है। त्रिपिटक का अर्थ पं. राहुल सांकृत्यायन के मत में 'तीन पिटारियाँ' हैं। अतः बाद में यह संग्रह **'त्रिपिटक'** के नाम से जाना गया। त्रिपिटक में भगवान् बुद्ध द्वारा दिये गये उपदेशों का वर्गीकरण तीन भागों में किया। इन तीन पिटकों के नाम हैं : (1) सुत्तपिटक, (2) विनयपिटक (3) अभिधम्मपिटक। इनमें से प्रथम **विनयपिटक** में पाँच ग्रन्थ हैं। इसमें भिक्षु और भिक्षुणी संघ के लिए पालनीय आचार नियमों का संकलन किया गया है। जिस भाग में विद्वानों और साधारण समाज के लिए उपदेश संग्रहीत हैं उसे **सुत्तपिटक** नाम दिया गया। सुत्तपिटक पालि वाङमय का सबसे विशाल ग्रन्थ है। जिस भाग में विद्वानों और साधकों द्वारा समझने योग्य गंभीर दार्शनिक सिद्वान्तों को निरूपित किया गया है उसे **अभिधम्मपिटक** कहा गया है।

कुछ विद्वानों ने बुद्ध–वचन को कई श्रेणियों में विभाजित किया है। उन विभाजन की विधाओं में पिटकों के रूप में विभाजन सर्वप्रसिद्ध है। वह विभाजन इस प्रकार है–

त्रिपिटक

विनयपिटक	**सुत्तपिटक**	**अभिधम्मपिटक**
भिक्खुविभंग	दीघनिकाय	धम्मसंगणि
भिक्खुनीविभंग	मज्झिमनिकाय	विभंग
महावग्गो	संयुत्तनिकाय	धातुकथा
		पुग्गलपञ्ञति
चुल्लवग्गो	अंगुत्तरनिकाय	कथा वत्थु
परिवार	खुद्दकनिकाय	यमक
		पट्ठान

बोधप्रश्न

1. पालि का प्रारंभिक नाम क्या था और क्यों?
2. बुद्ध के वचनों को स्मरण कर रखने वाले क्या कहलाते थे?

3. भिक्षु जगदीश कश्यप के अनुसार पालि की व्युत्पत्ति क्या है?

4. तिपिटकों के अन्तर्गत कितने पिटक शामिल हैं?

5. तिपिटक का क्या अर्थ है?

1.4 त्रिपिटक साहित्य का परिचय

आप जान चुके हैं कि भगवान् बुद्ध के वचनों का संग्रह त्रिपिटक साहित्य में निबद्ध है। त्रिपिटक साहित्य में मुख्य रूप से विनय पिटक, सुत्त पिटक, अभिधम्म पिटक आते हैं। इनका संक्षिप्त परिचय आप यहाँ जानेंगे।

1.4.1 विनय पिटक

विनय पिटक के अन्तर्गत पाँच ग्रन्थ आते हैं। इनमें भिक्खुओं और भिक्खुणियों के द्वारा पालनीय नियम व अनुशासन की बातें संग्रहित हैं। विनय पिटक के अन्तर्गत निम्नोक्त ग्रन्थ हैं –

सुत्त विभंग के अन्तर्गत **1. पाराजिक व 2.पाचित्तिय**

खन्धक के अन्तर्गत **3. महावग्ग व 4. चूळवग्ग** तथा **5. परिवार।**

बौद्ध भिक्खु-भिक्खुणियों के द्वारा पालन किये जाने वाले नियमों और अनुशासन की बातें विनय पिटक में प्राप्त होती हैं। इस दृष्टि से यह बौद्ध भिक्खुओं के लिए एक संविधान है। बुद्ध ने इसे निब्बाण (निर्वाण) प्राप्ति के लिए एकायन मार्ग माना है। इसे धम्म और विनय का एक समन्वित रूप कहा जा सकता है। प्रारम्भ में विनय की अधिक आवश्यकता महसूस नहीं की गई। परन्तु संघ के विकास के साथ स्वच्छन्दवादी भिक्खुओं के आचरण को संयमित करने के लिए विनय का यथारीति निर्धारण किया जाने लगा। बुद्ध के महापरिनिब्बाण (महापरिनिर्वाण) के बाद तो यही विनय भिक्खुओं का दायाद बन गया।

विनय पिटक मात्र विनय का संग्रह नहीं। उसमें तत्कालीन भारतीय संस्कृति के अनेक मनोरंजक पहलू भी उपलब्ध होते हैं। विनय के विकास के साथ साधु-जीवन की विकृत स्थिति का परिचय तो मिलता ही है, साथ ही इसमें बौद्धेतर सम्प्रदायों के विनय नियम, आभूषण, केश, कंघी, दर्पण, वस्त्र, विहार निर्माण, विविध रंग, उपानह आदि का भी सुन्दर वर्णन दिया गया है। इस प्रकार विनय पिटक जहाँ बौद्ध संस्कृति का उद्घाटन करता है वहीं तत्सम्बन्धित भारतीय संस्कृति के अनेक अध्यायों को भी प्रस्तुत करता है।

1.4.2 सुत्त पिटक

सुत्त पिटक में भगवान् बुद्ध के द्वारा उपदिष्ट सद्वचन संग्रहित हैं। इसका विषय भगवान् के उपदेशों का संग्रह करना है। सुत्त पिटक में विद्वानों और सामान्य जनता के लिए प्रदत्त उपदेश संग्रहित हैं, इसी कारण इसका नाम सुत्त पिटक है। इसमें प्राप्त वर्णन के अनुसार, भगवान् बुद्ध बहुत्र स्वयं उपदेश देते हैं, कदाचित् वे सारिपुत्र, मौद्गल्यायन या आनन्द जैसे अपने वरिष्ठ शिष्यों को धम्मोपदेश देने का आदेश देते हैं और कहीं कहीं वे शिष्यों के द्वारा उपदिष्ट विषय का अनुमोदन भी करते हुए मिलते हैं। इस प्रकार बुद्धत्व प्राप्ति से लेकर निर्वाण-प्राप्ति तक के 45 वर्षों के भ्रमण काल की जीवनचर्या का चित्रण सुत्त पिटक में मिलता है। इसी वर्णन क्रम में भारतीय संस्कृति और तत्कालीन इतिहास भी

इसमें पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है। सर्वास्तिवादी सुत्त पिटक में 'निकाय' के स्थान पर 'आगम' शब्द का प्रयोग मिलता है।

सुत्त पिटक में गद्य और पद्य दोनों मिलते हैं। प्रायः प्रत्येक सुत्त यह स्पष्ट करता जाता है कि भगवान् बुद्ध प्रदत्त धम्मोपदेश कहाँ और किसके द्वारा किया गया है। उपदेश समाप्त होने के बाद श्रोता अथवा प्रश्नकर्ता अपने कृतज्ञतापूर्ण उद्‌गार व्यक्त करता है और साथ ही भगवान् बुद्ध की शरण में और उनके धर्म तथा संघ की शरण में जाने का भी संकल्प करता है। सुत्त पिटक पाँच भागों या सुत्तों में विभक्त है– दीघ निकाय, मज्झिम निकाय, संयुत्त निकाय, अंगुत्तर निकाय और खुद्दक निकाय।

उपर्युक्त खुद्दक निकाय के अन्तर्गत अधोलिखित छोटे-बड़े ग्रन्थ शामिल हैं–

1. खुद्दकपाठ	2. धम्मपद	3. उदान	4. इतिवुत्तक
5. सुत्तनिपात	6. विमानवत्थु	7. पेतवत्थु	8. थेरगाथा
9. थेरीगाथा	10. अपदान	11. बुद्धवंस	12. चरियापिटक
13. जातक	14. महानिद्देस	15. चूळनिद्देस	16. पटिसम्भिदामग्ग

ब्रह्मदेश की परंपरा के अनुसार (17) **नेत्तिपकरण**, (18) **पेटकोपदेस** और (19) **मिलिन्दपञ्ह** ये तीन ग्रन्थ भी अपने वैशिष्ट्य व महत्ता के कारण तिपिटक के अभिन्न अंग माने जाने लगे हैं। इन्हें अनुपिटक भी कहते हैं।

1.4.3 अभिधम्म-पिटक

अभिधम्म पिटक दोनों पिटकों की अपेक्षा बाद की है। इसमें आध्यात्मिक तत्त्वों व गूढ़ दर्शन की चर्चा मिलती है। इसके अन्तर्गत अधोलिखित ग्रन्थ आते हैं–

1. धम्मसङ्गणि, 2. विभङ्ग, 3. धातुकथा, 4. पुग्गलपञ्ञति, 5. कथावत्थु 6. यमक, 7. पट्ठान।

अभिधम्म पिटक जनसाधारण के लिए नहीं, अपितु एक विशिष्ट बुद्धिवादी वर्ग के लिए संग्राह्य है। परम्परानुसार अभिधम्म के प्रमुख ज्ञाता सारिपुत्र थे। शायद इसीलिए उन्हें प्रधान शिष्य के रूप में भी स्वीकार किया गया है। धर्म और विनय का संगायन तो प्रथम-द्वितीय संगीति में हो चुका था परन्तु अभिधम्म तृतीय संगीति का ही परिणाम है, यह सुनिश्चित है।

अभिधम्म सात ग्रन्थों का समुदाय है– धम्मसंगणि, विभंग, धातुकथा, पुग्गलपुञ्जति, कथावत्थु, यमक और पट्ठान।

बोधप्रश्न

6. विनय पिटक में कितने ग्रन्थ हैं?

7. ब्रह्मदेश की परम्परा के अनुसार कौन से तीन ग्रन्थ सुत्त पिटक के खुद्दक निकाय के अंग माने जाते हैं?

8. 'कथावत्थु' ग्रन्थ किस पिटक के अन्तर्गत शामिल है?

9. सुत्तपिटक के अन्तर्गत कितने निकाय हैं?

10. बौद्ध भिक्खु-भिक्खुणियों के द्वारा पालन किये जाने वाले नियमों और अनुशासन की बातें किस पिटक में प्राप्त होती हैं?

11. सुत्तपिटक में क्या संग्रहित हैं?

12. सुत्तपिटक कितने भागों में विभक्त है?

13. अभिधम्म पिटक किस वर्ग के लिए संग्राह्य है?

1.4 त्रिपिटकेतरसाहित्य

मूल तिपिटक (त्रिपिटक) साहित्य के अतिरिक्त पालि भाषा में तिपिटकों की अट्ठकथाएँ (अर्थकथाएँ) तथा उन पर टीकाएँ भी बौद्धाचार्यों के द्वारा प्रणीत की गई। इन अट्ठकथाओं और टीकाओं के अलावा विभिन्न कालखण्डों और विश्व के विभिन्न देशों में विविध प्रकार का महत्त्वपूर्ण बौद्ध धम्म विषयक साहित्य पालि भाषा में रचा गया। इस तिपिटकेतर साहित्य का संक्षेपतः परिचय आप आगे पढ़ेंगे।

1.4.1 अट्ठकथा साहित्य

अट्ठकथा (अर्थकथा) का शाब्दिक अर्थ है – अर्थ की कथा अथवा अर्थ की व्याख्या। तिपिटकों में आई हुई घटनाओं की व्याख्या करना तथा उनका अर्थ बताना अट्ठकथाओं का प्रमुख कार्य है। भगवान् बुद्ध के द्वारा उपदिष्ट सद्वचनों का अर्थ करना, उनका सन्दर्भ देना तथा बुद्धभाषित वचनों को स्पष्ट करना अट्ठकथाओं का प्रमुख उद्देश्य है। इसके अलावा यथासम्भव काल, स्थान और सम्बन्धित ऐतिहासिक परिस्थितियों का स्पष्टीकरण भी अट्ठकथाओं में प्राप्त होता है। ये अट्ठकथाएँ तथ्यों की ऐतिहासिक-पृष्ठभूमि को भी निरूपित करती है। इनमें शब्द, अर्थ और सम्बद्ध घटना की दृष्टि से भी विचार प्राप्त होते हैं। अट्ठकथा के लिए 'अत्थवण्णना' तथा 'अत्थसवण्णना' शब्दों का भी प्रयोग मिलता है। पालि साहित्य के महान् अट्ठकथाकारों में आचार्य बुद्धदत्त, आचार्य बुद्धघोष और आचार्य धम्मपाल का नाम अत्यन्त सम्मान के साथ लिया जाता है। तिपिटकों के अन्तर्गत आने वाले सभी ग्रन्थों पर अट्ठकथाएँ (अर्थकथाएँ) उपलब्ध होती हैं।

1.5 टीका साहित्य

टीका का अर्थ होता है निर्दिष्ट ग्रन्थ में आये हुए कठिन और विषम शब्दों की व्याख्या करना। टीका में दिये गये सूत्र की स्पष्ट और सरल व्याख्या दी जाती है। इस दृष्टि से तिपिटक-अट्ठकथाओं की टीकाओं का महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट स्थान है।

श्रीलंका के पराक्रम बाहु प्रथम (1156-1186 ई.) का शासन-काल पालि साहित्य के उत्तरकालीन विकास के इतिहास की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। उसके शासन-काल में श्रीलंका में एक सभा आयोजित की गई। इस सभा का संयोजन विनय के महान् आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित व विख्यात उदुम्बगिरि विहार के प्रसिद्ध सिंहली स्थविर महाकस्सप ने किया था। इसी समय से अट्ठकथाओं पर टीका और अन्य महत्त्वपूर्ण पालि साहित्य प्रणयन की परम्परा आज तक सातत्य से चली आ रही है। तिपिटक के ग्रन्थों की सभी अट्ठकथाओं पर टीकाएँ उपलब्ध होती हैं।

1.6 अन्य साहित्य सामग्री

उपर्युक्त पालि साहित्य के अतिरिक्त पालि वाङ्मय में वंस साहित्य, काव्य, व्याकरण के ग्रन्थ, कोश ग्रन्थ, छन्द:शास्त्र के ग्रन्थ और अभिलेखादि भी प्रचुरतया प्राप्त होते हैं। पालिभाषा में विशाल वंशसाहित्य विकसित हुआ। किन्तु वह कालपरिधि में नहीं रखा जा सकता क्योंकि वंश साहित्य आज तक लिखे जा रहे हैं। इनकी रचना चौथी-पाँचवीं सदियों से प्रारंभ हुई जब सबसे पहले दीपवंस प्रकाश में आया। वंस साहित्य के अन्तर्गत आने वाले प्रमुख वंसग्रन्थ ये हैं -

1. दीपवंस, 2. महावंस, 3. चूल्लवंस, 4. बुद्धघोसुप्पत्ति, 5. सद्धम्मसंगह, 6. महाबोधिवंस, 7. थूपवंस, 8. अत्तनगलुविहारवंस, 9. दाठावंस, 10. जिनकालमालिनी, 11. छकेसधातुवंस, 12. नळाटधातुवंस, 13. सन्देस-कथा, 14. गन्धवंस, 15. संगीति-वंस, 16. सासनवंस और 17. सासनवंसदीप।

नैतिक आदर्शवाद, उच्च धार्मिक भावना और इतिवृत्तात्मक विशेषताओं के साथ पालि में अनेक काव्य रचे गये। संस्कृत-भाषा और साहित्य के अनुकरण पर आधारित काव्यलेखन, कथा-लेखन आदि प्रमुख हैं। समय के साथ पालि में कई खंडकाव्य भी प्रकाश में आये, उनमें प्रमुख हैं- 1. दाठावंस, 2. सासनवंस 3. अनागतवंस, 4. तेलकटाहगाथा, 5. जिनालंकार, 6. जिनचरित, 7. पज्जमधु, 8. लोकप्पदीपसार, 9. रसवाहिनी, 10. बुद्धालंकार, 11. सहस्सवत्थुप्पकरण और 12. राजाधिराजविलासिनी।

इनके अतिरिक्त व्याकरण में कच्चायन-व्याकरण, मोग्गल्लान-व्याकरण और अग्गवंस प्रणीत सद्दनीति व्याकरण प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। कोश ग्रन्थों में मोग्गल्लान कृत अभिधानप्पदीपिका और सद्धम्मकित्ति (सद्धर्मकीर्ति) रचित एकक्खरकोस (एकाक्षर-कोश) दो ही प्रसिद्ध हैं। इनके अलावा 'वुत्तोदय' आदि छन्द:शास्त्र के ग्रन्थ और सुबोधालंकार जैसे काव्यशास्त्र के ग्रन्थ भी पालि में उपलब्ध होते हैं। पालिभाषा में विशाल शिलालेखीय साहित्य मिलता है। सम्राट् अशोक के अभिलेखों से प्रारंभ करके आज तक अभिलेख, शिलालेख, भित्तिलेख आदि के रूप में प्रकाश में आते रहे हैं विशेषकर श्रीलंका, म्याँमार (वर्मा), थाईलैंड आदि देशों में। भारत के सन्दर्भ में कुछ बौद्ध संस्थानों में पालि में भित्तिलेख मिलते हैं, उनमें नव नालन्दामहाविहार का भित्तिलेख उल्लेखनीय है।

इनके अलावा स्फुट रूप में भी पालि रचनायें प्रकाश में आई हैं, उनमें बीसवीं सदी ईसवीं के प्रारम्भ में लिखी हुई मिलिन्दपञ्हों की टीका (म्यांमार में लिखी गई), अभिध म्मत्थसंगहो पर आचार्य धम्मानन्द कोसांबी द्वारा लिखित नवनीत टीका, आचार्य भरतसिंह उपाध्याय द्वारा लिखित महाबुद्धवत्थु, आचार्य संघसेन द्वारा लिखित सेतल पुप्फंजलि आदि मुख्य हैं।

बोधप्रश्न

14. अट्ठकथा के पर्यायवाची शब्दों को बताइए।
15. अट्ठकथाओं पर टीका लिखवाने का कार्य किसके शासन काल में प्रारम्भ हुआ?
16. टीका प्रणयन हेतु आयोजित सभा का संयोजन किसने किया?
17. बुद्धघोसुप्पत्ति और महावंस किस प्रकार के साहित्य के अन्तर्गत गिने जाते हैं?
18. पालि के व्याकरण ग्रन्थों के नाम बताइए?

1.8 धम्म-संगीतियाँ

बुद्धवचनों को सुरक्षित रखने के लिए विभिन्न बौद्ध संगीतियाँ आयोजित की गईं। इन बौद्ध संगीतियों में बुद्धभाषित प्रत्येक पंक्ति का संगायन किया गया। इन बुद्ध वचनों को संकलित करने हेतु छः ऐतिहासिक धम्म-संगीतियों का आयोजन किया गया। इन्हें ध म्म-संगीति इसलिए कहा गया क्योंकि इनमें धम्म के मूल-पाठ की प्रत्येक पंक्ति का पाठ एक श्रेष्ठ थेर या ज्येष्ठ भिक्खु के द्वारा किया जाता था तथा उसके बाद सभा में उपस्थित अन्य भिक्खुगण उसका संगायन करते थे। संगायन को प्रामाणिक तभी माना जाता था, जब सभी उपस्थित भिक्खुगण एकमत से उसे स्वीकृत करते थे। सभी भिक्खुओं की स्वीकृति से ही वह पाठ प्रामाणिक तौर से अंगीकृत हो जाता था।

इन संगीतियों के आयोजन का मुख्य उद्देश्य बुद्ध-वचनों को अपने शुद्ध रूप में सुरक्षित रखना था जिससे कि किन्हीं अज्ञानी लोगों द्वारा इसमें अपनी ओर से कुछ जोड़कर इसे दूषित न कर दिया जाय। इन संगीतियों की आवश्यकता इसलिए भी पड़ी क्योंकि तीसरी संगीति तक भी बुद्ध-वचन लिखे नहीं जा सके थे, केवल स्मृतिबद्ध किये जाते रहे। संघ-विषयक अनुशासन को शुद्ध रूप में बनाये रखने तथा उसमें किसी प्रकार के विवाद के खड़े होने पर ये संगीतियाँ एक मंच का भी कार्य करती थीं। अब तक आयोजित हुई छः संगीतियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:–

1.8.1 प्रथम धम्म-संगीति

राजगीर (राजगृह) में राजा अजातसत्तु (अजातशत्रु) के संरक्षण में भगवान् बुद्ध के महापरिनिर्वाण के तीन माह के पश्चात् 544 ई. पू. में प्रथम धम्म-संगीति संपन्न हुई। इसी धम्म संगीति में प्रथम बार समस्त बुद्धवचनों को एकत्रित किया गया। इस संगीति की अध्यक्षता महाकस्सप थेर ने की, उपालि ने विनय का पाठ किया तथा आनन्द ने धम्म का। इसमें 500 विद्वान् भिक्खुओं (अरहतों) ने भाग लिया। यह संगीति सात महीनों तक चली। इस प्रकार विनय और धम्म का संग्रह किया गया। दीघनिकाय अट्ठकथा की निदान कथा से यह ज्ञात होता है कि 'धम्म' शब्द का प्रयोग 'सुत्त तथा अभिधम्म' के लिए किया गया।

1.8.2 द्वितीय धम्म-संगीति

पहली संगीति के 100 वर्ष बाद वेसाली (वैशाली) के वाळुकाराम में राजा काळासोक के संरक्षण में द्वितीय धम्म-संगीति आयोजित हुई। विनय के नियमों को लेकर एक बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ था, जिसका निर्णय करने के लिए इस संगीति का आयोजन हुआ। इसमें 700 अरहतों व भिक्खुओं ने भाग लिया तथा इसकी अध्यक्षता रेवत थेर ने की। इसमें बुद्ध-वचन का पुनः संगायन किया गया। इसे सप्तशतिका के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इसमें 700 भिक्खुओं ने भाग लिया था।

1.8.3 तृतीय धम्म-संगीति

तृतीय धम्म-संगीति 326 ई. पू. में पाटलिपुत्त (पाटलिपुत्र) के असोकाराम नामक विहार में राजा धम्मासोक (सम्राट् अशोक) के संरक्षण में हुई। थेर मोग्गलिपुत्त तिस्स ने इसकी अध्यक्षता की तथा 1000 स्थविर भिक्खुओं ने इसमें भाग लिया। यह संगीति नौ मास तक चली। इस संगीति के दौरान थेर मोग्गलिपुत्त तिस्स ने मिथ्या-मतों का खंडन करते हुए पुनः शुद्ध धम्म के स्वरूप का प्रतिपादन कर 'कथावत्थु' नामक ग्रंथ का संकलन

किया। यह ग्रंथ तिपिटक परंपरा के अंतर्गत अभिधम्म-पिटक का एक अभिन्न अंग माना जाने लगा। बुद्ध-वचन के संगायन के पश्चात् सम्राट् अशोक ने सुदूर देशों में धम्म प्रचार हेतु नौ धम्मदूतों की परिषदें (टीमें) भेजी। इन थेरों ने धम्म के 'पटिपत्ति' पक्ष पर बल देते हुए धम्म को विश्वव्यापी बनाया। इस धम्म संगीति का इस दृष्टि से विशेष महत्त्व है।

1.8.4 चतुर्थ धम्म-संगीति

श्रीलंका में 29 वर्ष ई. पू. में, राजा वट्टगामनी के समय में चतुर्थ धम्म-संगीति आयोजित की गई। इसमें 500 विद्वान् थेरों ने भाग लिया तथा इसकी अध्यक्षता महाथेर धम्म रक्खित (धर्मरक्षित) ने की। इसमें सारे तिपिटक का संगायन किया गया उसे प्रथम बार लिपिबद्ध कर लिया गया। श्रीलंका में राजा वट्टगामिनी के शासन-काल में सम्पूर्ण तिपिटक के लेखन की यह घटना इतिहास में अविस्मरणीय हो गई।

1.8.5 पंचम धम्म-संगीति

पंचम धम्म-संगीति सन् 1871 में ब्रह्मदेश के मांडले शहर में राजा मिं डों मिं के संरक्षण में बुलाई गयी। इसमें 2400 विद्वान् भिक्खुओं ने भाग लिया। इस संगीति की अध्यक्षता क्रमशः श्रद्धेय महाथेर जागराभिवंस, महाथेर नरिंदभिधज तथा महाथेर सुमंगल सामी ने की। इस दौरान तिपिटक का संगायन और उसे संगमरमर की पट्टियों पर लिखने का कार्य पाँच मास तक चलता रहा।

1.8.6 षष्ठ धम्म-संगीति

मई, 1954 में ब्रह्मदेश के प्रधानमंत्री ऊ नू द्वारा रंगून में षष्ठ धम्म-संगीति आयोजित की गई। श्रद्धेय अभिधज महारट्ठगुरु भदंत रेवत ने इसकी अध्यक्षता की तथा इसमें 2500 विद्वान् भिक्षुओं ने भाग लिया। ये भिक्खुगण ब्रह्मदेश, श्रीलंका, थाईलैंड, कंपूचिया, भारत आदि देशों से वहाँ पहुँचे। उन्होंने तिपिटक तथा इसकी अट्ठकथाओं, टीकाओं आदि को पुनः जांचा और इनके प्रामाणिक संस्करण का म्रंम लिपि में मुद्रण करवाया। इस संगीति का समापन सन् 1956 की वैशाख पूर्णिमा के दिन भगवान् बुद्ध के महापरिनिब्बाण (महापरिनिर्वाण) के 2500 वर्ष पूरे होने पर हुआ।

इन छः ऐतिहासिक संगीतियों में पहली तीन भारत में, चतुर्थ श्रीलंका में तथा पंचम व षष्ठ ब्रह्मदेश में हुई। ये संगीतियाँ निश्चय ही बुद्धवचनों व धम्म को शुद्ध रूप से सुरक्षित रखने में सफल हुई। इन छः संगीतियों के कारण ही भगवान् बुद्ध के 2500 वर्ष बाद भी धम्म अपने शुद्ध रूप में जीवित है और निरंतर विकसित एवं प्रसारित हो रहा है।

बोधप्रश्न

19. भगवान् बुद्ध के महापरिनिब्बाण के पश्चात् धम्म को जीवित रखने के लिए क्या उपाय किया गया?
20. प्रथम धम्म-संगीति किसके संरक्षण में सम्पन्न हुई?
21. सप्तशतिका किस संगीति को कहते है?
22. तृतीय धम्म-संगीति में किस ग्रन्थ का नूतनतया संगायन हुआ?
23. चतुर्थ धम्म-संगीति कहाँ और किसके शासन काल में सम्पन्न हुई?

24. तिपिटक का प्रथम बार लेखन किस संगीति में हुआ?

25. अभी तक कितनी संगीतियाँ सम्पन्न हो चुकी हैं?

1.9 सारांश

'पालि' का अर्थ है-पंक्ति, पाठ या पल्लि। मगध की राजभाषा होने के कारण यह 'मागधी' कहलाई। बुद्ध ने अपने उपदेश इसी भाषा में दिये जो बाद में संगीतियों के माध्यम से तीन भागों में संकलित किये गये और 'तिपिटक' कहे गये। 'तिपिटक' यानी तीन पिटारी। ये तीन हैं- विनयपिटक, सुत्तपिटक और अभिधम्मपिटक। इनके भी अनेक भाग हैं। यथा विनयपिटक के-महावग्ग-चुल्लवग्ग- भिक्खुविभंग-भिक्खुनी विभंग और परिवार, ये पाँच भाग हैं। सुत्तपिटक के, दीघ-मज्झिम-संयुत्त-अंगुत्तर-खुद्दक, ये पाँच निकाय हैं। इसी प्रकार अभिधम्मपिटक भी धम्मसंगणि-विभंग- धातुकथा-पुग्गलपञ्जति- कथावत्थु-यमक-पट्ठान, इन सात भागों में विभक्त है।

पालि-साहित्य का विभाजन कई प्रकार से किया गया है। प्रमुखतः पिटक-अनुपिटक-वंस-अट्ठकथा-व्याकरण-काव्य व कथा तथा भित्तिलेख व शिलालेख आदि। कुल मिलाकर सात प्रकार के भेद मिलते हैं। तेलकटाहगाथा- महावंस-सासनवंस आदि खण्डकाव्य प्रसिद्ध हैं। बुद्ध के प्रधान शिष्यों ने बौद्ध धम्म व संघ को चिरकाल तक जीवित रखने के लिए एक संगीति बुलाने का निश्चय किया। बाद में बौद्ध संगीतियों में बुद्धभाषित प्रत्येक पंक्ति का संगायन किया गया। इन बुद्ध वचनों को संकलित करने हेतु छः ऐतिहासिक धम्म-संगीतियों का आयोजन किया गया।

1.11 शब्दावली

१.	मागधी	=	मगधप्रदेश की भाषा का नाम।
२.	पल्लि	=	पंक्ति, पालि।
3.	भरहुत	=	बौद्ध स्तुप स्थल विशेष, (म.प्र.)।
4.	गिरनार	=	गुजरात का एक नगर।
5.	उत्कल	=	उड़ीसा का प्राचीन नाम।
6.	कोशल	=	काशी का प्राचीन नाम।
7.	विदिशा	=	मध्य प्रदेश की सांस्कृतिक केन्द्र।
8.	तिपिटक	=	तीन पिटारियों का संग्रह (विनयपिटक, अभिधम्मपिटक, सुत्तपिटक)।
9.	सरसन्धि	=	स्वर संधि।
10.	अनुपिटक	=	छोटी पिटारी।
11.	अट्ठकथा	=	अर्थकथा।
12.	सद्दनीति	=	प्राचीन पालि व्याकरण ग्रन्थ।
13.	शिलालेख	=	प्रस्तर पर लिखवाया गया लेख।
14.	भित्तिलेख	=	खम्भे पर उत्कीर्ण लेख।

१५. धम्म संगीति = धर्म की बैठक।

१६. संगायन = गाया, पाठ किया।

१७. धम्मासोक = सम्राट अशोक।

१८. परियत्ति = सिद्धान्त।

१९. विपस्सना = विपश्यना, ध्यान पद्धति।

२०. विनय = अनुशासन।

२१. भिक्सु = भिक्षु।

1.11 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. पालि साहित्य का इतिहास - भरतसिंह उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।
2. पालि साहित्य का इतिहास- भिक्षु धर्मरक्षित, बौद्ध आकर ग्रन्थमाला वाराणसी।

1.12 सहायक ग्रन्थ

1. पालि साहित्य का इतिहास- राहुल सांकृत्यायन, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ।
2. पालि साहित्य का इतिहास- कोमलचन्द जैन, भारतीय बुक कारपोरेशन, वाराणसी।
3. पालि महाव्याकरण- भिक्षु जगदीश काश्यप, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
4. पालि व्याकरण- (बालावतार) द्वारिकादास शास्त्री, बौद्ध भारतीय प्रकाशन, वाराणसी।

५. कच्चायन व्याकरण - सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय, वाराणसी।

1.13 बोध प्रश्न के उत्तर

1. पालि का प्रारंभिक नाम मागधी था, क्योंकि यह मगध क्षेत्र की राजभाषा थी।
2. बुद्ध के वचनों को स्मरण कर रखने वाले विनयधार, धाम्मधार सुत्तन्तिक तथा मातृकाधार आदि कहलाते थे।
3. भिक्षु जगदीश कश्यप के अनुसार पालि की व्युत्पति- परियाय>पालियाय> पालियाव>पालि।
4. तिपिटकों के अन्तर्गत तीन पिटक शामिल हैं।
5. तिपिटक का अर्थ है– तीन पिटक या तीन पिटारी अथवा तीन, पिटारियों का संग्रह।
6. विनय पिटक में पाँच ग्रन्थ हैं।
7. ब्रह्मदेश की परंपरा के अनुसार नेत्तिपकरण, पेटकोपदेस और मिलिन्दपञ्ह, ये तीन ग्रन्थ भी अपने वैशिष्ट्य व महत्ता के कारण तिपिटक के अभिन्न अंग माने जाने लगे हैं।
8. 'कथावत्थु' ग्रन्थ अभिधम्म पिटक के अन्तर्गत शामिल है।
9. सुत्त पिटक के अन्तर्गत पाँच निकाय हैं।

10. बौद्ध भिक्खु-भिक्खुणियों के द्वारा पालन किये जाने वाले नियमों और अनुशासन की बातें विनय पिटक में प्राप्त होती है।

11. सुत्त पिटक में भगवान् बुद्ध के द्वारा उपदिष्ट सद्वचन संग्रहित हैं।

12. सुत्तपिटक पाँच भागों या सुत्तों में विभक्त है– दीघ निकाय, मज्झिम निकाय, संयुत्त निकाय, अंगुत्तर निकाय और खुद्दक निकाय।

13. अभिधम्म पिटक एक विशिष्ट बुद्धिवादी वर्ग के लिए संग्राह्य है।

14. अट्ठकथा के पर्यायवाची शब्द हैं – 'अत्थवण्णना' तथा 'अत्थसवण्णना'।

15. अट्ठकथाओं पर टीका लिखवाने का कार्य श्रीलंका के पराक्रम बाहु प्रथम (1156-1186 ई.) के शासन काल में प्रारम्भ हुआ।

16. टीका प्रणयन हेतु आयोजित सभा का संयोजन उदुम्बगिरि विहार के प्रसिद्ध सिंहली स्थविर महाकस्सप ने किया?

17. बुद्धघोसुप्पत्ति और महावंस वंस साहित्य के अन्तर्गत गिने जाते हैं?

18. पालि के व्याकरण ग्रन्थों के नाम इस तरह हैं – कच्चायन-व्याकरण, मोग्गल्लान-व्याकरण और अग्गवंस प्रणीत सद्दनीति व्याकरण।

19. भगवान् बुद्ध के महापरिनिब्बाण के पश्चात् धम्म को जीवित रखने के लिए संगीतियों का आयोजन किया गया।

20. प्रथम धम्म-संगीति राजा अजातसत्तु (अजातशत्रु) के संरक्षण में सम्पन्न हुई।

21. सप्तशतिका द्वितीय बौद्ध संगीति को कहते हैं।

22. तृतीय धम्म-संगीति में 'कथावत्थु' का नूतनतया संगायन हुआ।

23. श्रीलंका में 29 वर्ष ई. पू. में, राजा वट्टगामिनी के समय में चतुर्थ धम्म-संगीति आयोजित की गई।

24. तिपिटक का प्रथम बार लेखन चतुर्थ संगीति में हुआ।

25. अभी तक छः संगीतियाँ सम्पन्न हो चुकी हैं।

1.14 अभ्यास प्रश्न

1. दो पालि खण्ड-काव्यों के नाम लिखें।

....

....

2. वंससाहित्य के दो प्रसिद्ध ग्रन्थों के नाम लिखें।

....

....

3. विनयपिटक में कौन-कौन से ग्रन्थ हैं? विस्तार पूर्वक लिखें।

....

....

....

....

4. सुत्तपिटक के भागों के नाम लिखें।

....

....

....

....

5. अभिधम्मपिटक का परिचय दें।

....

....

....

....

6. पालि टीका साहित्य का संक्षिप्त परिचय दें।

....

....

....

....

7. 'पालि' शब्द की व्युत्पत्ति के विषय में आप क्या जानते हैं?

....

....

....

....

8. पालि भाषा का उद्‌भव और विकास कैसे हुआ?

....

....

....

....

9. धम्म-संगीतियों के विषय में आप क्या जानते हैं?

....

....

....

....

10. तिपिटकों की अट्‌ठकथाओं के बारे में सविस्तर बताइए।

....

....

....

....

11. विनय पिटक की विषय वस्तु का विवेचन करें।

....

....

....

....

12. पिटकेतर साहित्य का संक्षिप्त परिचय दें।

....

....

....

....

द्वितीय पाठ (Unit-II) दुतियो पाठो

2. विविध पालि पाठ

पाठ संरचना

2.1 प्रस्तावना

पूर्व पाठ में आपने बौद्ध परम्परा के तिपिटकों के बारे में पढ़ा। तिपिटक पालि भाषा में लिखे बुद्धवचन हैं। इस पाठ में आप धम्मपद में वर्णित भगवान् बुद्ध के सारगर्भित उपदेश के बारे में पढेंगे। साथ ही पालि के विविध पाठों में वर्णित शील वैभव, अशिष्टाचरण के

दुष्परिणाम, दान के माहात्म्य, पूज्यों का सम्मान, सुगत की भक्ति इनके विषय में प्रेरक-प्रसंगों को जानेंगे। *सीलवैभवं* पाठ इतिवुत्तक के सुखपत्थनासुत्त (खुद्दक निकाय) से लिया गया है। इसमें प्रशंसा भोग एवं मरणोपरान्त स्वर्गप्राप्ति हेतु शील (अच्छे आचरण) की रक्षा का उपदेश दिया गया है। *अशिष्टाचारफलं* पाठ जातकट्टकथा से लिया गया है। बौद्ध धर्म में लज्जा एवं संकोच से रहित प्राणी की क्या दशा होती है– यह सन्देश इस पाठ में दिखाया गया है। *दानमाहात्म्य* की गाथाएँ सोमप्रिय द्वारा रचित सद्धम्मोपायन (12-13 वीं शताब्दी) से उद्धृत है। इस पाठ में दान का माहात्म्य बताया गया है। *पूज्जस्स सम्मानं* पाठ की गाथाएँ सिंहली भिक्षु धम्मकित्ति महाथेर (महास्थविर धर्मकीर्ति) द्वारा रचित दाठावंश (13वीं शताब्दी) से उद्धृत है। दाठावंश में बुद्ध की दन्तधातु सम्बन्धी कथा उपवर्णित है। *सुगते भत्ति* पाठ किसी बरमी भिक्षु द्वारा रचित छकेसधातुवंश से उद्धृत है। इस गद्यांश में भगवान् बुद्ध द्वारा छः भिक्षुओं को सिर के छः केश देने का वर्णन है, कालान्तर में इन्ही केशों के ऊपर स्तूप बनाये गये।

2.2 उद्देश्य

इस पाठ के पढ़ने से आप भगवान् बुद्ध द्वारा प्रतिपादित–

- धर्म और आचार का जीवन पर क्या पड़ता है, इससे अवगत होंगे।
- मैत्री और करुणा के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे।
- सदाचार और दान के माहात्म्य से परिचित हो पायेंगे।
- आर्यसत्य और अष्टांगिक मार्ग आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

2.3 धम्मपद का परिचय

'धम्मपद' में दो शब्द अन्तर्भूत हैं– एक 'धम्म' एवं दूसरा 'पद'। 'धम्म' शब्द संस्कृत भाषा के 'धर्म' शब्द का परिवर्तित रूप है। यद्यपि बौद्ध साहित्य में धर्म के अनेक अर्थ व्यवहृत हुए हैं परन्तु यहाँ इसका सरल अर्थ 'सदाचार' अर्थात् सज्जनों के पालनीय एवं नित्य करणीय कर्तव्य है। 'पद' शब्द का अर्थ मार्ग है। इस तरह 'धम्मपद' का अर्थ *'धर्म का मार्ग'* है। परन्तु इसी ग्रन्थ में 'पद' शब्द एक अन्य अर्थ में भी प्रयुक्त हुआ है, वह अर्थ है वचन या वाणी। इस 'धम्मपद' ग्रन्थ में भगवान् बुद्ध के सदाचार सम्बन्धी उपदेश वचन या वाणी सर्वत्र उद्धृत है, अतः इसका अर्थ धर्मवचन या धर्मवाणी भी है। धम्मपद भगवान् बुद्ध के उपदेशों का सार माना जाता है।

धम्मपद में वर्णित विषयवस्तु धार्मिक दृष्टि से तो महत्त्वपूर्ण है ही, 'सदाचार' की दृष्टि से भी सभी के लिए अनुकरणीय है। इसका महत्त्व सार्वभौमिक है। इन शिक्षाओं के अनुपालन से व्यक्ति सुखी रह सकता है। इन गाथाओं के पढ़ने से अनुपम शांति की प्राप्ति होती है। मूलतः धम्मपद में 423 गाथाएँ हैं। प्रस्तुत पाठ में मात्र 47 गाथाओं का ही संकलन किया गया है। पाठ्यक्रम में निर्धारित गाथाओं की विषय वस्तु विविध दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

2.3.1 धम्मपद-मूल पाठ (संकलित गाथायें)

1. **मनोपुब्बङ्गमा धम्मा, मनोसेट्ठा मनोमया,**
   मनसा च पदुट्ठेन, भासति वा करोति वा।
   ततो नं दुक्खमन्वेति, चक्कं व वहतो पदं॥ (1/1)

2. **न हि वेरेन वेरानि, सम्मन्तीध कुदाचनं।**
   अवेरेन च सम्मन्ति, एस धम्मो सनन्तनो॥ (1/5)

3. यथागारं दुच्छन्नं, वुटठी समतिविज्झति।
एवं अभावितं चित्तं, रागो समतिविज्झति॥ (1/13)

4. यथा अगारं सुच्छन्नं, वुट्ठि न समतिविज्झति।
एवं सुभावितं चित्तं, रागो न समतिविज्झति॥ (1/14)

5. अप्पमादो अमतपदं, पमादो मच्चुनो पदं।
अप्पमत्ता न मीयन्ति, ये पमत्ता यथा मता॥ (2/1)

6. पमादं अप्पमादेन, यदा नुदति पण्डितो।
पञ्ञापासादमारुय्ह, असोको सोकिनिं पजं॥
पब्बतट्ठो व भूम्मट्ठे, धीरो बाले अवेक्खति॥ (2/8)

7. फन्दनं चपलं चित्त, दुरक्खं दुन्निवारयं।
उजुं करोति मेधावी, उसुकारो व तेजनं॥ (3/1)

8. अनवट्ठितचित्तस्स, सद्धम्मं अविजानतो।
परिप्लवपसादस्स, पञ्ञा न परिपूरति॥ (3/6)

9. अनवस्सुतचित्तस्स, अनन्वाहतचेतसो।
पुञ्ञपापपहीनस्स, नत्थि जागरतो भयं॥ (3/7)

10. न तं माता पिता कयिरा, अञ्ञे वापि च ञातका।
सम्मापणिहितं चित्तं, सेय्यसो नं ततो करे॥ (3/11)

11. यथापि भमरो पुप्फं, वण्णगन्धं अहेठयं।
पलेति रसमादाय, एवं गामे मुनी चरे॥ (4/6)

12. न परेसं विलोमानि, न परेसं कताकतं।
अत्तनो व अवेक्खेय्य, कतानि अकतानि च॥ (4/7)

13. यथापि रुचिरं पुप्फं, वण्णवन्तं सगन्धकं।
एवं सुभासिता वाचा, सफला होति कुब्बतो॥ (4/9)

14. चन्दनं तगरं वापि, उप्पलं अथ वस्सिकी।
एतेसं गन्धजातानं, सीलगन्धो अनुत्तरो॥ (4/12)

15. पुत्त मत्थि धनमत्थि, इति वालो विहञ्ञति।
अत्ता हि अत्तनो नत्थि, कतो पुत्ता कुतो धनं॥ (5/3)

16. धम्मपीती सुखं सेति, विप्पसन्नेन चेतसा।
अरियप्पवेदिते धम्मे, सदा रमति पण्डितो॥ (6/4)

हिन्दी अर्थ

1. मनुष्य दूषित मन से जो कुछ भी बोलता है या करता है, इन दश (तीन मनकर्म, चार वाक्कर्म तथा तीन कार्यकर्म) अकुशल कर्मों से उत्पन्न दुःख उस मनुष्य का उसी तरह पीछा करता है, जैसे बैलगाड़ी का पहिया गाड़ी में जुते हुए बैलों के पैरों का अनुगमन करता रहता है। (1/1)

2. वैर से वैर कभी शान्त नहीं होता। अवैर से ही वैर शान्त होता है। यह सनातन धर्म है। (1/5)

3. जिस प्रकार वर्षा का जल अच्छी तरह से न छाये हुए मकान में प्रवेश करता है उसी प्रकार रागादि (विकार), धर्मचर्या रहित चित्त में आसानी से प्रवेश कर सकता है। (1/13)

4. जिस प्रकार वर्षा का जल अच्छी तरह से छाये मकान में प्रवेश नहीं कर सकता; उसी प्रकार रागादि (विकार), धर्मचर्या द्वारा परिशोधित चित्त में प्रवेश नहीं कर सकते। (1/14)

5. अप्रमाद (साधना में त्रुटि का अभाव) अमृत का मार्ग है, प्रमाद मृत्यु का मार्ग है। प्रमाद न करने वाले (वस्तुत: बार बार जन्म लेने के लिए) मरते नहीं और जो प्रमाद करने वाले हैं, वे मृत समान हैं। (2/1)

6. जब पण्डित अप्रमाद (भूलरहित साधना या चर्या) से प्रमाद (गलतियों या दोषों) को दूर कर देता है, तब वह प्रज्ञा के महल पर चढ़कर, शोकरहित होकर, शोकयुक्त प्रजा को इस प्रकार देखता है, जिस प्रकार पर्वत पर बैठा हुआ (कोई व्यक्ति) भूमि पर बैठे हुए को, या जैसे कोई धैर्यशाली मनुष्य किसी मूर्ख को देखता है। (2/8)

7. बुद्धिमान् पुरुष अपने निरन्तर विचलित रहने वाले, चंचल एवं कठिनाई से सँभाले जा सकने और रोके जा सकने वाले चित्त को उसी प्रकार सीधा और सरल रखते हैं; जैसे कोई बाण बनाने वाला अपने बनाये हुए बाण को सीधा (तीक्ष्ण-तेज) करता है। (3/1)

8. जिस (साधक) का चित्त एक स्थान पर स्थिर नहीं है, जो सद्धर्म की गम्भीरता को नहीं जानता और जिसके मन की शान्ति विनष्ट हो गयी है, उसकी प्रज्ञा परिपूर्ण नहीं कहीं जा सकती। (3/6)

9. जिसका चित्त मल-रहित है, जिसका मन अनन्वाहत (बाध ारहित) है और जो पुण्य तथा पाप से विहीन है, ऐसे सजग रहने वाले मनुष्य (योगी) को भय नहीं होता। (3/7)

10. मनुष्य का माता-पिता तथा सम्बन्धिजन जितना हित नहीं कर सकते उससे अधिक उसका हित सत्मार्ग से प्रवृत्त चित्त करता है। (3/11)

11. जिस प्रकार भ्रमर, फूल के सौन्दर्य और गंध की हानि न करता हुआ उसके रस को लेकर भाग जाता है, उसी प्रकार मुनि (भिक्षु) ग्राम में विचरण करे। (4/6)

12. मनुष्य दूसरों के दोषों, कृत (अच्छे कर्मों) और अकृत (बुरे कर्मों) को न देखे। उसे केवल अपने कृत और अकृत को देखना चाहिए। (4/7)

13. जिस प्रकार सुन्दर और रंगयुक्त फूल, गंधयुक्त होने से अधिक लाभप्रद होता है, उसी प्रकार सुभाषित वाणी तभी लाभप्रद होती है यदि तदनुसार आचरण किया जाय। (4/9)

14. चन्दन हो या तगर, कमल हो या जुही, इन सबकी सुगन्धों से, शील (सदाचार) की गन्ध उत्कृष्ट होती है। (4/12)

15. 'ये मेरे पुत्र हैं, यह मेरा धन है' ऐसा विचार कर मूर्ख पुरुष इस संसार में दु:ख ही पाता है। जब आत्मा ही अपना नहीं है तो ये पुत्र तथा यह धन किसी के कैसे और कहाँ से हो सकता है। (5/3)

16. धर्म-रस का पान करने वाला प्रसन्नचित्त हो सुख से सोता है। इसलिए बुद्धिमान् मनुष्य, आर्य (भगवान बुद्ध) के द्वारा प्रतिपादित धर्म में सदा रमण करता है। (6/4)

बोधप्रश्न

1. धम्मपद में वैर शान्त करने के लिए क्या उपाय बतलाए गए हैं?
2. प्रमाद एवं अप्रमाद का क्या फल है? दोनों में क्या अन्तर है?
3. चित्त का स्वभाव क्या है?
4. कैसे मनुष्य (योगी) को भय नहीं होता?
5. सुभाषितवाणी कब सार्थक होती है?
6. कौन सी गंध उत्कृष्ट बतायी गयी है?

2.3.2 धम्मपद-मूलपाठ

17. उदकं हि नयन्ति नेत्तिका, उसुकारा नमयन्ति तेजनं।
दारू नमयन्ति तच्छका, अत्तानं दमयन्ति पण्डिता॥ (6/5)

18. सेलो यथा एकघनो, वातेन न समीरति।
एवं निन्दापसंसासु, न समिञ्जन्ति पण्डिता॥ (6/6)

19. येसं संबोधियंगेसु, सम्मा चित्तं सुभावितं।
आदानपटिनिस्सग्गे, अनुपादाय ये रता।
खीणासवा जुतीमन्तो, ते लोके परिनिब्बुता॥ (6/14)

20. सन्तं तस्स मनं होति, सन्ता वाचा च कम्म च।
सम्मदञ्ञा विमुत्तस्स, उपसन्तस्स तादिनो॥ (7/7)

21. सहस्समपि चे वाचा, अनत्थपदसंहिता।
एकं अत्थपदं सेय्यो, यं सुत्वा उपसम्मति॥ (8/1)

22. अभिवादनसीलिस्स, निच्चं वुड्ढापचायिनो।
चत्तारो धम्मा वड्ढन्ति, आयु वण्णो सुखं बलं॥ (8/10)

23. को नु हासो किमानन्दो, निच्चं पज्जलिते सति।
अन्धकारेन ओनद्धा, पदीपं न गवेस्सथ॥ (11/1)

24. गहकारक! दिट्ठोसि, पुन गेहं न काहसि।
सब्बा ते फासुका भग्गा, गहकूटं विसंखतं।
विसंखारगतं चित्तं, तण्हानं खयमज्झगा॥ (11/9)

25 अत्ता हि अत्तनो नाथो, को हि नाथो परो सिया।
अत्तना हि सुदन्तेन, नाथं लभति दुल्लभं॥ (12/4)

26. सुकरानि असाधूनि, अत्तनो अहिततानि च।
यं वे हितं च साधुं च, तं वे परमदुक्करं॥ (12/6)

27. अत्तना हि कतं पापं, अत्तना सङ्किलिस्सति।
अत्तना अकतं पापं, अत्तना व विसुज्झति।
सुद्धि असुद्धि पच्चत्तं, नाञ्ञअञ्ञं विसोधये। (12/9)

28. **यथा बुब्बुलकं पस्से, यथा पस्से मरीचिकं।**
एवं लोकं अवेक्खन्तं, मच्चुराजा न पस्सति॥ (13/4)

29. **सब्बपापस्स अकरणं, कुसलस्स उपसम्पदा।**
सचित्तपरियोदपनं, एतं बुद्धान सासनं॥ (14/15)

30. **दुक्खं दुक्खसमुप्पादं, दुक्खस्स च अतिक्कमं।**
अरियञ्चट्ठङ्गिकं मग्गं, दुक्खूपसमगामिनं॥ (14/13)

31. **एतं खो सरणं खेमं, एतं सरणमुत्तमं।**
एतं सरणमागम्म, सब्बदुक्खा पमुच्चति॥ (14/14)

32. **नत्थि रागसमो अग्गि, नत्थि दोससमो कलि।**
नत्थि खन्धसमा दुक्खा, नत्थि सन्तिपरं सुखं॥ (15/6)

हिन्दी अर्थ

17. जैसे नहरों के निर्माता नहरों से जल ले जाते हैं, बाण बनाने वाले बाण को नम्र (सीधा) करते हैं, बढ़ई काष्ठ (लकड़ी) को ठीक (सरल) बनाते हैं; उसी तरह पण्डित पुरुष आत्मसंयम में ही तत्पर रहते हैं। (6/5)

18. जिस प्रकार ठोस पर्वत हवा से नहीं काँपता, उसी प्रकार पण्डित लोग निन्दा और प्रशंसा से विचलित नहीं होते। (6/6)

19. जिनका चित्त सम्बोधि के अंगों में अच्छी तरह रम गया है, जो सांसारिक-लाभ के ग्रहण करने में अनासक्त होकर परिग्रह के परित्याग में रत हैं, जिनके चित्त के मैल विनष्ट हो गए हैं और जो तेजस्वी बन चुके हैं, ऐसे साधक संसार में निर्वाण को प्राप्त करते हैं। (6/14)

20 जो मनुष्य यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति से विमुक्त और उपशान्त हो गया है, ऐसे मनुष्य का मन शान्त हो जाता है, उसकी वाणी शान्त हो जाती है और उसके कायिक कर्म भी शान्त हो जाते हैं। (7/7)

21. निरर्थक पदों से युक्त हजारों वचनों की अपेक्षा एक सार्थक पद ही श्रेयस्कर होता है; जिसे सुनकर जिज्ञासु को शान्ति मिलती है। (8/1)

22. जो गुणी श्रेष्ठजनों का अभिवादन करता रहता है, नित्य वृद्ध-जनों (बड़ों) की सेवा करता है, उसकी चार वस्तुएँ बढ़ती हैं- आयु, वर्ण, सुख और बल। (8/10)

23. जब निरन्तर आग ही जल रही है, तो यह हंसी क्या और आनन्द क्या? अन्धकार से घिरे हुए तुम लोग कहीं कोई दीपक क्यों नहीं खोजते? (11/1)

24. हे गृह निर्माता! मैंने तुम्हें पहचान लिया है। तुम अब फिर घर न बना सकोगे। तुम्हारी बनाई सब कड़ियाँ टूट गई हैं तथा घर का शिखर गिर गया है। मेरा चित्त संस्काररहित हो गया है। सभी प्रकार की तृष्णाओं का विनाश हो गया है। (11/9)

25. मनुष्य अपना स्वामी (उद्धारक) स्वयं है, दूसरा कौन स्वामी हो सकता है? स्वयं को भली प्रकार से दमन कर लेने पर मनुष्य दुर्लभ स्वामी (निर्वाण) को प्राप्त कर लेता है। (12/4)

26. साधारण जन के लिए ऐसे कार्य करना सरल है, जो उसके लिए

अहित करते हैं, परन्तु जो कार्य हितकारक और कुशल हैं उनको पूर्ण करना ही अत्यधिक कठिन है। (12/6)

27. मनुष्य अपने द्वारा किये गये पाप से अपने आप को मलिन करता है, वह स्वयं न किये गये पाप से शुद्ध रहता है। शुद्धि और अशुद्धि प्रत्येक मनुष्य के निजी कर्म पर निर्भर है। कोई मनुष्य किसी दूसरे को शुद्ध नहीं कर सकता। (12/9)

28. यदि साधक संसार को पानी के बुलबुले की तरह विनाशी एवं मरीचिका की तरह (भ्रमात्मक) समझ पाता है, तो ऐसे साधक पर यमराज की दृष्टि नहीं जाती। (13/4)

29. सब प्रकार के पापों का न करना, अच्छे कार्यों की सम्पत्ति जुटाना तथा अपने चित्त को शुद्ध बनाना यह बुद्धों का उपदेश है। (14/15)

30. दु:ख, दु:ख की उत्पत्ति, दु:ख का विनाश तथा दु:ख के विनाश की ओर ले जाने वाला आर्यों का अष्टांगिक मार्ग–वास्तव में यही कल्याणकारी और उत्तम शरण है तथा इस शरण में आकर व्यक्ति सब दु:खों से मुक्त हो जाता है।

31. राग के समान कोई दाहक अग्नि नहीं है। द्वेष के समान कोई अपराध (कहल) नहीं है। रूप, वेदना आदि स्कन्धों के समान कोई दु:ख नहीं है। शान्ति के समान कोई सुख नहीं है।

32. संग्रह की प्रवृत्ति परम रोग है, संस्कार परम दु:ख है। इसे यथार्थ रूप से जानकर निर्वाण परम सुख है–ऐसा मानो।

बोधप्रश्न

7. पण्डित किससे विचलित नहीं होते ?
8. सदाचारी व्यक्ति को किसकी प्राप्ति होती है?
9. वृद्ध एवं गुणीजनों को अभिनन्दन वाले को क्या लाभ प्राप्त होता है?
10. यथार्थ ज्ञान कैसा होता है?

2.3.3 धम्मपद-मूलपाठ

33. जिघच्छा परमा रोगा, संखारा परमा दुखा।
एतं ञत्वा यथाभूतं, निब्बानं परमं सुखं॥ (15/7)

34. यो वे उप्पतितं कोधं, रथं भन्तं व धारये।
तमहं सारथिं ब्रूमि, रस्मिग्गाहो इतरो जनो॥ (17/2)

35. अक्कोधेन जिने कोधं, असाधुं साधुना जिने।
जिने कदरियं दानेन, सच्चेनालीकवादिनं॥ (17/3)

35. सो करोहि दीपमत्तनो, खिप्पं वायम पण्डितो भव।
निद्धन्तमलो अनंगणो, दिब्बं अरियभूमिमेहिसि॥ (18/2)

36. यम्हि सच्चञ्च धम्मो च, अहिंसा सञ्ञमो दमो।
स वे वन्तमलो धीरो, थेरो ति पवुच्चति॥ (19/6)

37. योध पुञ्ञं च पापं च, बाहेत्वा ब्रह्मचरियवा।
संखाय लोके चरति, स वे भिक्खू ति वुच्चति॥ (19/12)

38. **मग्गानट्ठंगिको सेट्ठो, सच्चानं चतुरो पदा।**
विरागो सेट्ठो धम्मानं, द्विपदानं च चक्खुमा॥ (20/1)

39. **सब्बे संखारा अनिच्चा ति, यदा पञ्ञाय पस्सति।**
अथ निब्बिन्दति दुक्खे, एस मग्गो विसुद्धिया॥ (20/5)

40. **सब्बे सङ्खारा दुक्खा ति, यदा पञ्ञाय पस्सति।**
अथ निब्बिन्दति दुक्खे, एस मग्गो विसुद्धिया॥ (20/6)

41. **सब्बे धम्मा अनत्ता ति, यदा पञ्ञाय पस्सति।**
अथ निब्बिन्दति दुक्खे, एस मग्गो विसुद्धिया॥ (20/7)

42. **वनं छिन्दथ मा रुक्खं, वनतो जायती भयं।**
छेत्वा वनं च वनथं च, निब्बना होथ भिक्खवो॥ (20/11)

43. **परदुक्खूपधानेन, अत्तनो सुखमिच्छति।**
वेरसंसग्गसंसट्ठो, वेरा सो न परिमुच्चति॥ (21/2)

44. **तं वो वदामि भद्दं वो, यावन्तेत्थ समागता।**
तण्हाय मूलं खणथ, उसीरत्थो व वीरणं॥
मा वो नलं व सोतो व, मारो भञ्जि पुनप्पुनं॥ 24/4)

45. **धम्मारामो धम्मरतो, धम्मं अनुविचिन्तयं।**
धम्मं अनुस्सरं भिक्खु, सद्धम्मा न परिहायति॥ (25/5)

46. **यस्स कायेन वाचाय, मनसा नत्थि दुक्कतं।**
संवुतं तीहि ठानेहि, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥ (26/9)

47. **गम्भीरपञ्ञं मेधाविं, मग्गामग्गस्स कोविदं।**
उत्तमत्थमनुप्पतं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥ (26/21)

हिन्दी अर्थ

33. जो अपने चित्त में उत्पन्न क्रोध को भ्रान्त हुए रथ के समान रोक लेता है, उसे मैं सारथी कहता हूँ। दूसरे जन तो लगाम पकड़ने वाले हैं।

34. अक्रोध (क्षमा) से क्रोध को, साधुता से असाधु को, दान से कृपण को तथा सत्यभाषण से झूठ बोलने वाले को जीते।

35. तुम अपने आपको एक द्वीप बना लो, साधना का शीघ्र ही प्रयास करके पण्डित बन जाओ। धुले हुए मल वाले और निष्पाप हुए तुम, दिव्य आर्य-भूमि तक पहुँच पाओगे। (18/2)

36. जिसमें सत्य, धर्म, अहिंसा, संयम तथा दम हैं, वही मैल से रहित, धैर्यशाली तथा स्थविर कहा जाता है। (19/6)

37. जो यहाँ पुण्य और पाप का परित्याग करके ब्रह्मचारी रहता हुआ ज्ञान मार्ग से लोक में विचरता है उसे ही भिक्षु कहा जाता है। (19/12)

38. मार्गों में अष्टांगिक मार्ग श्रेष्ठ है, सत्यों में चार आर्य सत्य श्रेष्ठ हैं, धर्मों में वैराग्य श्रेष्ठ है और मनुष्यों में नेत्रधारी (ज्ञानवान्) श्रेष्ठ है। (20/1)

39. "सब संस्कार अनित्य हैं"–इस तरह जब प्रज्ञा से कोई साधक देखता है, तब वह दु:खों से विरक्ति को प्राप्त होता है। यही विशुद्धि का मार्ग है। (20/5)

40. जब कोई साधक प्रज्ञा द्वारा सभी संस्कार दु:खमय है ऐसा साक्षात्कार कर लेता है, तब उसको दु:खों से विरक्ति हो जाती है। यही चित्तविशुद्धि का वास्तविक मार्ग है। (20/6)

41. ''सभी धर्म अनात्म हैं''–जब प्रज्ञा से कोई साधक ऐसा देखता है, तब वह दु:खों से विरक्ति को प्राप्त होता है, यही विशुद्धि का मार्ग है। (20/7)

42. वन को (वासनाओं के वन को) काटो, (केवल) वृक्ष को नहीं। वन से भय उत्पन्न होता है। वन तथा झाड़ी को काटकर हे भिक्षुओ! तुम वनरहित (वासनारहित) हो जाओ। (20/11)

43. दूसरों की दु:खप्राप्ति का कारण बनकर जो मनुष्य अपने सुख की इच्छा करता है, ऐसा वैर से सम्पृक्त पुरुष कभी वैर से मुक्त नहीं हो पाता।

44. मैं तुम से कहता हूँ–जितने तुम सब यहाँ आए हो, तुम्हारा कल्याण हो। तुम तृष्णा की जड़ को इस प्रकार खोद डालो, जिस प्रकार खस को चाहने वाला वीरण घास को खोद डालता है। मार तुम्हें इस प्रकार नष्ट न कर दे, जिस प्रकार जल प्रवाह मृणाल को नष्ट कर देता है।

45. जो भिक्षु धर्म में रमण करने वाला है, धर्म-चिन्तन में रत रहता है तथा धर्म का अनुसरण करता है, वह सच्चे धर्म से च्युत नहीं होता।

46. जिसके शरीर, वाणी और मन से दुष्कृत (पाप) नहीं होते और जो तीनों स्थानों अर्थात् काय, वाक् और मन पर संयत है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

47. जो गम्भीर प्रज्ञावान् है, मेधावी है, मार्ग एवं अमार्ग का ज्ञाता है, तथा जिसने निर्वाण को प्राप्त कर लिया है, उसको मैं 'ब्राह्मण' कहता हूँ।

बोधप्रश्न

11. कैसा साधक निर्वाण प्राप्त करता है?
12. बुद्धोपदेश क्या है?
13. चार आर्यसत्य क्या हैं?
14. अष्टांगिक मार्ग क्या है?
15. स्थविर कौन है?
16. भिक्षु कौन है?
17. विशुद्धि का क्या मार्ग है?
18. सत्यधर्म से कौन च्यूत नहीं होता?
19. ब्राह्मण कौन है?
20. सम्पृक्त मनुष्य किससे मुक्त नहीं होता?

2.3.4 सीलवैभवं-मूलपाठ

"तीणिमानि, भिक्खवे, सुखानि पत्थयमानो सीलं रक्खेय्य पण्डितो। कतमानि तीणि? पसंसा मे आगच्छतू ति सीलं रक्खेय्य पण्डितो, भोगा मे अप्पज्जन्तू ति सीलं रक्खेय्य पण्डितो, कायस्स भेदा परं मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जिस्सामी ति सीलं रक्खेय्य पण्डितो। इमानि खो, भिक्खवे, तीणि सुखानि पत्थयमानो सीलं रक्खेय्य पण्डितो"ति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति–

सीलं रक्खेय्य मेघावी, पत्थयानो तयो सुखे।
पसंसं वित्तलाभ च, पेच्च सग्गे पमोदनं।।1।।

अकरोन्तो पि चे पापं, करोन्तमुपसेवति।
सङ्कियो होति पापस्मिं, अवण्णे चस्स रूहति।।2।।

यादिसं कुरुते मित्तं, यादिसं चूपसेवति।
स वे तादिसको होति, सहवासो हि तादिसो।।3।।

पूतिमच्छं कुसग्गेन यो नरो उपनय्हति।
कुसा पि पूतिं वायन्ति, एवं बालूपसेवना।।4।।

तगरं च पलासेन, यो नरो उपनय्हति।
पत्ता पि सुरभि वायन्ति, एवं धीरूपसेवना।।5।।

तस्मा पत्तपुटस्सेव, ञत्वा सम्पाकमत्तनो।
असन्ते नुपसेवेय्य, सन्ते सेवेय्य पण्डितो।
असन्तो निरयं नेन्ति पापेन्ति सूग्गतिं"ति।।6।।

हिन्दी अर्थ

हे भिक्षुओं! पण्डित इन तीन सुखों को चाहता हुआ शील की रक्षा करे। कौन से तीन? मेरी प्रशंसा हो–इस प्रकार (चाहता हुआ) पण्डित शील की रक्षा करे, मेरे भोग उत्पन्न हो–इस प्रकार (चाहता हुआ) पण्डित शील की रक्षा करे, (तथा) मरने के बाद उत्तम गति स्वर्ग लोक में उत्पन्न होऊँगा–इस प्रकार (चाहता हुआ) पण्डित शील की रक्षा करे। हे भिक्षुओं! इन तीन सुखों को चाहता हुआ पण्डित शील की रक्षा करे। इस अर्थ (अभिप्राय) को भगवान् ने कहा है। इसे इस प्रकार कहा जा रहा है–

बुद्धिमान् व्यक्ति प्रशंसा, धन-धाभ तथा मरकर स्वर्ग में आनन्द (–इन तीन) सुखों को चाहता हुआ शील की रक्षा करे।।1।।

यदि पाप को न करता हुआ भी (मनुष्य) (पाप) करने वाले मनुष्य का अनुसरण करता है तो वह पाप में शङ्कित होता है तथा उसका अपयश होता है।।2।।

(मनुष्य) जिस प्रकार के मित्र को करता है तथा जिस प्रकार (के व्यक्ति) का अनुसरण करता है, वह निश्चय से वैसा ही होता है (क्योंकि उसका) वैसा सहवास है।।3।।

जो मनुष्य कुश के अग्र भाग से दुर्गन्ध युक्त मछली लेता है तो (उस व्यक्ति के) कुश भी दुर्गन्ध छोड़ने लगाते हैं इसी प्रकार मूर्खों की संगति होती है।।4।।

जो मनुष्य तगर (सुगन्धित काष्ठविशेष) को पत्ते से पकड़ता है, (वे) पत्ते भी सुगन्ध को छोड़ते लगते हैं। इसी प्रकार धीर व्यक्तियों की संगति होती है।।5।।

इसलिए पत्तों के दोने की तरह अपने सम्पाक (परिपाक) को जानकर पण्डित खोटे व्यक्तियों की संगति न करे, भले पुरुषों की संगति करे। खोटे व्यक्ति नरक में ले जाते हैं तथा भले व्यक्ति अच्छो गति प्राप्त कराते हैं।।6।।

बोधप्रश्न

21. पण्डित लोग कौन–कौन से तीन प्रकार के सुख चाहते हैं?

22. मूर्खों की संगति कैसी होती है?

23. धीर व्यक्तियों की संगति कैसी होती है?

2.3.5 अशिष्टाचारफलं-मूलपाठ

अतीते पठमकप्पे चतुप्पदा सीहं राजानं अकंसु, भच्छा आनन्दमच्छे सकुणा सुवण्णहंस। तस्य तन सुदण्णराजहंसस्स धीता हसपोतिका अभिरूपा अहोसी'ति सो तस्या वरं अदासि। सा अतनो चित्तरुचितं सामिकं वारेसि। हंसराजा तस्सा वरं दत्वा हिमवन्ते सब्बसकुणे सन्निपातापेसि। नानाप्रकार हंसमोरादयो सकुणगणा समागन्त्वा एकस्मि महन्ते पासाणतले सन्निपतिंसु। हंसराजा 'अत्तनो चित्तरुचितं सामिकं आगन्त्वा गण्हतू'ति धीतरं पवकोसापेसि। सा सुणसंध आलोकेन्ती मणिवण्णग्गीव चित्रपेक्खुणं मोरं दिस्वा 'अयं में सामिको होतू'ति आरोचेसि। सकुणसंघा मोरं उपसंकमित्वा आहंसु–'सम्म मोर! अयं राजधीता एत्तकानं सकुणानं मज्झे सामिकं रोचेन्ती तयि रुचिं उप्पादेसी'ति। मोरो 'अज्जापि ताव में बलं न पस्ससी'ति अतितुट्ठिया हिरोत्तप्पं भिन्दित्वा ताव महतो सकुणसंघस्य मज्झे पक्खे पसारित्वा नच्चितुं आरभि। नच्चन्तो अप्पटिच्छन्नो अहोसि। सुवण्णहंसराजा लज्जितो 'इमस्स नेव अज्झतसमुट्ठाना हिरि अत्थि, न बहिद्धासमुट्ठानं ओत्तप्पं। नच्चन्तो नास्स भिन्नहिरोत्तप्पस्स मम धीतरं दस्सामी'ति सकुणसंघमज्झे इमं गाथं आह–

'रुदं मनुञ्ञं रुचिरा च पिट्ठो वेळुरियवण्णूपनिभा च गीवा। व्याममत्तानि च पेक्खुणानि नच्चेन ते धीतरं नो ददामी'ति।।

हंसराजा तस्मिं येव परिसमज्झे अत्तनो भागिनेय्यहंसपोतकस्य धीतरं अदासि। मोरो हंसपोतिकं अलभित्वा लज्जित्वा ततोव उड्डेत्वा पलायि। हंसराजापि अत्तनो वसनट्ठानमेव गतो।

हिन्दी अर्थ

अतीत में प्रथम कल्प में पशुओं ने सिंह को राजा बनाया, मछलियों ने आनन्दमछली को (और) पक्षियों ने सुवर्ण–हंस को। उस सुवर्ण–राजहंस की पुत्री 'हंसपोतिका' अत्यन्त सुन्दरी थी। (इसलिए) उस (हंस) ने उस (अपनी पुत्री) को वर दिया। उसने अपनी इच्छानुसार पति के लिए वर मांगा। हंमराज ने उसेवर देकर हिमालय पर सब पक्षियों को एकत्रित कराया। नाना प्रकार के हंस–मयूर आदि पक्षीगण चारों ओर से आकर एक बड़े पत्थर पर इकट्ठे हो गये। हंसराज ने अपनी इच्छानुसार पति को आकर ग्रहण करे' इस प्रकार (कहलवा कर) लड़की को बुलवाया। उसने पक्षियों के संघ को देखते हुए मणि के समान गर्दन (और) रंग–विरंगे पंखों वाले मयूर को देखकर 'यह मेरा पति हो' इस प्रकार (कहकर) पसन्द किया। पक्षियों के संघ न मयूर के पास जाकर कहा–'सौम्य मयूर! इस राजकन्या ने इतने पक्षियों के बीच में पति पसन्द करती हुई तुझ में इच्छा उत्पन्न की है। मयूर ने 'आज भी मेरे बल को नहीं देखते हो' इस प्रकार (कहकर) अतिहर्ष से लज्जा को

त्याग (उसने) भारी पक्षी संघ के बीच में पंख फैलाकर नाचना शुरू किया। नाचते हुए (वह) नंगा हो गया। सुवर्ण हंसराज ने लज्जित होकर 'इसे न तो अपने भीतर उत्पन्न होने वाली लज्जा है, (और) न बाहर से उत्पन्न होने वाला संकोच। लज्जा और संकोच से हीन इसे (मैं) अपनी कन्या नहीं दूँगा' इस प्रकार (कहते हुए) पक्षी संघ के बीच यह गाथा कही–

वाणी मनोज्ञ है, पीठ सुन्दर है, गर्दन बैदूर्य मणि के वर्ण जैसी है तथा चार हाथ लम्बे पंख हैं किन्तु नाचने से तुझे अपनी कन्या नहीं दूँगा।

हंसराज ने उसी परिषद् के बीच अपने भांज हंसपोतक को पुत्री दे दी। मयूर हंसपोतिका को न पा लज्जित हो वहाँ से उड़कर भाग गया। हंसराज भी अपने वास स्थान को ही चला गया।

बोधप्रश्न

24. सुवर्ण राजहंस की पुत्री का क्या नाम था?

25. हंसपुत्री ने किसे अपना वर के रूप में पसन्द किया?

26. पशुओं ने किसे अपना राजा बनाया?

2.3.6 दानमाहात्म्यं-मूलपाठ

प्रियो दानपति होति गिम्हाकाले व अम्बुदो।
भुञ्जन्ति तं बहू सत्ता फलरुक्खं व अण्डजा।।1।।

कितिसद्दञ्च पप्पोति तिलोकमहितं हितं।
दायको ससराजा व नरिंन्द्रोरिन्दमो विय।।2।।

नाथभूतो अनाथानं सबेसं पीतिवद्धनो।
सतञ्च सुखसंवासो सततं होति दायको।।3।।

सेठ्ठो ति सम्मतो होति दुट्ठेहि च अद्यंसियो।
इट्ठदो ति मुदा लोको पहठ्ठो तं उदिक्खति।।4।।

यं यं दिसं दानपति रित्तहत्थो व गच्छति।
साभिसङ्खारिका तस्स सुलभा होन्ति पच्चया।।5।।

सब्बानत्थावहे अत्थे अत्थिकानं ददं अहं।
आनिसंसोदधिप्पत्तो सफलं जीवितं मम।।6।।

इच्चेवं सरमानो सो अत्तनो चागसम्पदं।
अतिहठ्ठो उदग्गो व सदा जीवति दायको।।7।।

यं हि दानपति दीनं याचकं समुपागतं।
लद्धत्थं पस्सती हत्थं ततो किं विपुलं फलं।।8।।

दीनस्स दानमासज्ज तुठ्ठं इठ्ठत्थसिद्धिया।
सुफुल्लकमलोभासं दस्सनीयतरं मुखं।।9।।

दाता दिस्वानुभवति लद्धासाधारणं सुखं।
अलं दानफलं एतं नो चे पि परलोकियं।।10।।

सन्दिट्ठिकं दानफलं अनन्त एवमादिकं।
परलोकफलं तस्स को समत्थोवगाहितुं।।11।।

हिन्दी अर्थ

दानपति ग्रीष्मकाल में मेघ की तरह प्रिय होता है। फल-वृक्ष को अण्डे से पैदा होने वाले प्राणियों की तरह उसका बहुत लोग उपयोग (या भोग) करते हैं।।1।।

दायक शशराज तथा शत्रुओं का दमन करने वाले राजा की तरह कीर्तिशब्द को तथा तीनों लोकों में पूजे गये हित को प्राप्त करता है।।2।।

दायक अनाथों के लिए नाथ के रूप में होता है, सब की प्रीति बढ़ाने वाला होता है तथा हमेशा सौ (गुने) सुख का सहवास होता है।।3।।

(दायक) श्रेष्ठ माना जाता है, दुष्टों द्वारा अपमानित नहीं होता है। लोक उसको 'इष्ट को देने वाला है' इस प्रकार आनन्द-एवं खुशी से देखता है।।4।।

दानपति जिस-जिस दिशा में खाली हाथ ही जाता है, उसके लिए कार्य को पूर्ण करने वाले कारण आसानी से मिल जाते हैं।।5।।

सभी प्रकार के अनर्थो से परिपूर्ण धन को चाहने वालों को देता हूँ मैने प्रशंसा रूपी समुद्र को प्राप्त कर लिया है (और अब) मेरा जीवन सफल है।।6।।

इस प्रकार अपने त्याग की सम्पदा को स्मरण करता हुआ वह अत्यन्त प्रसन्न एवं मनोहर दायक अपना सारा जीवन व्यतीत करता है।।7।।

दानपति पास में आये हुए दीन याचक को हाथ में धन लिए हुए देखता है, तो उससे बड़ा फल और क्या है।।8।।

दान को प्राप्त कर इष्टार्थ सिद्धि से तुष्ट, फूले या सुविकसित कमल की तरह चमक से युक्त अधिक दर्शनीय दीन के मुख को देखकर दाता जिस असाधारण सुख का अनुभव करता है, यहीं दान का पर्याप्त फल है, यदि पारलौकिक फल न भी हो। इत्यादि प्रकार से इसी जन्म में दान के अनन्त फल हैं। (तो फिर) उस (दान) के परलोक फल को समझने के लिये कौन समर्थ है।।9-11।।

बोधप्रश्न

27. दानपति किस तरह प्रिय होता है?

28. दायक को लोग किस तरह देखता है?

29. दायक अपना जीवन कैसे व्यतीत करता है?

2.3.7 पूज्यस्य सम्मानं-मूलपाठ

नरपति गुहसीवों तं मुनिन्दस्स धातुं
सकपुरमुपनेत्वा साधु सम्मानयन्तो।
सुगतिगमनमग्गे पाणिनो योजयन्तो
सुचरितमभिरूपं सञ्चिनन्तो विहासि।।1।।

अगणितमहिमस्सुञ्जेनिरञ्ओ तनूजो
पुरिमवयसि येवारद्धसद्धाभियोगों।

दसबलतनुधातुं पूजितुं तस्स रञ्ञो
पुरवरमुपयातो दन्तनामो कुमारो।।2।।

गुणजनितपसादं तं कलिङ्गाधिनाथं
निखिलगुणनिवासो सो कुमारो करित्वा।
विविधमहविधानं साधु सम्पादयन्तो
अवसि सुगतधातुं अन्वहं वन्दमानो।।3।।

अभवि च गुहसीवस्सावनीसस्स धीता
विकचकुवलयक्खी हंसकन्ताभियाता।
वदनजितरोजा हारिधम्मिल्लभारा
कुचभरनमितङ्गी हेममालाभिधाना।।4।।

अखिलगुणनिधानं बन्धुभावानुरूपं
सुविमलकुलजातं तं कुमारं विदित्वा।
नरपति गुहसीवो अत्तनो धीतरं तं
अददि सबहुमानं राजपुत्तस्स तस्स।।5।।

मनुजपति कुमारं धातुक्खाधिकारे
पचुरपरिजनं तं सब्बथा योजयित्वा।
गवमहिससहस्सादीहि सम्पीणयित्वा
सकविभवसरिक्खे इस्सरत्ते ठपेसि।।6।।

हिन्दी अर्थ

राजा गुहसीव मुनीन्द्र (बुद्ध) की उस (शरीर-) धातु को अपने नगर में लाकर ठीक से (उसका) सम्मान करता हुआ, प्राणियों को सुगति-गमन में कारणभूत मार्ग में लगाता हुआ तथा सुन्दर सुचरित्र से (पुण्य को) इकट्ठा करता हुआ रहने लगा।।1।।

असीमित महिमा वाले उज्जैनी के राजा का दन्तकुमार नामक पुत्र, जिसने थोड़ी ही उम्र में दृढ़ श्रद्धा को प्राप्त कर लिया था, दशबल (बुद्ध) की शरीर-धातु को पूजने के लिए उस राजा के नगर में आया।।2।।

सम्पूर्ण गुणों का निवासभूत वह कुमार कलिङ्ग के उस राजा को अपने गुणों से प्रसन्न करके नाना उत्तम विधानों को ठीक से करता हुआ, प्रतिदिन सुगति की (शरीर-) धातु को पूजता हुआ रहने लगा।।3।।

गुहसीव राजा की विकसित नीलकमल जैसी आँखों वाली, हंस के समान सन्दुर चाल वाली, कमल को भी मात करने वाले मुख वाली, सुन्दर बालों के जूड़ा वाली, भारी कुचों से झुके हुए शरीर वाली हेममाला नाम की कन्या थी।।4।।

सम्पूर्ण गुणों के निधानरूप तथा बन्धु के स्वभाव के अनुरूप उस कुमार को अत्यन्त विमल कुल में उत्पन्न जानकर उस राज-पुत्र के लिए राजा गुहसीव ने अपनी कन्या को अत्यन्त सम्मान के साथ दे दिया।।5।।

राजा ने पूर्णरूप से धातु की रक्षा के अधिकार में प्रचुर परिजन युक्त उस कुमार को नियुक्त कर हजारों गाय-भैंस आदि से (देकर) प्रसन्न कर अपने विभव के अनुरूप प्रभुत्व में लगा दिया।।6।।

बोधप्रश्न

30. दन्तकुमार कौन था?

31. राजा गृहासीव की पुत्री का क्या नाम था?

32. दन्तकुमार का विवाह किससे हुआ?

2.3.8 सुगते भत्ति-मूलपाठ

एकस्मिं किर समये अम्हाकं भगवा राजगहे विहरति वेळुवने कलन्दकनिवापे। तत्रापि खो भगवा चतुन्नं परिसानं धम्मं देसेति आदिकल्याणं भज्झेकल्याणं परियोमसानकल्याणं सत्थं सब्यञ्जनं केवलपरिपूण्णं। तेन खो पन समयेन अनुरुद्धो सोभितो पदुमुत्तरो गुणसागरो ञाणपण्डितो रेवतो ति छ खीणासवा एकच्छन्दा हुत्वा येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसु, उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदिसु। एकमन्तं निसिन्नाखो ते खीणासवा भिक्खू भगवन्तं एतदवोचुं–न हि भन्ते भगवता समतिंसपारमियो पूरेन्तेन एकदेससत्त हितत्थं पूरिता, अथ खो सब्बसत्तहितत्थं कत्तुकामेन पुरिता। ये केचि भन्ते सत्ता आसन्नट्ठा तेसं तव दस्सनेन उभयत्थ सिद्धा ये चञ्ञे सत्ता दूरट्ठा होन्ति तेसं अत्थाय भगवतो सरीरपटिबद्धं पूजनीयवत्थुं ठपेतब्बं। महासमुद्दस्स पन भन्ते अविदूरे एकस्मिं पच्चन्तदेसे बहुजना वसन्ति। तेसं अनुकम्पाय पूजनीयं दातुं वट्ठति। अथ खो भगवा तेसं वचनं सुत्वा महाकरुणाय समुस्साहितचित्तो हुत्वा जनपददासीनं हितकरणत्थं दक्खिणेन हत्थेन सीसं परामसति, सीसं परामसित्वा हेमवण्णरंसीहि विजोतमाना छ केसा भगवतो हत्थे लग्गिंसु। अथ खो भगवा तेसं छन्नं अरहन्तानं अदासि। तेपि खो तट्ठमानहट्ठा अत्तनो सिरसा व सम्पटिच्छिंसु। तदा आयस्मा आनन्दो भगवन्तं पुच्छि– 'किं, भन्ते, तस्मिं जनपदे सत्तानं अन्तरायो भगवतो धातुयो निस्साय भविस्सती'ति? 'न पस्सामि, आनन्द, तस्मिं जनरदे परिहानिं, वुड्ढिमेव पस्सामी'ति आह। 'मम परिनिब्बानतो हि, आनन्द, पञ्चवस्ससहस्सनि मम सासनं पतिट्ठितं भविस्सति इमे छ केसधातुयो पञ्चसताधिकद्विसहस्सवस्सानि रक्खिता भविस्सन्ति।

हिन्दी अर्थ

एक समय हमारे भगवान् राजगृह में वेणुवन के कलन्दकनिवाप में विहार कर रहे थे। वहाँ भी भगवान् ने चारों परिषदों के लिए आदिकल्याण से युक्त, मध्यकल्याण से युक्त, अन्तकल्याण से युक्त, सार्थ, सुस्पष्ट, एकदम परिपूर्ण धर्म का उपदेश दिया। उस समय अनुरुद्ध, शोभित, पद्मोत्तर, गुणसागर, ज्ञानपण्डित तथी रेवत–ये छः क्षीणास्रव एक-सी इच्छावाले होकर जहाँ भगवान् थे, वहाँ गये, जाकर भगवान् को नमस्कार कर एक ओर बैठ गये। एक ओर बैठे हुए उन क्षीणास्रव भिक्षुओं ने भगवान् से ऐसा कहा-भन्ते! समस्त तीस पारमिताओं को पूर्ण करने वाले भगवान् के द्वारा (वे) न केवल कुछ ही प्राणियों के हित के लिए पूर्ण की गई हैं, अपितु समस्त प्राणियों के हित को करने की इच्छा से पूर्ण की गई हैं। भन्ते! जो कोई प्राणी (आपके) पास स्थिर हैं उनके दोनों भव आपके दर्शन से ही सिद्ध हैं किन्तु जो अन्य प्राणी दूर हैं उनके लिए भगवान् के शरीर में लगी हुई पूजनीय वस्तु रखना चाहिये। भन्ते! महासमुद्र के पास एक सीमान्त देश में बहुत से मनुष्य रहते हैं। उनपर कृपा (करने) के लिए पूजनीय वस्तु देना अच्छा है। तब भगवान् ने उनके कथन को सुनकर महाकरुणा से उत्साहित चित्त वाले होकर देशवासियों का हित करने के लिए दाहिने हाथ से सिर को छुआ, सिर को छूकर (छूने से) स्वर्ण वर्ण की किरणों जैसे चमकते हुए छ बाल भगवान् के हाथ में लग गये। तब भगवान् ने (वे बाल) उन छः अर्हतों को दिये। उन्होंने भी

सन्तुष्ट एवं प्रसन्न मन से अपने सिर झुका कर स्वीकर किए। तब आयुष्मान् आनन्द ने भगवान् से पूछा–भन्ते! क्या उन जनपद के जीवों का भगवान् की धातु को लेकर अन्तराय (बाधा) होगा? 'आनन्द! उस जनपद के प्राणियों की हानि को नहीं देखता हूँ, वृद्धि को ही देखता हूँ' इस प्रकार (भगवान् ने) कहा। 'आनन्द मेरे परिनिर्वाण से पाँच हजार वर्ष (तक) मेरा शासन स्थापित रहेगा। ये छः केश-धातुयें पच्चीस सौ वर्ष तक रक्षित रहेंगी'।

बोधप्रश्न

33. भगवान् बुद्ध के पास कितने क्षीणास्रव आये?

34. क्षीणस्रव के कहने पर भगवान् ने महासमुद्र के पास रहने वाले मनुष्य के लिए क्या किया?

35. भगवान् के अनुसार छः केश धातुएँ कितने समय तक रक्षित रहेंगी?

2.4 सारांश

धम्मपद में मुख्य रूप से सभी नैतिक बातों का समावेश किया गया है। उसके अनुसार चलने पर मनुष्य अपने जीवन के अंतिम लक्ष्य (मोक्ष) को प्राप्त कर सकता है। इसमें महत्त्वपूर्ण बुद्धोपदेशों को प्रतिपादित किया गया है। अष्टांगिक मार्ग कल्याणकारी एवं पञ्चस्कन्धों को दुःख का कारण बताया गया है। जिसके अन्दर सत्य और अहिंसा और संयम है, धर्म एवं दम है, वही स्थविर है। पुण्य-पाप का त्याग करने वाला ही भिक्षु है। इस प्रकार मात्र कुछ ही गाथाओं में बौद्ध धर्म, दर्शन एवं सिद्धान्तों को अपने में समाहित करने वाला धम्मपद ग्रंथ की महिमा गीता, कुरान एवं बाईबिल के समान ही इसकी महत्ता को प्रतिपादित किया गया है। शील वैभवम् पाठ में प्रशंसा, भोग एवं मरणेपरान्त स्वर्गप्राप्ति हेतु शील (अच्छे आचारण) की रक्षा का उपदेश दिया गया है। लज्ज एवं संकोच से रहित प्राणी की क्या दशा होती है–अशिष्टाचारफलम् पाठ के माध्यम से बताया गया है। साथ ही पाठ में भगवान् बुद्ध द्वारा छः भिक्षुओं को सिर के छः केश दने का वर्णन है, जिससे स्तूपों का निर्माण कराया गया।

2.5 शब्दावली

1.	वेर	=	व्यक्ति अपने क्रोध को जब आचरण की तरह सुरक्षित रख लेता है उसे वैर कहते हैं।
2.	सनातन	=	सार्वकालिक।
3.	अप्पमाद	=	अनालस्य।
4.	पुञ्ञ	=	अच्छे कर्मो का संचय।
5.	पाप	=	बुरे कर्म।
6.	भिक्षु	=	गृहत्यागी, बौद्ध संघ में उपसंपदा प्राप्त।
7.	सुभासित	=	स्पष्ट एवं सुन्दर वचन।
8.	संबोधिय	=	बोध- विशिष्ट ज्ञान।
9.	गहकारक	=	घर अर्थात् तृष्णा का मूल।
10.	बुद्ध	=	विशिष्ट-बोधि प्राप्त।
11.	थेर	=	10 वर्ष उपसम्पदा प्राप्त भिक्षु।

12.	निब्बाण	=	बौद्धधर्म का परम लक्ष्य, शाब्दिक अर्थ है तृष्णा से रहित।
13.	सीलं	=	शील, आचरण।
14.	सुगतिं	=	उत्तम गति (स्वर्ग की प्राप्ति)।
15.	पमोदनं	=	आनन्द।
16.	अवण्णे	=	अपयश।
17.	रक्खिता	=	रक्षित।
18.	सकुणा	=	पक्षियों।
19.	सामिकं	=	पति।
20.	विकचकुवलयक्खी	=	विकसित नील कमल जैसी आँखों वाली।
21.	इस्सरत्ते	=	प्रभुत्व में, ईश्वरत्व में।
22.	परिसानं	=	परिषद।
23.	निसीदिसु	=	बैठ गये।
24.	निस्साय	=	बाधा।

2.6 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. धम्मपद (चयनित गाथाएं)- प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थान, नई दिल्ली।
2. पालि प्रवेशिका- डॉ. कोमलचन्द्र जैन, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी।

2.7 सहायक ग्रन्थ

1. धम्मपद- कन्छेदीलाल गुप्त, चौखम्बा प्रकाशन, दिल्ली।
2. धम्मपद- सत्यप्रकाश शर्मा, साहित्य भण्डार, मेरठ।
3. धम्मपद- भिक्षुधर्मरक्षित, बौद्ध आकर ग्रन्थमाला, वाराणसी।
4. पालि साहित्य का इतिहास- राहुल सांकृत्यायन, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ।
5. पालि-प्राकृत-संग्रह- प्रभुनाथ द्विवेदी, चौखम्बा ओरियन्टालिया, वाराणसी।

2.8 बोध प्रश्न के उत्तर

1 धम्मपद में अवैर से वैर शान्त करने का उपाय बताया गया हैं

2. प्रमाद का फल मृत्यु एवं अप्रमाद का फल अमृत बताया गया है। प्रमाद का अर्थ आलस्य एवं अप्रमाद का अर्थ-क्रियाशील अर्थात् पराक्रमी होना है।

3. चित्त का स्वभाव चंचलता है।

4. जिसका चित्त निर्मल, मन बाधारहित और जो पाप-पुण्य से रहित है उस मनुष्य (योगी) को भय नहीं होता।

5. सुभाषित वाणी कार्य रूप में परिणत करने पर सार्थक होती हैं।

6. शील (सदाचार) की सुगन्ध सर्वश्रेष्ठ होती है।

7. पण्डित लोग निन्दा और प्रशंसा से विचलित नहीं होते।

8. सदाचारी व्यक्ति सदा प्रसन्न रहता है।

9. वृद्ध एवं गुणीजनों का अभिनन्दन करने वाला चार वस्तुओं की प्राप्ति करता है- आयु, वर्ण, सुख और बल।

10. यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति से जब व्यक्ति उपशान्त हो जाता है, उसकी मन, वाणी और कायिक कर्म शान्त हो जाते हैं तो वह यथार्थज्ञान कहलाता है।

11. जिनका चित्त सम्बोधि के अंगों में अच्छी तरह रम गया है, जो सांसारिक लाभ के ग्रहण करने में अनासक्त होकर, परिग्रह के परित्याग में रत हैं, जिनके चित्त के मैल विनष्ट हो गए हैं और जो तेजस्वी बन चुके हैं, ऐसे साधक संसार में निर्वाण को प्राप्त करते हैं।

12. किसी प्रकार के पाप न करना, अच्छे कार्य हेतु सम्पत्ति संग्रह, एवं चित्त की निर्मलता ही बुद्धोपदेश है।

13. दु:ख आर्यसत्य, दु:खसमुदाय आर्यसत्य, दु:खनिरोध आर्यसत्य तथा दु:खनिरोधगामीमार्ग आर्यसत्य।

14. सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाणी, सम्यक् कर्म, सम्यक् आजीविका, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि।

15. जिसमें सत्य, धर्म, अहिंसा, संयम है, मल से रहित है, धैर्यशाली है वही स्थविर है।

16. जो पुण्य और पाप का परित्याग करके, ब्रह्मचारी रहता हुआ, ज्ञान मार्ग से लोक में विचरता है उसे भिक्षु कहा गया है।

17. दु:खों से विरक्ति को प्राप्त करना ही विशुद्धि का मार्ग है।

18. धर्म में रमण करने वाला, धर्म-चिन्तन में संलग्न रहने वाला एवं धर्म का अनुसरण करने वाला भिक्षु कभी सच्चे धर्म से च्युत नहीं होता।

19. जो शरीर-वाणी-काय से दुष्कृत नहीं करते तथा संयत हैं उसे ब्राह्मण कहा गया है।

20. दूसरे की दु:खप्राप्ति का कारण बनकर जो मनुष्य अपने सुख की इच्छा करता है, वैसा सम्पृक्त पुरुष मुक्त नहीं होता।

21. पण्डित तीन प्रकार के सुख चाहते हैं-

    1. मेरी प्रशंसा हो।
    2. मेरे भोग उत्पन्न हो।
    3. मरने के बाद उत्तम गति (स्वर्गलोक) में उत्पन्न होऊँ।

22. मूर्खों की संगति मछली की तरह दुर्गन्ध युक्त होती है।

23. धीर व्यक्तियों की संगति सुगन्ध युक्त तगर काष्ठ के समान होती है, जो अपनी सुगन्ध से दूसरों को भी सुगन्धित कर देता है।

24. सुवर्ण राजहंस की पूत्री का नाम 'हंसपोतिका' था।

25. हंसपुत्री ने मयूर को अपने वर के लिए पसन्द किया।

26. पशुओं ने सिंह को अपना राजा बनाया।

27. दानपति ग्रीष्म काल में मेघ की तरह प्रिय होता है।

28. दायक को लोक 'इष्ट को देने वाला है', इस प्रकार आनन्द एवं खुशी से देखता है।

29. त्याग को सम्पदा के स्मरण करता हुआ अत्यन्त प्रसन्न एवं मनोहर दायक अपना सारा जीवन व्यतीत करता है।

30. दन्तकुमार उज्जैनी के राजा का पुत्र था।

31. राजा गृहासीव की पुत्री का नाम हेममाला था।

32. दन्तकुमार का विवाह हेममाला से हुआ।

33. भगवान् बुद्ध के पास छः क्षीणास्रव आये, वे थे– अनुरुद्ध, शोमित, पद्मोत्तर, गुणसागर, ज्ञानपण्डित तथा रेवत।

34. महासमुद्र के पास रहने वाले मनुष्य के कल्याण के लिए भगवान् ने धातु के रूप में छः बाल दिये।

35. भगवान् के अनुसार वे छः केश धातुएँ उनके परिनिर्वाण के बाद पच्चीस सौ वर्ष तक रक्षित रहेगी।

2.9 अभ्यास प्रश्न

1. धम्मपद से क्या सम्मझते हैं? संक्षेप में विवेचन कीजिए।

....

....

....

....

2. धम्मपद में प्रतिपादित भगवान् बुद्ध के उपदेशों का सार लिखें।

....

....

....

....

3. धम्मपद के आधार पर आर्यसत्य की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

4. अष्टांगिक मार्ग का स्वरूप विवेचित करें?

....

....

....

....

5. पठित पाठ के आधार पर अप्रमादी व्यक्ति का लक्षण लिखें।

....

....

....

....

6. शील (अच्छे आचरण) की रक्षा क्यों आवश्यक है? शील वैभवम् पाठ के आधार पर विवेचन करें।

....

....

....

....

7. लज्जा और संकोच से रहित प्राणी की क्या दशा होती है?

....

....

....

....

8. दान की महिमा का विवेचन करें।

....

....

....

....

9. दन्तकुमार का विवाह किससे हुआ और क्यों?

....

....

....

....

....

10. भगवान् बुद्ध ने केश धातुयें किन्हें प्रदान किया और क्यों?

....

....

....

....

तृतीय पाठ (Unit-III) ततियो पाठो

3. पालि व्याकरण

पाठ संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 पालि व्याकरण तथा उसकी परम्परा

3.3.1 पालि व्याकरण की प्रमुख विशेषताएँ

3.3.2 पालि-संस्कृत का परस्पर सम्बन्ध

बोध प्रश्न

3.4 पालि वर्णमाला

3.4.1 स्वर

3.4.2 व्यञ्जन

बोध प्रश्न

3.5 सन्धि

3.5.1 स्वर सन्धि

3.5.2 व्यंजन सन्धि

3.5.3 निग्गहीत सन्धि

बोध प्रश्न

3.6 समास

3.6.1 असंख्य (अव्ययीभाव) समास

3.6.2 तप्पुरिस (तत्पुरुष) समास

3.6.3 कम्मधारय (कर्मधारय) समास

3.6.4 द्विगु समास

3.6.5 द्वन्द (द्वन्द्व) समास

3.6.6 बहुव्रीहि (बहुब्रीहि) समास

बोध प्रश्न

3.7 कारक

3.7.1 पठमा विभत्ति

3.7.2 दुतिया विभत्ति

3.7.3 ततिया विभत्ति

3.7.4 चतुत्थी विभत्ति

3.7.5 पंचमी विभत्ति

3.7.6 छट्ठी विभत्ति

3.7.7 सत्तमी विभत्ति

3.7.8 आलपन (सम्बोधन) विभत्ति

बोध प्रश्न

3.8 **शब्दरूप**

बोध प्रश्न

3.9 धातुरूप

3.9.1 गण

3.9.2 लकार

3.1 प्रस्तावना

पूर्व पाठ में आपने पालि धम्मपद में वर्णित बुद्ध के उपदेशों के बारे में पढ़ा। इसके अन्तर्गत चार आर्यसत्य तथा अष्टांगिक मार्ग के बारे में भी जाना। इस पाठ में आप पालि व्याकरण का सामान्य परिचय प्राप्त करेंगे जो पालि भाषा को जानने के लिए अत्यावश्यक है। आप जानते हैं कि व्याकरण किसी भी भाषा आधार होता है।

3.2 उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन से आप–

- पालि–वर्णमाला के स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।
- पालि के कारक तथा विभक्ति के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- इसके सन्धि प्रक्रिया से अवगत होंगे।
- पालि भाषा में समास के महत्व को समझने में समर्थ होंगे।
- इसके शब्दरूप रूप धातुरूप आदि विषयों को अच्छी तरह जान सकेंगे।
- पालि अव्यय तथा संख्यावाचक पदों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

3.3 पालि व्याकरण तथा उसकी परम्परा

भाषाओं के साङ्गोपाङ्ग ज्ञान के लिए तत्तत् भाषा के व्याकरण शास्त्रों की महती भूमिका होती है। व्याकरण के बिना भाषा पंगु हो जाती है। जिस तरह एन्द्र, चान्द्र, पाणिनीय, सारस्वत आदि संस्कृत भाषा के सर्वांग व्याकरण हैं, उसी तरह पालि भाषा का अपना एक समृद्ध व्याकरण है। पालि व्याकरण की परम्परा में मोग्गलान व्याकरण, कच्चायन व्याकरण, एवं सद्दनीति व्याकरण प्रमुख हैं। पालि, सरल तथा प्राचीन काल में बोलचाल की भाषा होने के कारण उसके व्याकरण में उतनी विविधता नहीं है जितनी संस्कृत व्याकरण में। पालि भाषा में 43 वर्ण होते हैं। किन्तु कच्चायन–व्याकरण के लेखक ने 41 वर्ण ही माना है। उन्होंने एॅ और ओॅ को वर्ण नहीं माना है। मोग्गल्लान–व्याकरण के लेखक तथा पीछे के आचार्यो ने इन्हें भी वर्ण माना है, क्योंकि संयुक्ताक्षर के पूर्व आने वाले ए और ओ ह्रस्व होते हैं। इन वर्णों में 10 स्वर और 33 व्यंजन हैं। पालि मे तीन लिङ्ग होते हैं– (1) पुल्लिङ्ग, (2) स्त्रीलिङ्ग, (3) नपुंसकलिङ्ग। दो वचन होते हैं–**एकवचन, अनेकवचन।**

3.3.1 पालि व्याकरण की प्रमुख विशेषताएँ

पालि में शब्द के पाँच भेद होते हैं– **संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, अव्यय।** संज्ञा को पालि में **'नाम'** कहते हैं। इस भाषा की कुछ अपनी मौलिक विशेषताएं भी हैं जो इस प्रकार है:-

(1) द्विवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग, जैसे- पुरुषौ = पुरिसा, मुनिभ्याम् = मुनिभि, मुनीहि!

(2) तृतीया एवं पञ्चमी विभक्तियों के बहुवचनों में समनता, जैसे- पुरुषैः, पुरुषेभ्यः = पुरिसेभि, पुरिसेहि।

(3) चतुर्थी एवं षष्ठी विभक्तियों के बहुवचनों के रूपों में समानता, जैसे- पुरुषेभ्यः, पुरुषाणाम् =पुरिसानं।

(4) सर्वनाम शब्द-रूपों का संज्ञा शब्द-रूपों पर प्रभाव, जैसे- पुरुषात्=पुरिसस्मा, पुरुषे=पुरिसस्मिं।

(5) अकारान्त शब्द-रूपों पर अन्य शब्द-रूपों का प्रभाव, जैसे मुनिः = मुनिस्स।

(6) व्यञ्जनान्त शब्द-रूपों के अन्तिम व्यञ्जन का लोप, किन्तु स्वरान्त शब्द रूपों में लुप्त व्यञ्जन का फिर से अस्तित्व, जैसे- भगवान्= भगवा, भवति=भगवति।

(7) शब्द-रूपों पर संस्कृत एवं प्राकृत के शब्द-रूपों का मिश्रित प्रभाव, जैसे-

गच्छन् (सं.), गच्छतो (प्रा.) =गच्छं, गच्छतो (पालि), गिरिभिः (सं.), गिरीहि (प्रा.) = गिरिभि, गिरीहि (पालि), पुरुषाय (सं.), पुरिसस्स (प्रा.) =पुरिसाय, पुरिसस्स (पालि)।

3.3.2 पालि और संस्कृत का परस्पर सम्बन्ध

वैदिक भाषा में 64 अक्षर होते हैं और संस्कृत में 50। पालि में ऋ नहीं होता, उसके स्थान में कहीं अ, इ या उ हो जाते हैं। जैसे– गृहं = गहं, नृत्यं = नच्चं (यहाँ 'अ' हो गया है)। ऋणं = इणं, ऋषि=इसि (यहाँ 'इ' हो गया है)। ऋतु = उतु, ऋषभ = उसभ (यहाँ 'उ' हो गया है)।

लृ, ऐ, औ पालि में नहीं होते।

ऐ के स्थान में ए हो जाता है। जैसे– ऐरावण=एरावण, वैमानिक=वेमानिक, वैयाकरण=वेय्याकरण। कहीं-कहीं ऐ का इ तथा ई भी हो जाते हैं। जैसे– ग्रैवेयं = गीवेय्यं, सैन्धव=सिन्धव।

औ के स्थान में ओ हो जाता है। जैसे– औदरिक=ओदरिक, दौवारिक=दोवारिक। कहीं-कहीं उ भी हो जाता है। जैसे–मौक्तिक=मुत्तिकं, औद्धत्य=उद्धच्च।

पालिभाषा में 'श' और 'ष' नहीं होते, केवल 'स' ही होता है। सम्प्रति 'ळ' हिन्दी तथा संस्कृत में व्यवहृत नहीं है, किन्तु मराठी में इसका अब भी प्रचलन है।

पालि में व्यंजन हलन्त नहीं होते और न तो पद के अन्त में स्थित

निग्गहीत म् होता है। पालि में विसर्ग और रेफ भी नहीं होते। रेफ का कहीं-कहीं लोप हो जाता है और कहीं-कहीं वह 'र' हो जाता है। जैसे- कर्म=कम्म, सर्व=सब्ब, तर्हि=तरहि, महार्ह=महारहो, आर्य=अरिय, सूर्य=सुरिय, क्रीत=कीत, भार्या=भरिया, पर्यादान=परियादान, प्रेत=पेत, समग्र=समग्ग, इन्द्र=इन्दो।

बोध-प्रश्न

1. कच्चायन-व्याकरण के लेखक ने पालि में कितने वर्ण माना है?
2. पालि में विसर्ग के स्थान पर क्या होता है?
3. पालि में शब्द के कितने भेद होते हैं?

3.4 पालि वर्णमाला

संस्कृत की तरह ही पालि भाषा में भी व्यवस्थित क्रम में वर्णमाला होती है, इसकी वर्णमाला में केवल 43 वर्ण है। वर्ण दो प्रकार के होते है- स्वर और व्यञ्जन।

3.4.1 स्वर

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऍ, ए, ऑ, ओ।

इसमें दो-दो स्वर सवर्ण कहे जाते हैं। जैसे- अ, आ- एक सवर्ण है। इ, ई- एक सवर्ण है। उ, ऊ- एक सवर्ण है। ऍ, ए- एक सवर्ण है। ओॅ, ओ- एक सवर्ण है। सवर्णों में पूर्व वर्ण ह्रस्व है। जैसे- अ, इ, उ, ऍ, ओॅ। उनमे दूसरे वर्ण दीर्घ हैं। जैसे- आ, ई, ऊ, ए, ओ।

3.4.2 व्यञ्जन

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
स	ह	ळ	अं	

पाँच-पाँच वर्णों के पाँच वर्ग हैं।जैसे- **कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग।**

'अं' को निग्गहीत कहते हैं। निग्गहीत का तात्पर्य है अनुस्वार।

बोध-प्रश्न

4. पालि-भाषा में कुल कितने वर्ण होते हैं?
5. पालि-भाषा में कितने स्वर होते हैं?
6. पालि-भाषा में कितने व्यञ्जन होते हैं?
7. 'अं' अर्थात् अनुस्वार को पालि में क्या कहा जाता है?

3.5 सन्धि

'सन्धि' शब्द का अर्थ है मेल। दो शब्दों के मेल को सन्धि कहते हैं। इस प्रकरण में प्रथम पद के अन्त और द्वितीय पद के प्रारम्भ में होने वाले स्वर-व्यंजनों के परिवर्तन का अध्ययन किया जाता है। पालि भाषा में यह ध्वनि-परिवर्तन संस्कृत के समान एक निश्चित दिशा में नहीं चलता, बल्कि अनेक विकल्प लिये रहता है, इसीलिए पालि के सन्धि-नियमों में सुनिश्चित व्यवस्था का अभाव है।

पालि के दोनों प्रमुख वैयाकरणों-मोग्गल्लान और कच्चायन ने सन्धियों का विभाग नहीं किया है। भिक्षु जगदीश काश्यप ने अध्येताओं की सुविधा को दृष्टि में रखते हुए अपने 'पालि महाव्याकरण' में सन्धियों का विभाग प्रस्तुत किया है। यद्यपि पालि में निग्गहीत (अनुस्वार) को व्यंजनो के अन्तर्गत माना जाता है तथापि सन्धि-प्रकरण में उसे स्वर-व्यंजनों से पृथक् महत्त्व दिया गया है। इस प्रकार सन्धियों के तीन भेद किये गये हैं- स्वरसन्धि, व्यंजनसन्धि और निग्गहीतसन्धि।

3.5.1 सर सन्धि (स्वरसन्धि)

जब प्रथम शब्द का अन्तिम और दूसरे शब्द का आदि वर्ण स्वर हो तो उन दोनों शब्दों की सन्धि 'स्वर सन्धि' कहलाती है। इस सन्धि के कई प्रकार हैं। यहां इनका संक्षिप्त सोदाहरण विवेचन किया जा रहा है।

1. **सरो लोपो सरे**- यदि स्वर वर्ण से परे असमान स्वर हो तो कभी-कभी पूर्व स्वर का लोप हो जाता है। यथा--

यस्स + इन्द्रियाणि = यस्स् + इन्द्रियाणि = यस्सिन्द्रियाणि

तत्र + इमे = तत्र् + इमे = तत्रिमे

सद्धा + इन्द्रियं = सद्ध् + इन्द्रियं = सद्धिन्द्रियं

तथा + एव = तथ् + एव = तथेव

भिक्खुनो + ओवादो = भिक्खुन् + ओवादो = भिक्खुनोवादो

समेतु + आयस्मा = समेत् + आयस्मा = समेतायस्मा

महा + ओघो = मह् + ओघो = महोघो

अज्ज + अपोसथो = अज्ज् + अपोसथो = अज्जुपोसथो

अभिभू + आयतनं = अभिभ् + आयतन = अभिभायतनं

एसो + आवुसो = एस् + आवुसो = एसावुसो

उदधि + ऊमियो = उदध् + ऊमियो = उदधूमियो

असन्तो + एत्थ = असन्त् + एत्थ = असन्तेत्थ

2. **परो क्व चि**- यदि स्वर वर्ण से परे असमान स्वर हो तो कभी-कभी पर स्वर का लोप हो जाता है। उदाहरणार्थ--

चत्तारो + इमे = चत्तारो + मे = चत्तारोमे

यतो + अहं = यतो + हं = यतोहं

आकासे + इव = आकासे + व = आकासेव

वसलो + इति = वसलो + ति = वसलोति

सो + अपि = सो + पि = सोपि

छाया + इव = छाया + व = छायाव

ते + अहं = ते + हं = तेहं

3. न द्वे वा- यदि स्वर वर्ण से परे असमान स्वर हो तो कभी-कभी पूर्व या पर दोनों में से किसी स्वर का लोप नहीं होता। कभी-कभी पूर्ववत् वैकल्पिक स्थिति भी बनी रहती है। यथा-

लता + इव = लताइव, लताव और लतेव भी बनता है। पूर्व स्वर का लोप हो (नियम 1 के अनुसार) और परे इ तथा उ हो तो कभी इ का ए तथा उ का ओ हो जाता है। यथा-

वात + ईरित = वात् ईरित = वातेरित

तस्स + इदं = तस्स् + इदं = तस्सेदं

मुख + उदकं = मुख् + उदकं = मुखोदकं

वाम + उरु = वाम् + उरु = वामोरु

चन्द + उदयं = चन्द् + उदयं = चन्दोदयं

5. यवा सरे- यदि इ तथा उ से परे असमान स्वर हो तो कभी-कभी उनका क्रमशः य और व हो जाता है। उदाहरणार्थ--

वि + अकासि = व्य् + अकासि = व्याकासि

अग्गि + आगारं = अग्ग्य् + आगारं = अग्ग्यागारं

सु + आगतं = स्व् + आगतं = स्वागतं

वत्थु + एव = वत्थ्व् + एव = वत्थ्वेव

अपवाद - कभी-कभी यह नियम प्रभावी नहीं होता है। जैसे-

गच्छामि + अहं = गच्छामहं

कभी-कभी य के स्थान पर इय् और व के स्थान पर इव् होता है। जैसे-

पंचमी + अत्थे = पंचमियत्थे

परि + एसना = परियेसना

पुथु + आसने = पुथुवासने

6. ए ओ नं- यदि ए और ओ से परे असमान स्वर हो तो कभी-कभी उसका क्रमशः य और वा हो जाता है। जैसे --

ते + अहं = त्याहं, विकल्प से तेहं भी

सो + अहं = स्वाहं, विकल्प से सोहं भी

सो + अस्स = स्वस्स

मे + अयं = म्यायं, विकल्प से मेयं भी

7. गोस्सावङ्- यदि 'गो' शब्द से परे कोई स्वर आवे तो 'गो' को 'गव' आदेश हो जाता है। यथा-

गो + अस्सं = गव + अस्सं = गवास्सं

8. दीर्घ- यदि स्वर से परे असमान स्वर होने के कारण पूर्व स्वर का लोप हो जाता है (नियम 1 के अनुसार) तो परस्वर विकल्प से दीर्घ हो जाता है। मोग्गलान ने इस सन्धि का विवेचन नहीं किया। उदाहरण प्रस्तुत है–

दुक्खो + अयं = दुक्ख् + अयं = दुक्खायं

सचे + अहं = सच् + अहं = सचाहं

तदा + उपसम्मत्ति = तद् + उपसम्मत्ति = तदूपसम्मत्ति

9. पुब्बो च- यदि स्वर से परे असमान स्वर होने के कारण परस्वर का लोप होता है (नियम 2 के अनुसार) तो पूर्व स्वर को दीर्घ हो जाता है यदि वह ह्रस्व हो। इसका विवेचन भी मोग्गल्लान ने नहीं किया है।

देव + इति = देव + ति = देवाति

वि + अतिमानेति = वि + तिमानेति = वीतिमानेति

किंसु + इधयित्त = किंसु + धयित्त = किंसूधयित्त

लोकस्स + इति = लोकस्स + ति = लोकस्साति

10. यदि अ, इ और उ से परे समान स्वर आए दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते है। यह संस्कृत व्याकरण का नियम है। पालि व्याकरण में इस नियम का उल्लेख नहीं मिलता किन्तु भाषा इसका पालन करती है। जैसे-

ञाण + आलोकेन = ञाणालोकेन

देमि + इति = देमीति

बुद्ध + अनुस्सति = बुद्धानुस्सति

सम्मन्ति + इध = सम्मन्तीध

3.5.2 व्यंजन सन्धि

जब पूर्व शब्द के अन्तिम या पर शब्द के आदि में से कम से कम एक व्यंजन हो तो ऐसे शब्दों की सन्धि व्यंजन सन्धि कहलाती है। पालि में व्यंजन सन्धि के नियम संस्कृत व्याकरण की अपेक्षा बहुत कम हैं। यहां कुछ प्रमुख नियमों का सोदाहरण संक्षिप्त विवेचन किया जा रहा है-

1. व्यञ्जने दीघरस्सा- यदि पूर्व स्वर से परे व्यंजन हो तो प्रायः पूर्व स्वर में ह्रस्व को दीर्घ हो जाता है। यथा-

मुनि + चरे = मुनीचरे

सम्म + धम्म = सम्माधम्म

खन्ति + परमं = खन्तीपरमं

जायति + सोको = जायतीसोको

माला + भारी = मालभारी

भोवादी + नाम = भोवादिनाम

यथाभावी + गुणेन = यथाभाविगुणेन

2. सरम्हा द्वे– यदि स्वर से परे व्यंजन हो तो कभी-कभी उस स्वर का द्वित्व हो जाता है। उदाहरणार्थ--

प + गहो = पग्गहो, दु + कतं = दुक्कतं

यथा + कमं = यथाक्कमं, इध + पमादो = इधप्पमादो

3. चतुत्थदुतियेस्वेसं ततिय पठमा– यदि किसी भी वर्ग का चतुर्थ तथा द्वितीय वर्ण स्वर के बाद आए तो चतुर्थ तथा द्वितीय वर्ण अपने वर्ग के क्रमशः तृतीय एवं प्रथम वर्ण में बदल जाता है। यथा-नि + घोसो में द्वित्व होकर निघ्घोसो होना चाहिए था लेकिन इस नियम से प्रथम घ अपने ही वर्ग के तृतीय वर्ग ग में बदल गया और 'निग्घोसो' शब्द निष्पन्न हो गया।

अ + खन्ति = अख्खन्ति = अक्खन्ति

नि + ठानं = निठ्ठानं = निट्ठानं

अ + फुटं = अफ्फुटं = अप्फुटं

सेत + छत्तं = सेतछ्छत्तं = सेतच्छत्तं

यस + थेरो = यसथ्थेरो = यसत्थेरो

महा + धनो = महाध्धनो = महाद्धनो

4. एओनम वण्णे– यदि ए और ओ के बाद कोई भी वर्ण हो तो ए और ओ का कहीं-कहीं 'अ' हो जाता है। जैसे--

सो + सीलवा = स सीलवा, एसो + अत्थो = एस अत्थो

एसो + धम्मो = एस धम्मो, याचके + आगते = याचकमागते

5. वितिस्सेवे वा– यदि इति शब्द के बाद एव शब्द आता हो तो इति को विकल्प से इत्व आदेश हो जाता है। यथा--

इति + एव = इत्वेव, विकल्प से इच्चेव भी

3.3 निग्गहीत सन्धि

पालि भाषा में निग्गहित (अनुस्वार) को व्यंजनों में ही माना जाता है किन्तु सन्धि-प्रकरण में उससे सम्बद्ध सन्धि-नियमों को व्यंजन सन्धि में न रखकर, स्वतंत्र रूप से रखा जाता है। इस वर्ग के प्रमुख नियम यहां सोदाहरण दिए जा रहे हैं–

1. निग्गहितं–सन्धि करते समय कहीं कहीं निग्गहीत (अनुस्वार) का आगम हो जाता है। उदाहरणार्थ–

चक्खु + उदपादि = चक्खुं उदपादि

त + सभावो = तंसभावो

अव + सिरो = अवंसिरो

पुरिम + जाति = पुरिमं जाति

अणु + थुलानि = अणुं थुलानि

2. लोपो–कहीं-कहीं पूर्व शब्द के अन्त में विद्यमान निग्गहित (अनुस्वार) का, सन्धि होने पर लोप हो जाता है। यथा–

बुद्धानं + शासनं = बुद्धानसासनं

येसं + अहं = येस + अहं = येसाहं

कथं + अहं = कथ + अहं = कथाहं

विदूनं + अग्गं = विदून + अग्गं = विदूनग्गं

3. वग्गे वग्गन्तो–यदि निग्गहीत (अनुस्वार) से परे कोई वर्गीय व्यंजन आता है तो कभी-कभी उस निग्गहीत (अनुस्वार) के स्थान पर वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है। यथा–

तं + करोति = तङ्करोति, तं + चरति = तञ्चरति

तं + ठानं = तण्ठानं, तं + पाति = तम्पाति

तं + धनं = तन्धनं

4. परस्रस्स–कभी-कभी निग्गहीत (अनुस्वार) से परे आने वाले स्वर का लोप हो जाता है। उदाहरणार्थ–

किं + इदानि = किन्दानि, अलं + इदानि = अलंदानि

त्वं + असि = त्वंसि, अभिनन्दुं + इति = अभिनन्दुंति

विकल्प से किमिदानि, अलमिदानि, त्वमसि, अभिनन्दु इति भी होता है।

5. **येवहि सुञ्जे**-यदि निग्गहीत के बाद या, एव तथा हि शब्द आते हैं तो निग्गहीत (अनुस्वार) विकल्प से ञ में परिवर्तित हो जाता है। जैसे–

यं + यदेव = यञ् + यदेव = यञ्ञदेव

तं + एव = तञ्, एव = तञ्ञेव

तं + हि = तञ् + तिञ्ह = तञ्हि

6. **ये सस्सं**–य शब्द परे होने पर सं शब्द के निग्गहीत का विकल्प से ञ हो जाता है। उदाहरणार्थ–

सं + युत्तं = सञ् + युत्तं = सञ्ञुत्तं

सं + यमो = सञ् + यमो = सञ्ञमो

सं + योग = सञ् + योग = सञ्ञोग

विकल्प से संयुत्त, संयमो तथा संयोग भी।

7. **मयदासरे**–स्वर परे होने पर कभी-कभी निग्गहीत म, य तथा द में भी परिवर्तित हो जाता है। यथा–

तं + अहं = तम + अहं = तमहं

एतं + अवोच = एतदवोच

तं + इदं = तमिदं, विकल्प से तयिदं भी

तं + अलं = तमलं

8. छा ळो–यदि छ शब्द के बाद कोई भी स्वर आवे तो विकल्प से ळ् का आगम हो जाता है। यथा–

छ + अंगं = छळङ्गं

छ + आयतनं = छळायतनं, छ + अभिञ्ञा = छळभिञ्ञा

9. यवतरगा चागमा–स्वर यदि बाद में रहे तो विकल्प से म, य, द, व, न, त, र और ग का आगम होता है। यथा–

लहु + एस्सति = लहुयेस्सति

चिरं + आयाति = चिरन्नायाति

इतो + आयादि = इतो नायादि

अज्ज + आयादि = अज्जतग्गे

अत्त + अत्यमभिञ्ञाय = अत्तदत्थमभिञ्ञाय

ति + अङ्गिकं = तिवङ्गिकं

10. तवग्गवरणानं ये चवग्गबयञा–यदि **'य'** बाद में हो तो तवर्ग (त, थ, द, ध और न) का चवर्ग (च, छ, ज, झ, ञ) तथा व्, र्, ण्, को क्रमशः ब्, य्, ञ् आदेश होता है। यथा–

यदि + एवं = यद् + य् + एवं यज्जेव

परि + एसना = पर् + य् = एसना + पय्येसना

पोक्खरणी + यो = पोक्खरञी + यो = पोक्खरञ्ञो

11. तदमिनादीनि–निम्नलिखित सन्धि निपात है–

तं + इमिना = तदमिना

सकिं + आगामी = सकदागामी

संविधाय + अवहारो = संविदावहारो

वारिनो + वाहको = वलाहको

जीवन + मूतो = जीमूतो

छव + सयनं = सुसानं

बोधप्रश्न

8. सन्धि किसे कहते हैं?

9. सन्धि के कितने भेद हैं?

10. निग्गहीत का क्या अर्थ है?

3.6 समास

समास का शब्दार्थ है संक्षेप। चूंकि यह पदों का होता है इसलिए 'पद-संक्षेप' कहना अधिक उचित होगा। दो या दो से अधिक विभक्तियुक्त भिन्नार्थक पदों का एकार्थीभाव समास कहलाता है। समास में शब्द और अर्थ दोनों का एकीकरण आवश्यक है। एकीकरण की इस प्रक्रिया में कभी पूर्व पदार्थ प्रधान हो जाता है तो कभी द्वितीय पदार्थ, कभी दोनों ही प्रधान हो जाते हैं तो कभी दोनों से इतर पदार्थ।

पालि व्याकरण में समास के प्रयोजन पर भी विचार किया गया है। 'रूप-सिद्धि' शीर्षक पुस्तक में कहा गया है कि समास का प्रयोजन एकपदत्व तथा एकविभक्तित्व है। वस्तुतः एकपदत्व ही एकविभक्तित्व है। समास में जो दो विभक्तियुक्त पद समस्त होते हैं उन दोनों की विभक्तियां लुप्त हो जाती हैं और प्रकृतिमात्र अवशिष्ट रहती है। तदुपरान्त उन दोनों के अंशों को अन्य नामों के समान ही विभक्ति, लिंग, वचन आदि प्रदान किया जाता है। संस्कृत में समस्त पदों में सन्धि अनिवार्य मानी जाती है, किन्तु पालि में कभी-कभी इस नियम की अवहेलना भी कर दी जाती है।

संस्कृत और पालि में समास के स्वरूप तथा भेदों में मूलतः कोई अन्तर नहीं है, किन्तु पालि में कभी-कभी संस्कृत नियमों के विपरीत प्रयोग भी देखे जाते हैं। उक्त दोनों भाषाओं के सन्धि-नियमों में अन्तर होने के कारण समासों में भी विभिन्नता आ जाती है। संस्कृत के समान पालि में भी समास के छः भेद माने जाते हैं– (1) अव्ययीभाव, (2) तत्पुरुष, (3) कर्मधारय, (4) द्विगु, (5) द्वन्द्व और (6) बहुव्रीहि। पालि में कभी-कभी स्वतंत्र प्रकृति वाले समास भी दिखते हैं।

3.6.1 अव्ययीभाव (असंख्य) समास

अव्ययीभाव में जिन दो पदों का समास होता है उनमें प्रथम पद प्रायः अव्यय रहता है और दूसरा पद संज्ञा। समास होने पर यह पद (समस्त पद) अव्यय के समान प्रायः नपुंसकलिंग, प्रथमा विभक्ति, एकवचन में प्रयुक्त होता है। ध्वनि परिवर्तन के अतिरिक्त, संस्कृत पालि तथा हिन्दी में इस समास में कोई अन्तर नहीं है।

इसके प्रमुख नियम निम्नलिखित हैं–

(1) विभक्ति, सम्पत्ति, साकल्य अभाव, यथा, पश्चात् और युगपद-इन अर्थों में अव्यय के साथ यह समास होता है। आचार्य मोग्गल्लान ने इसे इस प्रकार सूत्रबद्ध किया है- 'असंख्यं विभत्तिसम्पत्तिसाकल्या-भावयथापच्छायुगपदत्थे' इसके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं–

विभक्ति - इत्थीसु कथा पवत्त-अधि इत्थी (अधित्थि)

सम्पत्ति - सम्पन्नं ब्रह्मं-सब्रह्मं समिद्धि भिक्खानं-सुभिक्खं

समीप - नगरस्स समीपं-उपनगरं, गंगाय समीप-उपगंगं

साकल्य - सह तिणेन-सतिणं

अभाव - मक्खिकानं अभावो-निम्मक्खिकं, अतिगतानि तिणानि-नित्तिणं

यथा - रूपस्स योग्ग-अनुरूपं सत्तिं अनतिकम्म-यथासत्ति

पश्चात् - रथस्स पच्छा अनुरथं

युगपद - सहचक्केन-सचक्कं

(2) अवधारण (इतना) के अर्थ में 'याव' शब्द के साथ यह समास होता है। मोग्गल्लान के शब्दों में 'यावावधारो'। यथा– याव जीवो ताव-यावजीवं (आजीवन)

(3) परि, अप, आ, वहि, तिरो, पुरे पच्छा-इन शब्दों को पंचम्यन्त शब्दों के साथ समास होता है और वैकल्पिक रूप से द्वितीयान्त शब्दों के साथ भी (पच्चपाबाहितिरो पुरे पच्छावा पञ्चम्या)। इसके उदाहरण प्रस्तुत हैं–

परिपब्बतं वस्सि देवो	=	परिपब्बता
अपपब्बतं वस्सि देवो	=	अपपब्बता
आपाटलिपुत्तं वस्सि देवो	=	आपाटलिपुत्त
बहिगामं वस्सि देवो	=	बहिगामा

(4) ओरे, उपरि, पटि, पारे, मज्झे, हेट्ठ, उद्ध, अधो, अन्तो-इन शब्दों का षष्ठ्यन्त शब्दों के साथ विकल्प से समास होता है। मोग्गल्लान का सूत्र है– 'ओरेपरिपटिपारेमज्झेहेट्ठुद्धान्तो वा छट्ठिया।' इसके कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहा हैं–

गंगाय ओरे	-	ओरे गंगं
सिखरस्स उपरि	-	उपरिसिखरं
सोतस्स पटि	-	पटिसोतं
यमुनाय पारे	-	पारेयमुनं
गंगाय मज्झे	-	हेट्ठापासादं
पासादस्स हेट्ठा	-	अतोपासादं
गंगाय अथो	-	अधोगंगं

इन्हीं शब्दों के तत्पुरुष के आधार पर गंगओरं (गंगोर), सिखरोपरि, गंगअधो (गंगधो) आदि रूप भी बनेंगे।

(5) कुछ निपात समास भी होते हैं।

तिट्ठन्ति गावों यस्मिं काले-		तिट्ठकालो
वहन्ति गावों यस्मिं काले	-	वहग्गुकालो
आयन्ति गावो यस्मिं काले	-	आयतिगवं
खले यवा यस्मिं काले	-	खलयेवं

(6) सामीप्य और आयाम (विस्तार) के अर्थ में अनु उपसर्ग के साथ भी अव्ययीभाव समास होता है (समीपायामेस्वनु)। उदाहरणार्थ–

अनुवनं असनि गता। अनुगंगं वाराणसी।

पर सं - परोसतं

पर सहसं - परोसहसं

3.6.2 तत्पुरुष (तप्पुरिस) समास

जहाँ दो पदों का समास होने पर पूर्व पद की विभक्ति का लोप हो जाता है, वहाँ तत्पुरुष समास होता है। यह विभक्ति द्वितीया से लेकर सप्तमी तक हो सकती है। इसी आधार पर तत्पुरुष के छः भेद किए जाते हैं। यहां इनके कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं :

द्वितीया - अरञ्ञंगतो–अरञ्ञगतो
गामंगतो–गामगतो
मुहुतंसुखं–मुहुतसुखं
सुखं पत्ते–सुखपत्ते

तृतीया - असिना छिन्नो–असिच्छिन्नो
बुद्धेन भासितो– बुद्धभासितो
सुखेन सहगतं–सुखसहगतं
बिज्जुना ताडितो–बिज्जुताडितो

तृतीया तत्पुरुष में कहीं–कहीं मध्यपद का लोप भी हो जाता है। उदाहरणार्थ– दधिना उपासित्तं भोजनं–दधिभोजनं गुळेन मिस्सो ओदनं–गुळोदनं

चतुर्थी - यूपाय दारु–यूपदारु
रजनाय दोणि–रजनदोणि

पञ्चमी - गामस्मानिग्गतो–गामनिग्गतो
रुक्खस्मा पतितो–रुक्खपतितो
सासनम्हा चुतो–सासनचुतो

षष्ठी–षष्ठी तत्पुरुष में पूर्वपद में विद्यमान अन्त्य ई और ऊ ह्रस्व में परिवर्तित हो जाते हैं। इसके उदाहरण प्रस्तुत हैं–

नदीया तीरं–नदितीरं
चन्दनस्स गन्धो–चन्दनगन्धो
रञ्ञो पुरिसो–राजपुरिसो
नदीया सोतो–नदिसोतो

सप्तमी - अरञ्ञे वासो–अरञ्ञवासो
दाने अभिरतो–दानभिरतो, दानाभिरतो
धम्मे लीनो–धम्मलीनो

कुछ अन्य तत्पुरुष

(क) अलुक् तत्पुरुष–इसमें पूर्वपद की विभक्ति का लोप नहीं होता जो तत्पुरुष की प्रधान विशेषता है। अलुप्त विभक्ति के साथ ही उत्तर पद का समास हो जाता है। जैसे–

उरसि लोमा अस्ति इति - उरसिलोमो

पभं करोति इति – पभंकरो

अन्ते वसति इति – अन्तेवासी

(ख) उपपद तत्पुरुष–इसमें दूसरा पद धातु रूप होता है और समास होने पर जहाँ पूर्वपद की विभक्ति का लोप होता है वहाँ उत्तर पद की न केवल विभक्ति बल्कि धातु का भी कुछ अंश लुप्त हो जाता है। उदाहरणार्थ–

उरसा गच्छति इति– उरगा

पादेन पिबति इति – पादपो

कुम्भं करोति इति – कुम्भकारो

3.6.3 कर्मधारय (कम्मधारय) समास

जहां विशेषण और विशेष्य पदों का समास होता है, उसे कर्मधारय समास कहा जाता है। उदाहरण के लिए–

नीलञ्च तं उप्पलं	–	नीलुप्पलं (नीलोत्पल)
खत्तिया च सा कञ्ञ चाति	–	खत्तियकञ्ञा
लोहितञ्ञ तं चन्दनञ्चाति	–	लोहितचन्दनं
सीलमेव धनं	–	सीलधनं

'न' के साथ विभक्तियुक्त शब्द का समास होने पर कर्मधारय ही होता है। इसे कुछ विद्वान् न्यञ् समास भी कहते हैं। यथा–

न अस्स कुलमत्थि इति	–	नकुलो
न अस्स खमत्थि इति	–	नखो
न ओकासं	–	अनोकासं
न ब्राह्मणो	–	अब्राह्मणो
न अक्खातं	–	अनक्खातं

'कु', 'प' आदि के साथ विभक्तियुक्त शब्दों का समास होने पर कर्मधारय समास होता है। उत्तरपद स्वर से आरम्भ हो तो 'कु' को 'कद' तथा अल्पार्थ में प्रयुक्त होने पर 'कु' को 'का' आदेश हो जाता है। उत्तरपद 'पुरिस' होने पर कु को विकल्प से 'का' आदेश होता है। इसके कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं।

कुत्सितो ब्राह्मणो	–	कुब्राह्मणो
कु लवणं	–	कालवणं
कु पुरिसो	–	कापुरिसो, विकल्प से कुपुरिसो भी
पग्गतो आचरियो	–	पाचरियो
अतिक्कन्तो मञ्चं	–	अतिमञ्चो
अवकुट्ठं कोकिलाय वनं	–	अवकोकिलं

परिगिलाने अञ्झेनाय	–	परियञ्झेनो
निग्गतो कोसम्बिया	–	निक्कोसम्बि

3.6.4 द्विगु समास

जहां पूर्व पद संख्यावाची विशेषण हो उसे द्विगु समास कहा जाता है। यह नपुंसकलिंगांत होता है। कुछ विचारक इसे कर्मधारय का ही अंग मानते हैं जबकि दूसरे स्वतंत्र समास मानने के पक्षधर हैं। स्वरूप की स्पष्टता के लिए इसे स्वतंत्र मानना ही अधिक युक्तिसंगत है। वैयाकरण मोग्गल्लान ने इसका विवेचन कर्मधारय के अन्तर्गत ही किया है।

द्विगु के दो भेद होते हैं–समाहार द्विगु और असमाहार द्विगु। समाहार द्विगु समूहवाचक होता है। यह उल्लिखित वस्तुओं के समूह का ज्ञान कराता है। उदाहरणार्थ–

पञ्चन्नं गुन्नं समाहारो	–	पञ्चगवं
द्विन्नं रत्तीनं समाहारो	–	द्विरत्तं
तिन्नं लोकानं समाहारो	–	तिलोकं
चतन्नं सच्चानं समाहारो	–	चतुसच्चं

असमाहार द्विगु समूहवाचक नहीं होता, बल्कि उससे उल्लिखित संख्या वाले व्यक्तियों या पदार्थों का बोध होता है। इसे एक उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है। 'चार दिशा' की व्याख्या यदि यों की जाए कि 'चारों दिशाओं का समूह' तो समाहार द्विगु होगा किन्तु यदि इसे 'चार दिशाएं' इस रूप में स्पष्ट किया जाए जो केवल दिशाओं (पृथक्-पृथक्) का बोध कराता है तो इसे असमाहार द्विगु जायेगा। इसके कुछ उदाहरण देना प्रसंग प्राप्त है–

चतस्सो दिसा	–	चतुदिसा
तयो भवा	–	तिभवा
पञ्च इन्द्रियाणि	–	पञ्चिन्द्रियाणि

3.6.5 द्वन्द्व (द्वन्द) समास

द्वन्द्व में दोनों पद प्रधान होते हैं। यह और (च) के अर्थ में होता है जिसका समास होने पर लोप हो जाता है। इसके दो प्रमुख भेद हैं। इतरेतर द्वन्द्व और समाहार द्वन्द्व। इतरेतर द्वन्द्व में जिन दो पदार्थों या व्यक्तियों का समास होता है, वे अपना महत्त्व पृथक्-पृथक् रखते हैं तथा समस्त पद का वचन दोनों पदों के संयुक्त वचन के अनुसार होता है। उदाहरणार्थ–

समणो च ब्राह्मणो च	–	समणब्राह्मणा
चन्दिमो च सुरियो च	–	चन्दिमसुरिया
अग्गी च धूमो च	–	अग्गिधूमा
धम्मो च अत्थो च	–	धम्मत्था
यमो च वरुणो च	–	यमवरुणा

ब्राह्मणो च गहपतिको च – ब्राह्मणगहपतिका

देवा च मनुस्सा च – देवमनुस्सा

मुखं च नासिकं च – मुखनासिक

समाहार द्वन्द्व में दोनों पद मिलकर समूह को व्यक्त करते हैं। अतः प्रायः नपुंसकलिंग और एकवचन में प्रयुक्त होते हैं। प्राणी या सेना के अंगों, नित्य बैरियों, क्षुद्र जन्तुओं, ग्रंथों और नदियों के अर्थों में यह समाहार द्वन्द्व होता है। उदाहरणार्थ–

कीटं च पतंगं च तेसं समाहारो – कीटपतंगं

चक्खुं च सोतं च तेसं समाहारो – चक्खुसोत

काको च उलूको च तेसं समाहारो – काकोलूकं

मुरजं च गोमुखं च तेसं समाहारो – मुरजगोमुखं

गीतं च वादितं च तेसं समाहारो – गीतवादितं

असि च चम्मं च तेसं समाहारो – असिचम्मं

3.6.6 बहुव्रीहि (बहुवीहि) समास

बहुव्रीहि समास अन्य पद–प्रधान है। इसमें पूर्व पद तथा उत्तर पद मिलकर किसी अन्य व्यक्ति या पदार्थ का बोध कराते हैं–जैसे पीताम्बर (पीत+अम्बर) यदि यह पीले कपड़े को व्यक्त करे तो कर्मधारय समास होगा लेकिन बहुव्रीहि में 'पीला है कपड़ा जिसका' यह विग्रह होकर, यह कृष्ण को द्योतित करेगा। इस प्रकार कृष्ण का भाव न पीत शब्द में है और न अम्बर में, बल्कि यह दोनों से भिन्न वस्तु या व्यक्ति ही है। मोग्गल्लान और कच्चायन दोनों ही वैयाकरणों ने अपनी परिभाषा में अन्यार्थ की प्रधानता को ही महत्व दिया है। यहां बहुव्रीहि के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं–

जितानि इन्द्रियानि येन सो – जितिन्द्रियो

लम्बा कण्णो यस्य सो – लम्बकण्णो

छिन्न हत्थ यस्स सो – छिन्नहत्थो

अत्थिखीरं यस्सा सो – अत्थिखीरा

दक्खिणस्सा च पुब्बस्सा च दिसाय यदन्तरालं – दक्खिण–पुब्बादिसा

कल्याण भरिया यस्य सो – कल्याणभरिया

दीघा जङ्घा यस्स सो – दीघजङ्घो

चन्दो विय मुखं यस्सा सा – चन्दमुखी

कुमारी भरीया यस्स सो – कुमारभरिया

दण्डोहत्थे यस्स सो – दण्डहत्थो

पञ्ञा एव बलं यस्स सो – पञ्ञबलो

न सन्ति पुत्त अस्स – अपुत्ते

बोधप्रश्न

11. समास किसे कहते हैं?

12. समास के कितने भेद हैं?

13. कर्मधारय समास किसे कहते हैं?

3.7 कारक

पद या रूप दो तत्त्वों से मिलकर बनता है जो प्रातिपदिक और प्रत्यय कहलाते हैं। इन्हें ही आज भाषाविज्ञान की शब्दावली में क्रमशः अर्थतत्त्व और सम्बन्धतत्त्व कहा जाता है।

पालि रूप 'रामस्स' का विश्लेषण करने से ये दोनों घटक स्पष्ट हो जाएंगे। इसमें 'राम' मूल प्रातिपदिक है जो किसी संबंध को नहीं बताता, बल्कि वस्तुमात्र का अस्तित्व सिद्ध करता है। इसके साथ जुड़ा हुआ 'स्स' अंश प्रत्यय है जो राम का संबंध बताता है। इस अंश से ही संबंध कारक तथा एकवचन की अभिव्यक्ति होती है। इस प्रकार प्रथम अंश केवल अर्थ को द्योतित करता है और द्वितीय अंश संबंध मात्र को। इसी प्रकार धातु रूप 'पठति' में 'पठ' अंश पढ़ने की क्रिया को व्यक्त करता है और 'ति' वर्तमान काल, प्रथम पुरुष और एकवचन को। निष्कर्षतः मूल शब्द या प्रातिपादिक में संबंध विशेष को द्योतित करने के लिए कुछ प्रत्यय या विभक्तियाँ जोड़ी जाती हैं, अतः संबंधविषयक अर्थ विभक्तियों के अपने अर्थ हैं। इन अर्थों का संबंध क्रिया से होने के कारण ये अर्थ ही कारक कहलाते हैं। कभी तो विभक्तियाँ कारक को बताती हैं और कभी कुछ विशेष शब्दों के योग कारक से भिन्न रहकर अर्थ व्यक्त कर देते हैं। इन्हें क्रमशः कारक-विभक्ति और उपपद-विभक्ति कहते हैं।

पालिभाषा में भी संस्कृत के समान सात ही विभक्तियाँ होती हैं। सम्बोधन को 'आलपन' कहा जाता है और इसमें प्रायः प्रथमा का ही प्रयोग होता है। पालि में विभक्तियाँ संस्कृत से कुछ भिन्न रूप में प्रयुक्त होती है। कारकों के विभक्ति एवं उनके प्रयुक्त चिन्हों को इस प्रकार जाना जा सकता है।

3.7.1 प्रथमा विभक्ति (पठमा विभत्ति)

1. कर्तृवाच्य के कर्ता में अथवा प्रातिपदिक के अर्थमात्र का ज्ञान कराने में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। यथा–

(क) बुद्धो धम्मं पकासति–बुद्ध धर्म को प्रकाशित करते हैं।

(ख) अग्गि, फलानि आदि

2. आमन्त्रण (सम्बोधन) में 'आलपन विभत्ति' का प्रयोग होता है जिसमें प्रथमा विभक्ति ही लगती है। जैसे– भो पुरिस! किं त्वं सीलं न रक्खसि?

3.7.2 द्वितीया विभक्ति (दुतिया विभत्ति)

1. कर्तृवाच्य के कर्म में द्वितीया विभक्ति प्रयुक्त होती है। यथा–

सूदो आदेनं पचति – पाचक चावल बनाता है।

बालो आदिच्चं पस्सति – बच्चा सूर्य को देखता है।

2. क्रिया, गुण तथा द्रव्य के लगातार होने पर समय तथा दूरीवाचक शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है। उदाहरणार्थ–

सामणेरो मासं धम्मं पठति – श्रामणेर एक मास धर्म पढ़ता है।

भच्चो कोसं गच्छसि – नौकर एक कोस जाता है।

3. धि (धिक्कार), अन्तरा (बीच), पति (प्रति), बिना, अभितो (दोनों ओर), उभयतो (दोनों ओर), परितो (चारों ओर), सब्बतो (सब ओर) आदि के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे–

धिरत्थु मं अलसं पुत्तं – मुझ आलसी बेटे को धिक्कार है।

न सिज्झति धम्मो विरियं बिना – पुरुषार्थ के बिना धर्म सफल नहीं होता।

अन्तरा च राजगहं अन्तरा च नालन्दा – राजगृह और नालन्दा के बीच।

भूपं अन्तरेन पासादो न सोभति – राजा के बिना महल शोभित नहीं होता।

तळागं अभितो रुक्खा तिट्ठन्ति – तालाब के दोनों ओर वृक्ष खड़े हैं।

गामं परितो सब्बतो वा खेत्त – ग्राम के दोनों ओर तालाब शोभित हैं।

4. संकेत करने, भेद बतलाने, व्याप्त करने तथा भाग होने के अर्थ में अभि, पति (प्रति), यदि और अनु शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। उदाहरणार्थ––

पब्बतं अभिजलति अनलो – पर्वत की ओर आग लगी है।

सो रुक्खं रुक्खं अभितिट्ठति – वह वृक्ष-वृक्ष के नीचे खड़ा होता है।

देवदत्ते पसन्नो बुद्धमनु – देवदत्त बुद्ध के अनुकूल है।

साधु देवदत्ते मातरं परि – देवदत्त मां के प्रति भला है।

रुक्खमनु विज्जोतते विज्जु – वृक्ष की ओर बिजली चमकती है।

एतं भागं मं परिभवति – वह भाग मेरे हिस्से का है। अनुभवति वा

5. साथ होने के अर्थ में, अनु के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा–

आचरियं अनुगच्छति-सिस्सो – शिष्य आचार्य के साथ जाता है।

6. रिते (ऋते), बिना तथा अञ्ञत्र (अन्यत्र) शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। उदाहरणार्थ–

सधम्मं रिते अञ्ञो को धम्मो – सद्धर्म के बिना कौन अन्य धर्म रक्षा जने रक्खति कर सकता है।

जलं बिना रुक्खो सुक्खति – पानी के बिना वृक्ष सूख जाता है।

रामं अञ्ञत्र को अञ्ञो – राम के बिना कौन अन्य लोकरक्षक लोकरक्खको है?

7. कभी-कभी तृतीया, षष्ठी और सप्तमी के अर्थ में भी द्वितीया विभक्ति होती है। यथा–

सचे मं समणो गोतमो नालपिस्सति।

अपिस्सु मं अग्गिवेस्सन तिस्सो उपमायो पटिभंसु।

एकं समये भगवा सावत्थियं विहरति।

3.7.3 तृतीया विभक्ति (ततिया विभत्ति)

1. कर्मवाच्य तथा भाववाच्य के कर्ता में, करण कारक तथा क्रियाविशेषण में तृतीया विभक्ति होती है। यथा–

कर्मवाच्य – रञ्ञा धनं दीयते–राजा द्वारा धन दिया जाता है। बालेन चन्दो दिस्सति– बालक द्वारा चन्द्रमा देखा जाता है।

कारण कारक–दण्डेन गोपालो गावो पाचेति–ग्वाला दण्ड से गायों को हांकता है।

दण्डेन सप्पं पहरति–दण्ड से सर्प पर चोट करता है।

दुचक्केन गामं याति–साइकिल से गांव जाता है।

क्रिया विशेषण–गोत्तेन गोतमो–गोत्र से गौतम है।

माणवो पापको नाम नामेन–बालक नाम से पापक है।

भाववाच्य– बालकेहि अत्र भूयते–लड़के यहां मौजूद हैं।

सब्बेहि अत्र भूयेयय–सबको यहां उपस्थित होना चाहिए।

2. सह (साथ) बोधक शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे–

पुत्तेन सद्धि आगतो – पुत्र के साथ जाता है।

सिस्सेहि सह समं वा

आगच्छति आचरियो – आचार्य शिष्य के साथ आता है।

3. तुल्य के अर्थ में तृतीया विभक्ति होती है, विकल्प से षष्ठी भी मान्य है। उदाहरणार्थ–

आचरिय सदिसो सिस्सो – शिष्य आचार्य के समान है।

जनकेन तुल्यो पुत्ते – पुत्र पिता के समान है।

'आचारियस्स सदिसो सिस्सो' तथा 'जनकस्स तुल्यो पुत्ते' भी ठीक है।

4. लक्षण तथा हेतु के अर्थ मे तृतीया विभक्ति होती है। यथा–

लक्षण–तिदण्डेन परिब्बाजको बुज्झति – त्रिदण्ड से संन्यासी समझा जाता है।

रामो नयनेन काणो पादेन खञ्ञो अत्थि – राम आंख से काणा तथा पैर से लंगड़ा है।

हेतु–सो अन्नेन इध वसति – धर्म से यश बढ़ता है।

5. बिना और अञ्ञत्र (अन्यत्र) के योग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा–

जलेन बिना रुक्खो सुक्खति – जल के बिना वृक्ष सूख जाता है।

धम्मेन अञ्ञत्र को अञ्ञे – धर्म के आलावा और कौन सहायको सहायक है।

6. पुथ (पृथक्) और नाना (भिन्न) शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। उदाहरणार्थ––

पुथगेन गामेन सो अरञ्ञं अधिवसति – गांव से दूर वह अरण्य में रहता है।

सोगतधम्मेन नानातित्थियधम्मो – सुगत धर्म से भिन्न ही तैर्थिको का धर्म है।

7. कभी-कभी सप्तमी के स्थान पर भी तृतीया विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। यथा–

तेन खो पुन समयेन भगवा सत्तहं – उस समय भगवान् एक सप्ताह एक एक पल्लङ्केन निसिन्नो होति ही पलंग पर पड़े रहे।

3.7.4 चतुर्थी विभक्ति (चतुत्थी विभत्ति)

1. सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा––

ब्राह्मणान भोजनं ददाति – ब्राह्मणों को भोजन देता है।

याचकस्स भिक्खं ददाति – याचक को भीख देता है।

2. 'उसके लिए' इस अर्थ में भी चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है यथा–

लोकहिताय बुद्धोधम्म पकासति – लोकहित के लिए बुद्ध धर्म को प्रकाशित करते हैं।

सूदो पाकाय भोजनघरं गच्छति – पाचक खाना बनाने के लिए रसोई जाता है।

माणवकानं अनज्झायो रुच्चति – बच्चों को अनध्याय अच्छा लगता है।

3. सिलाघ, हनु, ठा, सप, धार, पिट, कुछ, दुह, इस्स-इन धातुओं के प्रयोग में कारक की सम्प्रदान संज्ञा होती है अतः चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। उदाहरणार्थ–

बुद्धस्स अञ्ञतित्थिया पिहयन्ति।

उपतिट्ठेयय सक्यपुत्तन बड्ढकी।

दुहयति दिसानं मेघो। मय्हं सपते।

सुवण्णं ते धाारये। देवदत्तस्स कोधयति।

3.7.5 पञ्चमी विभक्ति

1. अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे–

गहपतिको चोरस्मा रक्खति – गृहपति चोरों से रक्षा करता है।

पापा चित्त निवारये – पाप से चित्त हटाता है।

माणवो गामस्मा आगच्छति – विद्यार्थी गांव से आता है।

2. रक्षणार्थक धातुओं के योग में जिससे रक्षा की जाए, उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। उदाहरणार्थ–

काकेहि रक्खन्ति तण्डुला – कौओं से चावलों की रक्षा करते हैं।

3. वर्जन के अर्थ में 'अप' और 'परि' शब्दों के योग में पञ्चमी विभिक्त होती है। यथा–

अप पाटलिपुत्तस्मा बुट्ठो देवो।

परि पाटलिपुत्तस्मा बुट्ठो देवो।

4. प्रतिनिधि और प्रतिदान अर्थ वाले 'पति' के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे–

बुद्धस्मा पति सारिपुत्ते – सारिपुत्र बुद्ध के प्रतिनिधि है।

घतं तेलसा पति ददति – तेल लेकर घी देता है।

5. रिते (ऋते), **बिना, अञ्ञत्र** (अन्यत्र), **पुथ** (पृथक्) तथा **नाना** (भिन्न) शब्दों के योग में विकल्प से पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा–

रामस्मा रिते अञ्ञो को जनो खक्खति।

रामस्मा अञ्ञत्र को अञ्ञो लोकरक्खको।

जलस्मा बिना रुक्खो खुक्खति।

पुथगेव गामस्मा सो अरञ्ञं अधिवसति।

सोगतधाम्मस्मा नाना तित्थियधम्मो।

6. कभी-कभी तृतीया विभक्ति के स्थान पर भी पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग पालि साहित्य में देखा जाता है। यथा–

अननुबोधा अप्पटिवेधा चतुन्नं अरियसच्चानं यथाभूतं अदस्सना।

3.7.6 षष्ठी विभक्ति (छट्ठी विभत्ति)

1. सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा–

आचारियस्स पुत्ते अत्थि – आचार्य का पुत्र है।

तिट्ठन्ति धम्मस्स ञातारो – धर्मज्ञ विद्यमान हैं।

2. जाति, गुण और क्रिया की दृष्टि से जहां अनेक में से एक का निर्धारण किया जाए, वहां षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे–

मनुस्सानं खत्तियो सेट्ठो – मनुष्यों में क्षत्रिय श्रेष्ठ है।

दानानं धम्मदानं सेट्ठं – दानों में धर्मदान श्रेष्ठ है।

कण्हा गावीनं सम्पन्नखीरतमा – कृष्णा गायों में अधिक दूध देने वाली श्रेष्ठ है।

3. हेतु अर्थ वाले शब्दों के योग में विकल्प से षष्ठी विभक्ति होती है। यथा–

उदरस्स हेतु इस वसति।

4. पालि में कभी-कभी द्वितीया, तृतीया, पंचमी या सप्तमी के स्थान पर भी षष्ठी का प्रयोग देखा जाता है। यथा–

न तेसं कोचि सरति – उन्हें कोई स्मरण नहीं करता।

एवं में सुतं – ऐसा मैंने सुना है।

सब्बे तसन्ति दंडस्स – सभी दंड से डरते हैं।

द्वे यक्खां भगवतो पसन्ना अंहसु– दो पक्ष भगवान् पर प्रसन्न हुए।

सप्तमी विभक्ति (सत्तमी विभत्ति)

1. क्रिया के आधार पर (अधिकरण) में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा–

सामाणेरो अरञ्ञे अधिवसति।

सकुणा आकासे विचरन्ति।

माणवका उय्याने विहरन्ति।

2. जिस निमित्त से कोई क्रिया सम्पन्न की जाये, उस निमित्त में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे–

कुञ्जरो दन्तेसु हञ्जते।

अजिनम्हि मिगं हञ्जति।

3. जो क्रिया अन्य क्रिया का संकेत करती हो उसमें सप्तमी विभक्ति होती हैं–

आचरियं आगते सिस्सा उट्ठन्ति।

गावीसु दय्हभानासु गतो।

4. जहां बहुत सी वस्तुओं में से एक का निर्धारण किया जाए, वहां विकल्प से सप्तमी विभक्ति होती है। उदाहरणार्थ–

दुजेसु ब्राह्मणो सेट्ठो।

चतुप्पदेस्तु सीहो, मच्छेसु आनन्दमच्छो, सकुणेसु सुवण्णहंसो मानुसेसु नपो सेट्ठो।

5. अधिक होने के अर्थ में उपशब्द तथा स्वामी होने के अर्थ में अधि के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा–

उपनिक्खे कहापणं – कर्षापण निष्क से अधिक है।

अधि पञ्चालेसु ब्रह्मदत्ते – ब्रह्मदत्त पांचालों का अधिपति है।

6. हेतु अर्थ का ज्ञान करानेवाले शब्दों के योग में 'सब्ब:' आदि सर्वनाम के साथ सभी विभक्तियां हो सकती हैं। यथा–

किं कारणं। केन कारणेन। कस्स हेतुस्स।

कस्मा हेतुस्मा। कस्स पयोजनस्स। कस्मिं पयोजनस्मिं।

7. कभी-कभी चतुर्थी और पंचमी के स्थान पर भी सप्तमी का प्रयोग पालिभाषा में देखा जाता है। जैसे–

संघे दिन्नं महप्फहं – संघ के दान देना महाफल है।

कदलीसु गजे रक्खति – केलों से हाथियों को नचाते हैं।

बोधप्रश्न

14. कारक किसे कहते हैं?

15. कारक के कितने भेद हैं?

16. पालि में सम्बोधन को क्या कहा जाता है?

3.8 शब्दरूप

शब्दरूपों के अन्तर्गत संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण से बनने वाले रूपों या पदों का विवेचन आता है। शब्द से सम्बन्ध तत्त्व जुड़ने पर वे पद या रूप कहलाते हैं। शब्दरूप तीन सम्बन्धों को बताता है : लिंग, वचन और कारक। जैसे– **'राम'** शब्द से **'रामस्स'** पद बनता है जो पुंल्लिंग एकवचन तथा सम्बन्ध कारक को स्पष्ट करता है। पालि में तीन लिंग तथा दो वचन होते हैं। लिंग हैं : पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग। लिंग की दृष्टि से पालि और संस्कृत में कोई विशेष अन्तर नहीं है। पालि में दो वचन होते हैं : एकवचन और अनेकवचन। संस्कृत के समान द्विवचन यहां नहीं मिलता। बहुवचन को अनेकवचन कहा जाता है।

पालि में सात विभक्तियाँ तथा आलपन (सम्बोधन) होता है। इस सभी में शब्दों के विभिन्न रूप बनते हैं। शब्द में लगने वाले पालि के विभक्ति-चिह्न मूलत: इस प्रकार हैं–

		चिह्न	
कारक	**विभक्ति**	**एकवचन**	**अनेकवचन**
1. कर्ता (कत्ता)	पठमा	सि/ओ (ए)	यो/आ
2. कर्म (कम्म)	दुतिया	अं	यो/ए
3. करण (करणं)	ततिया	ना/न	हि/भि
4. सम्प्रदान (सम्पदानं)	चतुत्थी	य/स/स्म	नं
5. अपादान (अपादानं)	पञ्चमी	हा/म्हा/स्मा	हि/भि
6. सम्बन्ध (सामी)	छट्ठी	स/स्म	नं
7. अधिकरण (अधिकरणं)	सत्तमी	ए/म्हि/स्मि	सु
8. सम्बोधन	आलपन	अ/आ/सि (ग)	यो/आ

जिस प्रकार संस्कृत में शब्द की विभक्तियाँ सुप् कहलाती है और उनसे व्युत्पन्न रूप सुबन्त, उसी प्रकार पालि में इन्हें 'सिसु' कहा जाता है और इनके निर्मित रूपों को सिसुन्त।

पालि में संस्कृत के प्रभावस्वरूप ही चतुर्थी और षष्ठी दो विभक्तियाँ मानी जाती है। वैयाकरण मोग्गल्लान ने चतुर्थी और षष्ठी जो दो विभक्तियाँ मानी है उनमें सम्प्रदान तथा सम्बन्ध का भेद दिखाना ही तात्पर्य है अन्यथा शब्दों के रूपों के आधार पर यह भेद ज्ञात ही नहीं हो सकता।

पालि के कुछ अतिप्रचलित मानक शब्दों के रूप यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं। शेष शब्दों के लिंग, तथा अन्य वर्ण के आधार पर इसी प्रकार रूप बनेंगे। अतः अवशिष्ट शब्दों के रूप इन्हीं के आधार पर समझने चाहिए।

अकारान्त पुल्लिङ्ग- बुद्ध

विभत्ति	**एकवचन**	**अनेकवचन**
पठमा	बुद्धो,	बुद्धा
दुतिया	बुद्धं	बुद्धे
ततिया	बुद्धेन	बुद्धेहि, बुद्धेभि
चतुत्थी	बुद्धाय, बुद्धस्स	बुद्धानं
पञ्चमी	बुद्धा, बुद्धम्हा, बुद्धस्मा	बुद्धेहि, बुद्धेभि
छट्ठी	बुद्धस्स	बुद्धानं
सत्तमी	बुद्धे, बुद्धम्हि, बुद्धस्मिं	बुद्धेसु
आलपन	बुद्ध, बुद्धा	बुद्धा

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग- फल

विभक्ति	**एकवचन**	**अनेकवचन**
पठमा	फलं	फला, फलानि
दुतिया	फलं	फले, फलानि
ततिया	फलेन	फलेहि, फलेभि
चतुत्थी	फला, फलस्स,	फलानं
पञ्चमी	फला, फलम्हा, फलस्मा,	फलेहि, फलेभि
छट्ठी	फलस्स	फलानं
सत्तमी	फले, फलम्हि, फलस्मिं,	फलेसु
आलपन	फल, फला	फलानि

इकारान्त पुल्लिङ्ग- मुनि

विभक्ति	**एकवचन**	**अनेकवचन**
पठमा	मुनि	मुनी, मुनयो

दुतिया	मुनिं	मुनी, मुनयो
ततिया	मुनिना	मुनीहि, मुनीभि
चतुत्थी	मुनिनो, मुनिस्स	मुनीनं
पञ्चमी	मुनिना, मुनिम्हा, मुनिस्मा	मुनीहि, मुनीभि
छट्ठी	मुनिनो, मुनिस्स	मुनीनं
सत्तमी	मुनिम्हि, मुनिस्मिं	मुनिसु, मुनीसु
आलपन	मुनि, मुनी	मुनी, मुनयो

एत (यह) पुल्लिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**अनेकवचन**
पठमा	एसो	एते
दुतिया	एतं, एनं	एते, एने
ततिया	एतेन	एतेहि, एतेभि
चतुत्थी	एतस्स	एतेसं, एतेसानं
पञ्चमी	एतम्हा, एतस्मा	एतेहि, एतेभि
छट्ठी	एतस्स	एतेसं, एतेसानं
सत्तमी	एतम्हि, एतस्मिं	एतेसु

एत (=यह) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**अनेकवचन**
पठमा	एतं	एते, एतानि
दुतिया	एतं	एते, एतानि
ततिया	एतेन	एतेहि, एतेभि
चतुत्थी	एतस्स	एतेसं, एतेसानं
पञ्चमी	एतम्हा, एतस्मा	एतेहि, एतेभि
छट्ठी	एतस्स	एतेसं, एतेसानं
सत्तमी	एतम्हि, एतस्मिं	एतेसु

एत (=यह) स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	**एकवचन**	**अनेकवचन**
पठमा	एसा	एता, एतायो
दुतिया	एसं	एता, एतायो
ततिया	एताय	एताहि, एताभि

चतुत्थी	एतिस्साय, एतिस्सा, एताय	एतासं, एतासानं
पञ्चमी	एताय	एताहि, एताभि
छट्ठी	एतिस्साय, एतिस्सा, एताय	एतासं, एतासानं
सत्तमी	एतिस्सं, एतस्सं, एतासं	एतासु

अम्ह (मैं)

विभक्ति	**एकवचन**	**अनेकवचन**
पठमा	अहं	मयं, अस्मा, अम्हे, नो
दुतिया	मं, ममं	अम्हं, अम्हाकं, अम्हे, नो
ततिया	मया, मे	अम्हेहि, अम्हेभि, नो
चतुत्थी	मम, मय्हं, अम्हं, ममं, मे	अस्माकं, अम्हाकं, अम्हं, अम्हे, नो
पञ्चमी	मया	अम्हेहि, अम्हेभि
छट्ठी	मम, मय्हं, अम्हं, ममं, मे	अस्माकं, अम्हाकं, अम्हं, अम्हे, नो
सत्तमी	मयि	अस्मासु, अम्हेसु

तुम्ह (तुम)

विभक्ति	**एकवचन**	**अनेकवचन**
पठमा	त्वं, तुवं	तुम्हे, वो
दुतिया	तं, तवं, तुवं त्वं	तुम्हं, तुम्हाकं, तुम्हे, वो
ततिया	त्वया, तया, ते	तुम्हेहि, तुम्हेभि, वो
चतुत्थी	तव, तुय्हं, तुम्हं, ते	तुम्हाकं, तुम्हे, वो
पञ्चमी	त्वया, तया, त्वम्हा	तुम्हेहि, तुम्हेभि
छट्ठी	तव, तुय्हं, तुम्हं, ते	तुम्हाकं, तुम्हे, वो
सत्तमी	त्वयि, तयि	तुम्हेसु

उकारान्त पुल्लिङ्ग 'पितु' (=पिता) शब्द के रूप

	एकवचन	**अनेकवचन**
पठमा	पिता	पितरो
दुतिया	पितरं	पितरे, पितरो
ततिया	पितरा	पितरेहि, पितरेभि, पितूहि, पितूभि
चतुत्थी	पितु, पितुनो, पितुस्स	पितरानं, पितानं, पितूनं

पञ्चमी	पितरा	पितरेहि, पितरेभि, पितूहि, पितूभि
छट्ठी	पितु, पितुनो, पितुस्स	पितरानं, पितानं, पितूनं
सत्तमी	पितरि	पितरेसु, पितूसू
आलपन	पिता	पितरो

उकारान्त स्त्रीलिंग 'मातु' (माता) शब्द

	एकवचन	**अनेकवचन**
पठमा	माता	मातरो
दुतिया	मातरं	मातरे, मातरो
ततिया	मातुया, मातरा	मातरेहि, मातरेभि, मातूहि, मातूभि
चतुत्थी	मातुया, मातु	मातरानं, मातानं, मातूनं
पञ्चमी	मातुया, मातरा	मातरेहि, मातरेभि, मातूहि, मातूभि
छट्ठी	मातुया, मातु	मातरानं, मातानं, मातूनं,
सत्तमी	मामातुया, तरि	मातरेसु, मातुसु

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'लता' शब्द के रूप

विभत्ति	**एकवचन**	**अनेकवचन**
पठमा	लता	लता, लतायो
दुतिया	लतं	लता, लतायो
ततिया	लतया	लताहि, लताभि
चतुत्थी	लताय	लतानं
पञ्चमी	लताय	लताहि, लताभि
छट्ठी	लताय	लतानं
सत्तमी	लताय, लतायं	लतासु
आलपन	लते	लता, लतायो

निम्नलिखित आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी 'लता' शब्द की भाँति चलेंगे–

गाथा (=श्लोक), तण्हा (=तृष्णा), चन्दिमा (=चन्द्रमा), विज्जा (=विद्या), पञ्ञा (=प्रज्ञा), पटिपदा (=मार्ग), मेत्ता (=मैत्री), सद्धा (=श्रद्धा), परिसा (=परिषद्), जटा (=जटा), नावा (=नौका), छाया (=छाया), साखा (=शाखा), साला (=शाला), सुरा (=शराब), दिसा (=दिशा), कञ्ञा (=कन्या), गीवा (=गला), अम्मा (=माता), भरिया (=भार्या, पत्नी), आदि।

आलपन	मात, माता	मातरो

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'धेनु' (गाया) शब्द के रूप

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	धेनु	धेनू, धेनुयो
दुतिया	धेनुं	धेनू, धेनुयो
ततिया	धेनुया	धेनूहि, धेनूभि
चतुत्थी	धेनुया	धेनूनं
पंचमी	धेनुया	धेनूहि, धेनूभि
छट्ठी	धेनुया	धेनूनं
सप्तमी	धेनुयं, धेनुया	धेनूसु
आलपन	धेनु	धेनू, धेनुयो

'त' (वह) पुंल्लिङ्ग शब्द

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सो, स्यो	ते, ने
दुतिया	तं, नं	ते, ने
ततिया	तेन, नेन	तेहि, नेहि, तेभि, नेभि
चतुत्थी	तस्स, नस्स, अस्स	तेसं, नेसं, तेसानं, नेसानं
पञ्चमी	तम्हा, अम्हा, नम्हा, तस्मा	तेहि, नेहि, तेभि, नेभि
छट्ठी	तस्स, नस्स, अस्स	तेसं, नेसं, तेसानं, नेसानं
सत्तमी	तम्हि, अम्हि, नम्हि, तस्मिं, नस्मिं, अस्मिं	तेसु, नेसु

'त' (वह) शब्द नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	तं, नं	ते, ने, तानि, नानि
दुतिया	तं, नं	ते, ने, तानि, नानि

अवशिष्ट रूप पुल्लिङ्ग 'त' की भाँति ही बनेंगे।

'त' (वह) स्त्रीलिङ्ग शब्द

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सा, स्या	ता, ना, तायो, नायो
दुतिया	तं, नं	ता, ना, तायो, नायो
ततिया	ताय, नाय, तस्सा, तिस्सा	ताहि, नाहि, ताभि, नाभि

चतुत्थी	तिस्साय, तस्साय, अस्साय, तिस्सा, तस्मा, ताय	तासं, आसं, तासानं
पञ्चमी	ताय, नाय, तस्सा	ताहि, नाहि, ताभि, नाभि
छट्ठी	तिस्साय, तस्साय, अस्साय तिरसा, तस्सा, ताय	तासं, आसं, तासानं
सत्तमी	तिस्सं, तस्सं, अस्सं, तायं तस्सा, तिस्सा	तासु

'इम' (यह) पुल्लिङ्ग शब्द

	एकवचन	**अनेकवचन**
पठमा	अयं	इमे
दुतिया	इमं	इमे
ततिया	अनेन, इमिना	एहि, एभि, इमेहि, इमेभि
चतुत्थी	अस्स, इमस्स	एसं, एसानं, इमेसं, इमेसानं
पञ्चमी	अस्मा, इमस्मा, इमम्हा	एहि, एभि, इमेहि, इमेभि
छट्ठी	अस्स, इमस्स	एसं, एसानं, इमेसं, इमेसानं
सत्तमी	अस्मिं, इमम्हि, इमस्मिं	एसु, इमेसु

'इम' (यह) नपुंसकलिङ्ग शब्द

	एकवचन	**अनेकवचन**
पठमा	इदं, इमं	इमे, इमानि
दुतिया	इदं, इमं	इमे, इमानि

अवशिष्ट रूप पुलिङ्ग 'इम' की भाँति ही बनेंगे।

'इम' (यह) स्त्रीलिङ्ग शब्द

	एकवचन	**अनेकवचन**
पठमा	अयं	इमा, इमायो
दुतिया	इमं	इमा, इमायो
ततिया	इमाय	इमाहि, इमाभि
चतुत्थी	अस्याय, अस्मा, इमिस्साय, इमिस्सा, इमाय	इमासं, इमासानं
पञ्चमी	इमाय	इमाहि, इमाभि
छट्ठी	अस्याय, अस्सा, इमिस्साय, इमिस्सा, इमाय	इमासं, इमासानं
सत्तमी	अस्सं, इमिस्सं, इमायं	इमासु

'किं' (कौन) पुल्लिङ्ग शब्द

	एकवचन	**अनेकवचन**
पठमा	को	के
दुतिया	कं	के
ततिया	केन	केहि, केभि
चतुत्थी	कस्स, किस्स	केसं, केसानं
पञ्चमी	कम्हा, कस्मा, किस्मा	केहि, केभि
छट्ठी	कस्स, किस्स	केसं, केसानं
सत्तमी	कम्हि, किम्हि, कस्मिं, किस्मिं	केसु

'किं' (कौन) नपुंसकलिङ्ग शब्द

	एकवचन	**अनेकवचन**
पठमा	किं, कं	के, कानि
दुतिया	किं, कं	के, कानि

अवशिष्ट रूप पुल्लिङ्ग 'किं' शब्द की भाँति ही बनेंगे।

'किं' (कौन) स्त्रीलिङ्ग शब्द

	एकवचन	**अनेकवचन**
पठमा	का	का, कायो
दुतिया	कं	का, कायो
ततिया	काय	काहि, काभि
चतुत्थी	कस्सा, काय	कासं, कासानं
पञ्चमी	काय	काहि, काभि
छट्ठी	कस्सा, काय	कासं, कासानं
सत्तमी	कस्सं, कायं	कासु

'य' (जो) शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में 'किं' (कौन) के समान ही होंगे।

बोध प्रश्न

17. अम्ह शब्द के छट्टी विभक्ति में रूप लिखें।
18. बुद्ध शब्द के ततिया ओर पञ्चमी विभक्तियों के रूप दोनों वचनों में लिखिए।
19. मुनि शब्द के चतुत्थी और छट्ठी विभक्तियों के रूप दोनों वचनों में लिखिए।

3.9 धातुरूप

क्रिया के अर्थ को प्रकट करने वाले शब्द को धातु (क्रियत्थ) कहते हैं। यह धातु वाक्य में प्रयुक्त होने से पूर्व कुछ प्रत्ययों से समन्वित होती है। यह समन्वित रूप ही ध ातुरूप कहलाता है। धातुरूप तीन संबंधों को व्यक्त करता है : काल, पुरुष और वचन। उदाहरणार्थ, 'पठति' धातुरूप पठ् धातु और ति प्रत्यय के संयाग से बना है। पठ का अर्थ पढ़ना है और ति का संयोग तीन बातें व्यक्त करता है- वर्तमान काल, प्रथम पुरुष और एकवचन। भाषाविज्ञान में धातु को अर्थतत्त्व और प्रत्यय को सम्बन्धतत्त्व कहा जाता है।

3.9.1 गण

रूप बनाने की सुविधा के लिए प्राचीन आर्यभाषाओं मे सभी धातुओं को कुछ वर्गों में विभाजित कर लिया गया है जो गण कहलाते हैं। संस्कृत में दस गण मान गये हैं जबकि पालि में नौ। इस गणों का नामकरण गण में परिगणित धातुओं में से प्रथम धातु के आधार पर किया गया है। ये गण इस प्रकार हैं–

1. भ्वादि गण
2. रुधादि गण
3. दिवादि गण
4. तुदादि गण
5. ज्यादि गण
6. क्यादि गण
7. स्वादि गण
8. तनादि गण
9. चुरादि गण

संस्कृत में एक अन्य 'अदादिग्ण' होता है जो पालि में नहीं माना गया। पालि में अन्य गणे की धातुओं का झुकाव भ्वादि गण की ओर रहता है ज्यादि एवं तुदादि का तो भ्वादिगण में अन्तर्भाव ही हो जाता है।

3.9.2 लकार

विभिन्न कालों का ज्ञान कराने के लिए पृथक्-पृथक् प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है। एक काल से सम्बद्ध इन प्रत्ययों की अभिव्यक्ति के लिए 'लकार' शब्द का प्रयोग किया जाता है। संस्कृत-काल में दस लकार माने जाते थे लेकिन लेट लकार को संस्कृत ने भी ग्रहण नहीं किया। उसका प्रयोग केवल वेद में ही देखा जाता है। पालि ने लुट् को भी ग्रहण नहीं किया। इस प्रकार पालि में लकारों की संख्या केवल आठ रह गयी है जो इस प्रकार है :

1. लट् लकार (वर्तमान काल)
2. लिट् लकार (परोक्षभूत)
3. लृट् लकार (भविष्यकाल)
4. लोट् लकार (आज्ञावाचक)

5. लङ् लकार (अद्यतनभूत)
6. विधि लिङ् लकार
7. लुङ् लकार (अनद्यतनभूत)
8. लृङ् लकार (कालातिपत्ति)

3.9.3 पद

संस्कृत में धातुरूपों को दो भागों में विभाजित किया गया है : आत्मनेपद और परस्मैपद। वहां कर्तृगामी क्रियाफल में आत्मनेपद तथा परगामी क्रियाफल में परस्मैपद का प्रयोग होता है। उक्त विभाजन तो पालि में भी मिलता है, लेकिन प्रयोगविषयक विधान का अभाव है। पालि में आत्मनेपदी धातुएँ परस्मैपदी हो गयी हैं।

अब गण के अनुसार प्रमुख धातुओं के रूप प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(क) 'भू' (=होना) धातु (भ्वादि गण)

वत्तमान काल

पुरिस	**एकवचन**	**अनेकवचन**
पठम पुरिस	भवति	भवन्ति
मज्झिम पुरिस	भवसि	भवथ
उत्तम पुरिस	भवामि	भवाम

भविस्सत काल

पठम पुरिस	भविस्सति	भविस्सन्ति
मज्झिम पुरिस	भविस्ससि	भविस्सथ
उत्तम पुरिस	भविस्सामि	भविस्साम

परिसमत्तत्थक (अज्जतन) भूत

पठम पुरिस	अभवी, भवी, अभवि, भवि	अभवुं, भवुं, अभविंसु, भविंसु अभवंसु, भवंसु
मज्झिम पुरिस	अभवो, भवो, अभवि, भवि अभव, भव, अभवित्थ, भवित्थ असवित्थो, भवित्थो	अभवित्थ, भवित्थ अभवुत्थ, भवुत्थ
उत्तम पुरिस	अभविं, भविं	अभविम्हा, भविम्हा,, अभविम्ह, भविम्ह अभवुम्हा, भवुम्हा

परोक्ख भूत

पठम पुरिस	बभूव	बभूवु

मज्झिम पुरिस	बभूवे	बभूवित्थ
उत्तम पुरिस	बभूव	वभूविम्ह

क्रियातिपत्ति (हेतुहेतुमद्‌भूत)

पठम पुरिस	अभविस्सा, भविस्सा	अभविस्संसु, भविस्संसु
मज्झिम पुरिस	अभविस्से, भविस्से	अभविस्सथ,
उत्तम पुरिस	अभविस्सं, भविस्सं	अभविस्सम्हा, भविस्सम्हा

अनुज्ञा (पंचमी विभक्ति)

पठम पुरिस	भवतु	भवन्तु
मज्झिम पुरिस	भव, भवाहि	भवथ
उत्तम पुरिस	भवामि	भवाम

विधि (हेतुफल या सत्तमी विभत्ति)

पठम पुरिस	भवे, भवेय्य	भवेय्युं, भवुं
मज्झिम पुरिस	भवे, भवेय्यासि	भवेय्याथ
उत्तम पुरिस	भवे, भवेय्यामि	भवेमु, भवेय्याम, भवेय्यामु

हीयत्तन (अनज्जतन) काल

पठम पुरिस	भवा, अभवा, अभव	अभवु, अभवू
मज्झिम पुरिस	अभवो	अभवित्थ, अभवुत्थ
उत्तम पुरिस	अभव	अभवुम्हा, अभविम्हा, अभविम्ह

(ख) गम (जाना) धातु, लट् लकार

पठम पुरिस	गच्छति	गच्छन्ति
मज्झिम पुरिस	गच्छसि	गच्छथ
उत्तम पुरिस	गच्छामि	गच्छाम

लृट् लकार

पठम पुरिस	गमिस्सति	गमिस्सन्ति
मज्झिम पुरिस	गमिस्ससि	गमिस्सथ
उत्तम पुरिस	गमिस्सामि	गमिस्साम

लोट् लकार

पठम पुरिस	गच्छतु	गच्छन्तु

मज्झिम पुरिस	गच्छेय्यसि	गच्छेय्याथ
उत्तम पुरिस	गच्छामि	गच्छाम

विधिलिङ्

पठम पुरिस	गच्छेय्य	गच्छेय्युं
मज्झिम पुरिस	गच्छेय्यासि	गच्छेय्याथ
उत्तम पुरिस	गच्छेय्यामि	गच्छेय्याम

लृङ् लकार

पठम पुरिस	अगमी, गमी, अगमि, गमि	अगमुं, गमुं, अगमिंसु, गमिंसु
मज्झिम पुरिस	अगमो, गमो, अगमित्थो, गमित्थो	अगमित्थ, गमित्थ
उत्तम पुरिस	अगमिं, गमिं	अगमिम्हा, गमिम्हा अगमुम्हा, गमुम्हा

(ग) दा (देना) धातु लट् लकार

पठम पुरिस	ददाति, देति	ददन्ति, देन्ति
मज्झिम पुरिस	ददासि, देसि	ददाथ, देथ
उत्तम पुरिस	ददामि, देमि, दम्मि	ददाम, देम, देम्म

लृट् लकार

पठम पुरिस	ददिस्साति, देस्सति	ददिस्सन्ति, देस्सन्ति
मज्झिम पुरिस	ददिस्ससि, दस्ससि	ददिस्सथ, दस्सथ
उत्तम पुरिस	ददिस्सामि, दस्सामि	ददिस्साम, दस्साम

लोट् लकार

पठम पुरिस	ददातु, देतु	ददन्तु, देन्त
मज्झिम पुरिस	दद, ददहि, दे, देहि	ददाथ, देथ
उत्तम पुरिस	ददामि, देमि	ददाम, देम

विधिलिङ्

पठम पुरिस	ददे, ददेय्य, दज्जु	ददेय्युं, दज्जुं
मज्झिम पुरिस	ददेय्यासि	ददेय्याथ
उत्तम पुरिस	ददेय्यामि, दज्जं	ददेय्याम

लृङ् लकार

पठम पुरिस	अददी, ददी, अददि, ददि अदिंसु	अददुं, ददुं, अददिसु,
मज्झिम पुरिस	अददो, ददो, अददित्थो, दित्थो	अददित्थ, ददित्थ, अदसित्थ, दासित्थ
उत्तम पुरिस	अददिं, ददिं, अदासिं दासिं	अदसिम्हा ददिम्हा, अदासुम्हा, दासुम्हा

भ्यादिगण के धातु

अच्च (पूजना), अज्ज (कमाना), अट (घूमना), अद (खाना), अस (होना), इक्ख (देखना), एस (खोजना), कंख (चाहना), कड्ढ़ (काढना), कन्द (रोना), कम्प (कांपना), कील (खेलना), गम (जाना), चज (छोड़ना), जर (पुराना होना), जल (जलना), जि (जीतना), जीव (जीना), ठा (ठहरना), तर (पार करना), दह (जलाना), दंस (डसना), दा (देना), दिस (देखना), पा (पीना), वद (बोलना), भू (होना), हस (हंसना), रक्ख (रक्षा करना), पच (पकाना), नम (नमस्कार), सर (स्मरण करना), याच (माँगना), सुच (सोचना), जुत (प्रकाश करना), मद (प्रसन्न होना), सुभ (शोभित होना), रुच (पसन्द करना) आदि। मोग्गलान धातु पाठ के अनुसार इस गण में 304 धातुएँ हैं।

बोधप्रश्न

20. 'भू' धातु वत्तमान काल मज्झिम पुरिस के दोनों वचनों के रूप लिखिए।

21. 'गम' धातु भविस्सत काल पठम पुरिस के दोनों वचनों के रूप लिखिए।

22. 'दा' धातु वत्तमान काल के उत्तम पुरिस के रूप दोनों वचनों में लिखिए।

3.10 संख्यावाचक शब्द

संख्यावाचक शब्द प्राय: विशेषण की भाँति प्रयुक्त होते हैं। संख्यावाचक शब्दों में वही लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन होते हैं, जो उनके विशेष्य में होते हैं।

पालि में संख्याओं के नाम इस प्रकार होते हैं–

१. एक	२. द्वि
३. ति	४. चतु
५. पञ्च	६. छ
७. सत्त	८. अट्ठ
९. नव	१०. दस
११. एकादस	१२. द्वादस, बारस
१३. तेलस, तेरस	१४. चुद्दस, चतुद्दस
१५. पण्णरस, पञ्चदस	१६. सोळस, सोरस
१७. सत्तरस, सत्तदस	१८. अट्ठारस, अट्ठादस

१९.	एकूनवीसति	२०.	वीसति
२१.	एकवीसति	२२.	द्वेवीसति, द्वावीसति, बाबीसति
२३.	तेवीसति	२४.	चतुवीसति
२५.	पञ्चवीसति	२६.	छब्बीसति
२७.	सत्तवीसति	२८.	अट्ठवीसति
२९.	एकूनतिंसति	३०.	तिंसति
३१.	एकतिंसति	३२.	द्वत्तिंसति, बत्तिंसति
३३.	तेत्तिंसति	३४.	चतुत्तिंसति
३५.	पञ्चतिंसति	३६.	छत्तिंसति
३७.	सत्ततिंसति	३८.	अट्ठतिंसति
३९.	एकूनचत्तालीसति	४०.	चत्तालीसति
४१.	एकचत्तालीसति	४२.	द्वेचत्तालीसति, द्विचत्तालीसति
४३.	तेचत्तलीसति	४४.	चत्तुचत्तालीसति
४५.	पञ्चयत्तालीसति	४६.	छचत्तालीसति
४७.	सत्तचत्तालीसति	४८.	अट्ठ चत्तालीसति
४९.	एकूनपञ्ञासति	५०.	पञ्ञासति, पण्णासति
५१.	एकपञ्ञासति	५२.	द्वेपञ्ञासति, द्वेपण्णासति, द्विपञ्ञासति, द्विपण्णासति
५३.	तिपञ्चासति	५४.	चतपञ्चासित
५५.	पञ्चपञ्चासति	५६.	छपञ्चासति
५७.	सत्तपञ्चासति	५८.	अटु पञ्चासति
५९.	एकूनसट्ठि	६०.	सट्ठि
६१.	एकसट्ठि	६२.	द्वेसट्ठि, दासट्ठि, द्विसट्ठि
६३.	तिसट्ठि	६४.	चतुसट्ठि
६५.	पञ्ञसट्ठि	६६.	छसट्ठि
६७.	सत्तसट्ठि	६८.	अट्ठसट्ठि
६९.	एकूनसत्तति	७०.	सत्तति
७१.	एकसत्तिति	७२.	द्वेसत्तति, द्विसत्तति, द्वासत्तति
७३.	तिसत्तति	७४.	चतुसत्तति
७५.	पञ्ञसत्तति	७६.	छसत्तति

७७.	सत्तसत्तति	७८.	अट्ठसत्तति
७९.	एकूनासीति	८०.	असीति
८१.	एकासीति	८२.	द्वेअसीति, द्वियासीति, द्वासीति
८३.	तिअसीति	८४.	चतुअसीति
८५.	पञ्चासीति	८६.	छअसीति
८७.	सत्तासीति	८८.	अट्ठासीति
८९.	एकूननवुति	९०.	नवुति
९१.	एकनवुति	९२.	द्वेनवुति, द्विनवुति, द्वानवुति
९३.	तिनुवति	९४.	चतुनवुति
९५.	पञ्चनवुति	९६.	छन्नवुति
९७.	सत्तनुवति	९८.	अट्ठनवुति
९९.	एकूनसतं	१००.	सतं

संख्यावाचक शब्द प्रायः विशेषण की भाँति प्रयुक्त होते हैं, इसलिए उनमें वही लिंग, विभक्ति तथा वचन होते हैं, जो उनके विशेष्य में।

संख्या के अर्थ में 'एक' शब्द एकवचन ही होता है, किन्तु 'एक' शब्द की गणना सर्वनाम में होती है। यह संख्या, अतुल्य, असहाय तथा अन्य–इन अर्थों में प्रयुक्त होता है।

'एक' शब्द (पुल्लिङ्ग)

	एकवचन
पठमा	एको
दुतिया	एकं
ततिया	एकेन
चतुत्थी	एकस्स
पञ्चमी	एकम्हा, एकस्मा
छट्ठी	एकस्स
सत्तमी	एकम्हि, एकस्मिं

(नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन
पठमा	एकं
दुतिया	एकं

शेष रूप पुल्लिंग के समान होंगे।

(स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन
पठमा	एका
दुतिया	एकं
ततिया	एकाय
चतुत्थी	एकस्सा, एकाय
पञ्चमी	एकाय
छट्ठी	एकस्सा, एकाय
सत्तमी	एकस्सं, एकायं

द्वि

'द्वि' बहुवचन होता है और इसके रूप तीनों लिगों में समान होते हैं।

	बहुवचन
पठमा	दुवे, द्वे
दुतिया	दुवे, द्वे
ततिया	द्वीहि, द्वीभि
चतुत्थी	द्विन्नं, दुविन्नं
पञ्चमी	द्वीहि, द्वीभि
छट्ठी	द्विन्नं, दुविन्नं
सत्तमी	द्वीसु

उभ

'उभ' (दोनों) शब्द भी बहुवचन होता है और इसके रूप तीनों लिंगों में समान होते हैं।

	बहुवचन
पठमा	उभो
दुतिया	उभो
ततिया	उभोहि, उभोभि, उभेहि, उभेभि
चतुत्थी	उभिन्नं
पञ्चमी	उभोहि, उभोभि, उभेहि, उभेभि
छट्ठी	उभिन्नं
सत्तमी	उभोसु, उभेसु

ति

'ति' (= तीन) शब्द भी बहुवचन होता है, किन्तु इसके रूप तीनों लिंगों में भिन्न होते हैं।

	पुल्लिङ	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
पठमा	तयो	तीणि	तिस्सो
दुतिया	तयो	तीणि	तिस्सो
ततिया	तीहि, तीभि	शेष रूप	तीहि तीभि
चतुत्थी	तिणं, तिण्णन्नं	पुल्लिंग के	तिस्सन्नं
पञ्चमी	तीहि, तीभि	समान ही	तीहि, तीभि
छट्ठी	तिणं, तिण्णन्नं	होंगे	तिस्सन्नं
सत्तमी	तीसु		तीसु

चतु

'चतु' (चार) शब्द भी बहुवचन होता है। इसके भी रूप तीनों लिंगों में भिन्न होते हैं।

	पुल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
पठमा	चत्तारो, चतुरो	चत्तारि	चतस्सो
दुतिया	चत्तारो, चतुरो	चत्तारि	चतुस्सो
ततिया	चतूहि, चतूभि	शेष रूप	चतूहि, चतूभि
चतुत्थी	चतुन्नं	पुल्लिंग के	चतस्सन्नं
पञ्चमी	चतूहि, चतूभि	समान ही	चतूहि, चतूभि
छट्ठी	चतुन्नं	होंगे	चतस्सन्नं
सत्तमी	चतुसु		चतुसु

पञ्च

'पञ्च' से **'अट्ठारस'** तक के शब्द बहुवचन ही होते हैं और इनके रूप भी तीनों लिंगों में समान होते हैं।

	बहुवचन
पठमा	पञ्च
दुतिया	पञ्च
ततिया	पञ्चहि, पञ्चभि
चतुत्थी	पञ्चन्नं
पञ्चमी	पञ्चहि, पञ्चभि
छट्ठी	पञ्चन्नं
सत्तमी	पञ्चसु

अट्ठारस तक के सभी शब्दों के रूप इसी प्रकार होंगे।

एकूनवीसति

'एकूनवीसति' (उन्नीस) से लेकर 'अट्ठनवुति' (अट्ठानबे) तक सभी शब्द स्त्रीलिंग, एक वचन होते हैं।

	एकवचन
पठमा	एकूनवीसति
दुतिया	एकूनवीसतिं
ततिया	एकूनवीसतिया
चतुत्थी	एकूनवीसतिया
पञ्चमी	एकूनवीसतिया
छट्ठी	एकूनवीसतिया
सत्तमी	एकूनवीसतियं

एकूनवीसति से अट्ठनवुति तक आकारान्त शब्दों के रूप 'लता' शब्द के समान और इकारान्त शब्दों के रूप 'रत्ति' शब्द के समान होंगे।

एकूनसतं

'एकूनसतं' (=निन्नानवे) से लेकर सतसहस्सं (=लाख) तक, सभी शब्द नपुंसकलिङ्ग, एकवचन होते हैं।

	एकवचन
पठमा	एकूनसतं
दुतिया	एकूनसतं
ततिया	एकूनसतेन
चतुत्थी	एकूनसतस्स, एकूनसताय
पञ्चमी	एकूनसता, एकूनसतस्मा, एकूनसतम्हा
छट्ठी	एकूनसतस्स
सत्तमी	एकूनसते, एकूनसतम्हि, एकूनसतस्मिं

'सत' (सौ) से आगे की संख्याएँ इस प्रकार होती हैं:–

सतं	एक पर	२	शून्य
सहस्सं	"	३	"
नहुतं	"	४	"
सतसहस्सं	"	५	"
कोटि	"	७	"

पकोटि	”	१४	”
कोटिप्पकोटि	”	२१	”
नहुतं	”	२८	”
निन्नहुतं	”	३५	”
अक्खोहिणी	”	४२	”
बिन्दु	”	४९	”
अब्बुदं	”	५६	”
निरब्बुदं	”	६३	”
अहहं	”	७०	”
अबबं	”	७७	”
अटटं	”	८४	”
सोगन्धिकं	”	९१	”
उप्पलं	”	९८	”
कुमुदं	”	१०५	”
पुण्डरीकं	”	११२	”
पदुमं	”	११९	”
कथानं	”	१२६	”
महाकथानं	”	१३३	”
असंखेय्यं	”	१४०	”’

इनमें से कोटि, पकोट, कोटिप्पकोटि, अक्खोहिणी–शब्द स्त्रीलिंग, एकवचन होते हैं।

कति

‘कति’ (कितना) शब्द बहुवचन होता है और इसके रूप तीनों लिंगों में समान होते हैं।

	बहुवचन
पठमा	कति
दुतिया	कति
ततिया	कतीहि, कतीभि
चतुत्थी	कतीनं, कतिन्नं
पञ्चमी	कतीहि, कतीभि
छट्ठी	कतीनं, कतिन्नं
सत्तमी	कतीसु

पूरणार्थक शब्द

	पुल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
१	पठमो	पठमं	पठमा
२	दुतियो	दुतियं	दुतिया
३	ततियो	ततियं	ततिया
४	चतुत्थो	चतुत्थं	चतुत्थी, चतुत्था
५	पञ्चमो	पञ्चमं	पञ्चमी
६	छट्ठो	छट्ठं	छट्ठा, छट्ठी
७	सत्तमो	सत्तमं	सत्तमा, सत्तमी
८	अट्ठमो	अट्ठमं	अट्ठमा, अट्ठमी
९	नवमो	नवमं	नवमा, नवमी
१०	दसमो	दसमं	दसमा, दसमी
११	एकादसो, एकादसमो	एकादसमं	एकादसी
१२	बारसो, बारसमो, बारसमं, द्वादसमं, द्वादसमो		द्वादसी
१३	तेरसो, तेरसमो	तेरसमं	तेरसी
१४	चतुद्दसमो,	चतुद्दसमं	चतुद्दसी, चातुद्दसी
१५	पञ्चदसमो, पण्णरसमो	पञ्चदसी, पण्णरसमं	पण्णरसी, पञ्चदसमं,
१६	सोळसमो	सोळसमं	सोळसी
१७	सत्तरसमो सत्तदसमो	सत्तरसमं सत्तदसमं	सत्तरसी, सत्तदसी
१८	अट्ठारसमो, अट्ठादसमो	अट्ठारसमं अट्ठादसमं	अट्ठारसी अट्ठादसी
१९	एकूनवीसतिमो	एकूनवीसतिमं	एकूनवीसतिमा, एकूनवीसतिमी

इसके आगे संख्यावाचक शब्दों के साथ 'म' लगाकर पूरणार्थक शब्द बना लेते हैं, जैसे–एकवीसतिमो, तिंसतिमो।

विशेष शब्द

अड्ढुड्ढो (अड्ढेन चतुत्थो) = साढ़े तीन।

अड्ढतियो (अड्ढेन ततियो) = अढ़ाई।

दियड्ढो, दिवड्ढो (अड्ढेन दुतियो) = डेढ़।

बोध प्रश्न

23. संख्यावाचक शब्द किसे कहते हैं ?

24. 'द्वि' शब्द किस वचन में प्रयोग होता है ?

25. 'सतं' (=सौ) शब्द किस लिङ्ग और किस वचन में होता है ?

3.11 असंख्य (अव्यय)

जो शब्द तीनों लिंगों, दोनों वचनों, तीनों पुरुषों एवं सभी कालों में एक जैसे बने रहते हैं, वे अव्यय कहलाते हैं। पालि में इसे 'असंख्य' नाम से भी जाना जाता है। कुछ प्रचलित अव्यय निम्नलिखित हैं–

पालि	हिन्दी	पालि	हिन्दी
अज्ज	आज	कुदाचनं	कभी
अत्थ	यहाँ	क्व	कहाँ
अन्तो	बीच में	चिरं	दीर्घकाल
अधुना	इस समय	चिरेण	विलम्ब से
अलं	बस	जातु	कभी
आम	हाँ	ततो	उस कारण
इध	यहाँ	तत्थ	वहाँ
इत्थं	ऐसा	तथरिव	वैसे ही
इह	यहाँ	तथा	वैसे
उपरि	ऊपर	तदा	तब
अधो	नीचे	तदानि	तब
एव	ही	तहिं	वहाँ
एवं	ऐसे	एत्थ	यहाँ
ताव	तब तक	कत्थ	कहाँ
तुण्ही	चुप	कथं	कैसे
न	नहीं	कदा	कब
नमो	नमस्कार	कदाचि	शायद
नहि	नहीं	कहं	कहाँ
नाना	भिन्न	किं	क्यों
नो	नहीं	किञ्चि	कुछ
पातो	प्रात:काल	रिते	विना
पायो	प्राय:	पुनप्पुनं	बार–बार

सपदि	शीघ्र	पुरतो	सामने
सब्बतो	चारों ओर	मा	नहीं
समन्ततो	चारों ओर	मुहु	बार-बार
समन्ता	चारों ओर	यतो	जिस हेतु से
समं	साथ	यत्थ	जिस स्थान पर
सम्पति	इस समय	यत्र	जहाँ
सम्मा	अच्छी तरह	यथरिव	जैसे
सहं	साथ	यथा	जैसे
सहसा	अकस्मात	यहिं	जहाँ
स्वे/सुवे	आगामी कल	याव	जब तक
साधु	ठीक	सायं	सायंकाल
साहु	साधु	विना	विना
उच्चं	ऊँचा	विय	सदृश
च	और	सकिं	एक बार
यदि	यदि	सदा	हमेशा
चे	यदि	सद्धिं	साथ
सचे	यदि		

बोधप्रश्न

26. अव्यय को पालि में अन्य किस नाम से जाना जाता है ?

27. अव्यय किसे कहते हैं ?

28. निम्नलिखित अव्ययों के हिन्दी अर्थ लिखिए :-

    अज्ज, अत्थ, कदाचि, कुदाचनं, जातु, ततो, तदा, कदा, तुण्ही, नमो, नहिं।

29. निम्नलिखित शब्दों का पालि अव्यय लिखें :-

    यहाँ, हाँ, क्यों, तब तक, उस कारण, प्रातः, प्रायः, सामने, बार-बार, विना, चारों ओर, साथ।

30. निम्नलिखित अव्ययों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :- मा, च, चे।

3.12 सारांश

पालि व्याकरण में संस्कृत व्याकरण से कुछ सरलीकरण पाया जाता है। वैदिक संस्कृत में 64 वर्ण हैं, लौकिक संस्कृत में 50, लेकिन पालि भाषा में कुल 43 वर्ण ही हैं। सन्धियाँ 3 हैं। लेकिन विसर्ग सन्धि के स्थान पर यहाँ निग्गहीत सन्धि हो जाता है। समास के 6 भेद माने गये हैं। पालि में कभी-कभी स्वतंत्र प्रकृति वाले समास भी दिखते है। पालि

में कारक संस्कृत के समान ही हैं। यहाँ भी 7 विभक्तियाँ होती हैं। सम्बोधन को आलपन कहा जाता है और इसमें प्रायः प्रथमा विभक्ति का ही प्रयोग होता है। इसमें विभक्तियाँ संस्कृत से कुछ भिन्न रूप में प्रयुक्त होती हैं तथा अपाणिनीय प्रयोगों को भी स्वीकार किया गया है। पालि में धातुओं के नौ गण माने गये हैं। संस्कृत के अदादि गण को यहाँ नहीं स्वीकार किया गया है। इसमें अन्य गणों की धातुओं का झुकाव भ्वादि गण की ओर रहता है एवं ज्यादि और तुदादि का तो भ्वादि गण में अन्तर्भाव ही हो जाता है। पालि में आत्मनेपद धातुएँ परस्मैपद हो गयी हैं।

3.13 शब्दावली

1.	निग्गहीत	=	अनुस्वार।
2.	विभत्ति	=	विभक्ति।
3.	आलपन	=	सम्बोधन।
4.	पठमा	=	प्रथमा, पहली।
5.	दुतिया	=	द्वितीया, दूसरी।
6.	ततिया	=	तृतीया, तीसरी।
7.	चतुत्थी	=	चतुर्थी, चौथी।
8.	छट्ठी	=	षष्ठी, छट्ठी।
9.	सत्तमी	=	सप्तमी, सातवीं।
10.	अनेकवचन	=	बहुवचन।
11.	सामी	=	स्वामी।
12.	वत्तमान	=	वर्तमान।
13.	भविस्सत	=	भविष्यत्।
14.	परोक्ख	=	परोक्ष, आँख से ओझल।
15.	हीयतन	=	ह्यस्तन, बीता हुआ कल।
16.	अन्तो	=	बीच में।
17.	अधुना	=	इस समय।
18.	अलं	=	बस।
19.	आम	=	हाँ।
20.	इत्थं	=	ऐसा।
21.	उपरि	=	ऊपर।
22.	एत्थ	=	यहाँ।
23.	कत्थ	=	कहाँ।

24.	चिरेण	=	विलम्ब से।
25.	अग्गतो	=	सामने।
26.	बहिद्धा	=	बाहर।
27.	विय	=	सदृश।
28.	किञ्चि	=	कुछ।
29.	यथरिव	=	जैसे।
30.	सब्बतो	=	चारों ओर।
31.	समं	=	साथ।
32.	स्वे	=	आगामी कल।
33.	साधु	=	ठीक।
34.	चे	=	यदि।
35.	सचे	=	यदि।
36.	कित्तावता	=	कब तक।
37.	जातु	=	कभी।
38.	कामं	=	निश्चय से।
३९.	एकस्मा	=	एक से (अलग होना)।
४०.	सतं	=	सौ।
४१.	सोहस्सं	=	एक हजार।
४२.	नहुतं	=	दस हजार।
४३.	सिसुन्त	=	सुबन्त विभक्ति।
४४.	कालातिपत्ति	=	लृङ् लकार।
४५.	क्रियातिपत्ति	=	हेतुहेतुमद्भूत।
४६.	गण	=	समूह।
४७.	क्रियत्थ	=	धातु।
४८.	असंख्य	=	अव्यय।

3.14 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. कच्चान-व्याकरण- कच्चान, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

2. मोग्गल्लान-व्याकरण- मोग्गल्लान, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर।

3. पालि–महाव्याकरण– भिक्षु जगदीश कश्यप, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

3.15 सहायक-ग्रन्थ

1. पालि साहित्य का इतिहास– राहुल सांकृत्यायन, उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
2. पालि साहित्य का इतिहास– भरत सिंह उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
3. पालि–हिन्दी कोश– भदन्त आनन्द कौशल्यायन, सिद्धार्थ बुक्स, शाहदरा, दिल्ली।
4. बालावतार– धम्मकीत्ति, बौद्ध भारती, वाराणसी।
5. पालि व्याकरण– भिक्षु धर्मरक्षित, बौद्ध आकर ग्रन्थमाला, वाराणसी।

3.16 बोध प्रश्नोत्तर

1. कच्चायन–व्याकरण के लेखक ने पालि में 41 वर्ण ही स्वीकारा हैं।
2. पालि में विसर्ग के स्थान पर निग्गहीत होता है।
3. पालि में शब्द के 5 भेद होते हैं।
4. पालि भाषा में 43 वर्ण होते हैं।
5. पालि भाषा में दस स्वर होते हैं।
6. पालि भाषा में 33 व्यञ्जन–वर्ण होते हैं।
7. 'अं' अर्थात् अनुस्वार को निग्गहीत कहा जाता है।
8. दो शब्दों के मेल को सन्धि कहते हैं।
9. सन्धि के तीन भेद होते हैं– सर सन्धि व्यञ्जन सन्धि और निग्गहीत सन्धि।
10. निग्गहीत अनुस्वार को कहते हैं।
11. दो या दो से अधिक विभक्ति युक्त भिन्नार्थक पदों का एकार्थीभाव समास कहलाता है।
12. समास के छः भेद हैं।
13. जहाँ विशेषण और विशेष्य पदों का समास होता है उसे कर्मधारय समास कहते हैं।
14. जिस अर्थो का सम्बन्ध क्रिया से होता है उसे कारक कहते हैं।
15. कारक के सात भेद हैं।
16. पालि में सम्बोधन को आलपन कहा जाता है।

17. मम् मय्यं - अस्माकं अम्हाकं।

18. तृतीया एकवचनअनेकवचन

बुद्धेन बुद्धेहि, बुद्धेभि

पञ्चमी बुद्धा, बुद्धम्हा, बुद्धस्मा बुद्धेहि, बुद्धेभि

19. विभत्ति एकवचनअनेकवचन

चतुत्थी मुनिनो, मुनिस्स मुनीनं

छट्ठी मुनिस्स मुनीनं

20. भवसि भवथ

21. गमिस्सति गमिस्सन्ति

22. ददामि, देमि, देम्मि - ददाम, देम, देम्म

23. संख्याओं का ज्ञान कराने वाले शब्द को संख्यावाचक कहते हैं।

24. 'द्वि' शब्द सदा बहुवचन में प्रयोग होता है।

25. 'सतं' शब्द नपुंसकलिङ्ग एकवचन में होता है।

26. अव्यय को पालि में 'असंख्य' भी कहा जाता है।

27. जिन शब्दों के रूप लिंग, विभक्ति और वचन के कारण परिवर्तित नहीं होते, उन्हें अव्यय कहते हैं।

28. अव्यय के हिन्दी अर्थ-

अज्ज- आज, अत्थ-यहाँ, कदाचि- शायद, कुदाचनं-कभी, जातु-कभी, ततो-उस कारण, तदा-तब, कदा-कब, तुण्ही-चुप, नमो-नमस्कार, नहि-नहीं।

29. अव्यय शब्दों के पालि अर्थ-

यहाँ=अत्थ, हाँ=आम, क्यों= कथं, तब तक = ताव/तावता, उस कारण=ततो, प्रातः=पातो/पगे, प्रायः=पायो, सामने=अग्गतो, बार-बार= पुनप्पुन, विना=विना, चारों ओर=समन्ततो/ समन्ता/सब्बतो, साथ=सद्धिं।

30. निम्नलिखित अव्ययों का वाक्यों में प्रयोग-

'मा'- तुम्हे मा कुप्पथ= तुम लोग कोप मत करो।

'च'= समणो बुद्धं वन्दति सीलं च रक्खति -श्रमण बुद्ध की बन्दना करता है और शील की रक्षा करता है।

चे- बुद्धो भवेय्य चे, मारं जेस्सति- बुद्ध हो यदि, मार को जीतते हो।

3.17 अभ्यास प्रश्न

1. सवर्णों में कौन-सा वर्ण ह्रस्व है ?

....

....

2. पालि की विभक्तियाँ कौन-कौन सी हैं ?

....

....

....

....

....

3. पालि कारक के चिन्हों को लिखिए।

....

....

....

....

4. 'बुद्ध' शब्द के दुतिया और तृतीय विभत्ति अनेकवचन का क्या रूप होंगे?

....

....

....

5. 'फल' शब्द के पठमा विभक्ति के दोनों वचनों के क्या रूप बनेंगे?

....

....

....

6. 'मुनि' शब्द के ततिया और पंचमी एकवचन का रूप क्या होंगे?

....

....

....

7. 'अम्ह' शब्द के पठमा और षष्ठी विभक्ति के रूप दोनों वचनों में लिखिए।

....

....

....

8. 'भू' धातु, पठम पुरिस, बहुवचन का रूप क्या होगा ?

....

....

....

9. सन्धि के कितने भेद हैं? उदाहरण सहित विवेचन करें।

....

....

....

....

10. विभक्ति के आधार पर तत्पुरुष के कितने भेद है? उदाहरण सहित लिखें?

....

....

....

....

11. कारक के कितने भेद हैं? उदाहरण सहित विवेचन करें।

....

....

....

....

चतुर्थ पाठ (Unit-IV) चतुत्थो पाठो

पालि वाक्य रचना एवं अनुवाद

पाठ संरचना

4.1 प्रस्तावना

पूर्व पाठों में पालि-भाषा एवं व्याकरण का परिचय कराया जा चुका है। इस पाठ में उन पठित पालि शब्दरूपों, धातुरूपों, लिङ्ग, वचन कारक समास तथा सन्धि आदि के द्वारा वाक्य-रचना का ज्ञान कराया जाएगा।

4.2 उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन से आप-

- ➢ पालि शब्दों एवं धातुओं का वाक्यों में प्रयोग विधि द्वारा वाक्य रचना से परिचित हो पायेंगे।

- अनुवाद विधि द्वारा पालि से हिन्दी में अनुवाद तथा हिन्दी से पालि में अनुवाद कौशल विकसित करने में सक्षम होंगे।

4.3 पालि वाक्य रचना एवं अनुवाद

वाक्य रचना और अनुवाद के लिए विभक्ति, वचन, लिङ्ग, तथा काल का पूरा ध्यान रखना पड़ता है। कर्त्ता जिस वचन, पुरुष, लिङ्ग, तथा काल में होता है, क्रिया भी उसी के अनुसार होती है। वाक्य रचना में विशेष्य और विशेषण में भी यही स्थिति होती है। इस पाठ में आप इसी का अभ्यास करेंगे।

4.4 पठमो पयोग पाठो

(क)

अधोलिखित पालि शब्दों के लिंग, विभक्ति और वचन बताइये–

1.	उरगेन	2.	निलयं
3.	धम्मा	4.	पमादो
5.	सोतानं	6.	पठमानि
7.	बुद्धस्स	8.	सोपानस्मिं
9.	मुनिना	10.	मुनीभि
11.	भिक्खुस्स	12.	भिक्खुनो
13.	भिक्खूनं	14.	पुब्बस्मिं
15.	पुब्बम्हि	16.	पुब्बस्मा
17.	पुब्बम्हा	18	तुम्हे
19.	सब्बेहि	20.	मनेभि

(ख)

हिन्दी में अनुवाद कीजिये

1.	बुद्धानं धम्मो	2.	बुद्धस्स सावको
3.	खत्तियानं गामो	4.	बुद्धानं सावका
5.	संघाय दानं	6.	मुनयो बुद्धस्स सावका
7.	इसीनं झानं	8.	अट्ठीनं संघातो
9.	आयुनो खयो	10.	भिक्खुस्स दानं

(ग)

पालि में अनुवाद कीजिये

1.	बुद्धों का धर्म	2.	भिक्षुओं के लिये दान
3.	संघ के लिये दान	4.	ग्राम से ग्राम को

5.	विहार से विहार को	6.	बुद्धों के शासन ने
7.	भिक्षुओं का संघ	8.	आदमी का प्रसाद
9.	कुत्तों का झगड़ा	10.	जंगल में ध्यान
11.	भिक्षु का चीवर	11.	वृक्ष का पत्ता

बोध-प्रश्न

1. मुनिना शब्द के लिङ्ग, विभक्ति और वचन बताइये।
2. हिन्दी में अनुवाद कीजिए- बुद्धानं धम्मो
3. भिक्षुओं का संघ- पालि में अनुवाद कीजिए।

4.5 दुतियो पयोग पाठो

(क)

अधोलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिये–

1.	बुद्धो धम्मं पकासेति।	2.	बुद्धो भिक्खूनं धम्मं देसेति।
3.	मुनयो बुद्धं नमस्सन्ति।	4.	मनुस्सा फलानि खादन्ति।
5.	सावका सरणं गच्छन्ति।	6.	इत्थियो विहारं गच्छन्ति।
7.	भिक्खवो बुद्धं नमस्सन्ति।	8.	सद्धा उप्पज्जति।
9.	गंगायं नहायन्ति।	10.	कञ्ञाय सद्धं ठपेन्ति।
11.	पञ्ञाय विमुत्ति होति।	12.	भिक्खुनिया दानं देन्ति।

(ख)

पालि में अनुवाद कीजिये–

1.	बुद्धों का धर्म।	2.	भिक्षुओं का ध्यान।
3.	बुद्धों की शरण।	4.	भिक्षुओं का विहार
5.	बुद्ध के श्रावकों का ग्राम।	6.	भिक्षुओं के लिए दान।
7.	संघ के लिए दान।	8.	लोग बुद्ध को नमस्कार करते हैं।
9.	बुद्ध धर्म को प्रकाशित करते हैं।	10.	देवता बुद्ध को नमस्कार करते हैं।

(ग)

अधोलिखित पदों से पालि के छोटे-छोटे वाक्य बनाइये–

1.	बुद्धानं	2.	सद्धाय	3.	बुद्धि
4.	नदि	5.	कुक्कुटी	6.	चमु
7.	धेनुया	8.	किन्नरी		

बोध प्रश्न

4. गंगायं नहायन्ति- हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

5. बुद्धों की शरण- पालि में अनवुाद कीजिए।

6. बुद्धानं- इस पद से पालि में वाक्य बनाइये।

4.6 तृतीयो पयोग पाठो

(क)

अधोलिखित का हिन्दी में अनुवाद कीजिये–

1. सब्बे धम्मा अनत्ता।
2. सब्बे पाना दण्डस्स तसन्ति।
3. बुद्धो सब्बानि झानानि जानाति।
4. सब्बे देवा सग्गे विचरन्ति।
5. सब्बाय भिक्खुनियो बुद्धं वन्दन्ति।
6. सब्बासु दिसासु भिक्खु मेत्तं भावेति।

(ख)

पालि में अनुवाद कीजिये–

1. सब मनुष्य मरणशील हैं।
2. देवता स्वर्ग में विचरण करते हैं।
3. जो दान देता है वह प्रसन्न रहता है।
4. सभी भिक्षुओं का शरणस्थान बुद्ध है।
5. कौन किस फल के लिए इस धर्म का उपदेश देता है।

(ग)

अधोलिखित शब्दों से वाक्य बनाइये–

सब्बे मनुस्से, सब्बे देवा, सब्बानि फलानि, सब्बे दारका, सब्बानि पोत्थकानि, सब्बेसु, धम्मेसु, पोत्थकानि।

नमस्सन्ति, वदन्ति, खादन्ति, पठन्ति, विहरन्ति, खादन्ति, पण्न्ति।

बोध प्रश्न

7. सब्बे धम्मा अनत्ता- हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

8. सब मनुष्य मरणशील हैं- पालि में अनुवाद कीजिए।

9. पोत्थकानि-इस पद से पालि में वाक्य बनाइये।

4.7 चतुत्थो पयोग पाठो

(क)

अधोलिखित का हिन्दी में अनुवाद कीजिये–

वेरेन वेरानि न सम्मन्ति। बातो दुब्बलं रुक्खं पसहति। पापकारी सोचति। पुञ्ञकारी मोदति। पापकारी तप्पति। पुञ्ञकारी नन्दति। धीरा निब्बाणं फुसन्ति। झायी विपुलं सुखं

पप्पोति। पण्डिता पमादं निन्दन्ति। देवा अप्पमादं पसंसन्ति। झानेन पञ्ञा परिपूरति। मारो मग्गं न विदन्ति। भिक्खु धम्मं विजानाति। बालो मिच्छा मञ्ञति। बालस्स इच्छा वड्ढति। बुद्धस्स सावको सक्कारं न अभिनन्दति। सप्पुरिसा सब्बत्थ वजन्ति। पण्डिता कल्याणे मित्ते भजन्ति। विसोकस्स परिळाहो न विज्जति। मनो पापस्मिं न रमते। सब्बे दण्डस्स तसन्ति। सब्बे मच्चुनो भायन्ति। यो भूतानि विहिंसति सो सुखं न लभते। या अञ्ञं दुस्सति, सो दुक्खं निगच्छति। इदं रूपं भिज्जति। सरीरं जरं उपेति। राजरथा जीरन्ति।

(ख)

पालि में अनुवाद कीजिये–

भिक्षु निर्वाण चाहता है। लड़के धर्म सुनते हैं। ध्यानी लोग ध्यान करते हैं। हम लोग धर्म जानते हैं। भगवान विहरते हैं। तुम लोग हँस रहे हो (हसथ), सूर्य चमक रहा है (दिब्बति)। लड़के किताब पढ़ रहे हैं। अवैर से वैरी को जीतता है। अक्रोध से क्रोध को जीतता है।

(ग)

अधोलिखित शब्दों से वाक्य बनाइये–

(1) गहपति, वन–संडो, रुक्खो, फलं, गामो, दारको, तापसो, तपं।

(2) पटिवसति (= रहता है), पटिवसन्ति, चरति, चरन्ति, पतति, पतन्ति, आरोहति (=चढ़ता है), आरोहन्ति, खादति, खादन्ति।

बोध प्रश्न

10. वेरेन वेरानि न सम्मति– हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

11. हम लोग धर्म जानते हैं– पालि में अनुवाद कीजिए।

12. रुक्खो– इस पद से पालि में वाक्य बनाइये।

4.8 पंचमो पयोग पाठो

(क)

अधोलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिये–

अम्हे बुद्धं सरणं गच्छाम। अम्हाकं बुद्धो, अम्हाकं धम्मो, अम्हाकं संघो। तुम्हे कल्याणे मित्ते भजथ। इसे धम्मा होन्ति। इमस्स भिक्खुनो इमं अप्पमादफलं होति। तुम्हेहि कुलेसु चारितं न आपज्जितब्बं। इमेहि अंगेहि समन्नागतो भद्दो होति। एतं अत्थं विजानाति। एतदवोच। अयं भिक्खु अमुस्मिं अरञ्ञे विहरति।

(ख)

पालि में अनुवाद कीजिये–

1. हम लोग प्राणी नहीं मारते हैं। तुम लोगों के आचरण को हमारे आचार्य पसन्द करते हैं। हमारी किताब तुम्हारे घर में हैं। इन भिक्षुओं का विहार उन मनुष्यों के ग्राम में है। बुद्ध इन भिक्षुओं से पूजित है। हमारा बुद्ध, हमारा धर्म, हमारा संघ है। उन भिक्षुओं के द्वारा बुद्ध के वे सब धर्मोपदेश सुने गये हैं। उनका धर्म तथा हमारा धर्म एक ही है। किसका धर्म अच्छा है? बुद्धों का शासन ही हमारा धर्म है।

(ग)

अधोलिखित शब्दों से वाक्य बनाइये–

(1) अम्हाकं, तुम्हाकं, अम्हेहि, तुम्हेहि, एसो, इमानि, असु, अदुं, इमिस्सा, इमासु, अमूसानं एतानि।

(2) पोत्थकं, गामो, पुत्तो, रुक्खो, दारको, दारिका, धम्मो।

बोध प्रश्न

13. अयं भिक्खु अयुस्मिं अरञ्जे विहरति- हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

14. बुद्धों का शासन ही हमारा धर्म है- पालि में अनुवाद कीजिए।

15. इमानि- इस पद से पालि में वाक्य बनाइये।

4.9 छट्ठो पयोग पाठो

(क)

अधोलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिऐ–

1. बुद्धं सरणं गमिस्सामि। धम्मं सरणं गच्छिस्सामि। संघ सरणं गमिस्सथ। झानं भावेस्सामि। पञ्ञं भावेस्सन्ति। काये उदयं च वयं च पस्सिस्साति। निब्बाणं सच्छिकरिस्सामि। अनागते बुद्धो भविस्सामि। अञ्ञे पि बुद्ध-धम्मा भविस्सरे (भविस्सन्ति)। संबोधिं पापुणिस्सति। भिक्खु सुखं विहरिस्सति।

(ख)

पालि में अनुवाद कीजिये–

1. बुद्ध की शरण जाऊँगा। धम्म की शरण जाऊँगा। संघ की शरण जाऊँगा। बच्चे बुद्ध को नमस्कार करेंगे। धम्मचक्र को घुमाऊँगा। गाँव को जाऊँगा। संघ को दान देंगे। भिक्षुओं को दान देंगे। भिक्षु वन में ध्यान करेगा। भिक्खु गाँव में जायेंगे।

(ग)

अधोलिखित शब्दों से वाक्य बनाइये–

(क) नाम पदानि – धनं, दानं, कम्मं, धम्मं, कपणो, माता, भाता, माणवको।

(आ) धातु – लभ, पच, हस, भास, भू, कथ, तन, तुद, दा।

बोध प्रश्न

16. झानं भावेस्सामि- हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

17. बुद्ध की शरण जाऊँगा - पालि में अनुवाद कीजिए।

18. दानं- इस पद से पालि में वाक्य बनाइये।

4.10 सत्तमो पयोग पाठो

(क)

अधोलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिये–

1. निच्चं झायिनो धीरा निब्बानं फुसन्ति।
2. धम्मजीविनो अप्पमत्तस्स यसो अभिवड्ढति।
3. यो भिक्खु मेत्ताविहारी, सो सन्तं सुखं पदं अधिगच्छति।
4. अत्ता अत्तनो नाथो होति, अत्ता अत्तनो गति होति।
5. राजानो राजूहि सद्धिं सन्ययकारिनो होन्ति।

(ख)

पालि में अनुवाद कीजिये–

1. ब्रह्मा बुद्धों को नमस्कार करता है।
2. राजा लोग भी वन्दना करते हैं।
3. इन्द्र भी बुद्ध को नमस्कार करता है।
4. सभी देव बुद्धों की वन्दना करते हैं।
5. गुणवान् पुरुष लोगों से मेल (सन्थवं) करता है।

(ग)

अधोलिखित शब्दों से वाक्य बनाइये–

अस्सो, सुरियं, महेसक्खो, भद्दं, कारुणिको, पञ्ञावन्तानं, वीरा, सतिमता, गुणवन्तानं, सच्चवादिनो।

बोध-प्रश्न

19. अत्ता अत्तनो नाथो होति, अत्ता अत्तनो गति होति- हिन्दी में अनुवाद कीजिए।
20. सभी देव बुद्धों की वंदना करते हैं- पालि में अनुवाद कीजिए।
21. अस्सो- इस पद से पालि में वाक्य बनाइये।

4.11 अट्ठो पयोग पाठो

(क)

अधोलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिये–

1. माया देवी बोधिसत्तं दस मासे कुच्छिना परिहरि।
2. सा ञाति-घरं गन्तुकामा महाराजस्स आरोचेसि।
3. महाराजा कपिलवत्थुतो याव देवदहनगरा मग्गं समं कारेसि।
4. नगरा बहि लुम्बिनी-वनं नाम मंगल-सालवनं अहोसि।
5. सा देवी साल-वनं पाविसि।
6. सा साल-साखं गण्हि।
7. तावद् एव अस्सा कम्मज-वाता चलिंसु।

8. अथ अस्सा साणिं परिक्खिपिंसु।

9. महाजनो पटिक्कमि।

10. मायादेवी बोधिसत्तं विजायि।

(ख)

पालि में अनुवाद कीजिये–

बोधिसत्त्व प्रकट हुये। सात कदम चले। ब्रह्मा लोग आए। सभी देवता पृथ्वी पर आए। ब्रह्मा और देवताओं ने बोधिसत्त्व सिद्धार्थ को नमस्कार किया। सिद्धार्थ के पैदा होने से सब को खुशी हुई। ब्रह्मादि देवता काँपने लगे। विपुल आलोक हुआ। बोधिसत्त्व सिद्धार्थ ने सिंहनाद किया।

(ग)

अधोलिखित नाम पदों और धातुओं से वाक्य बनाइये–

दारका, फलानि, अग्गि, पापानि, भिक्खू, मुनयो, पठनं, गमनं, भावना, झानानि।

खाद, इह, वि+नुद (हराना), झा (ध्यान करना), कर, भू।

बोध प्रश्न

22. मायादेवी बोधिसत्तं विजयि– हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

23. सा देवी सालन्वनं पाविसि– हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

24. मुनयो– इस पद से पालि में वाक्य बनाइये।

4.12 नवमो पयोग पाठो

(क)

अधोलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिये–

1. किसा गोतमी सावत्थियं दुग्गतकुले निब्बत्ति।

2. 'गोतमी' ति अस्सा नामं अहोसि।

3. तस्सा किस–सरीरताय पन जना तं 'किसा गोतमी' ति वोहरिंसु।

4. यदा सा पतिकुलं अगमासि, तदा सब्बे तं 'दुग्गतकुसस्स धीता' ति परिभविसु।

5. सा एकं पुत्त विजायि।

6. पुत्तलाभेन च अस्सा सम्मानं अकंसु।

7. सो पन पुत्तो कीळनकाले ठितो एव कालं अकासि।

8. तेन अस्सा सोकुम्मादो (सोक+उम्मादो) उप्पज्जि।

9. सा पुत्तस्स मत–कळेवरं अंकेन आदाय 'पुत्तस्स में भेसज्जं देथा'ति गेह–द्वार पटिपाटिया नगरे विचरि।

10. मनुस्सा 'भेसज्जं कुतो'ति परिभासन्ति।

(ख)

1. सा किसा गोतमी आमक-सुसाने पुत्तस्स कळेवरं छुड्डेत्वा इयं गाथं आह–

"न गाम-धम्मो न निगमस्स धम्मो
न चापियं एककुलस्स धम्मो।
सब्बस्स लोकस्स सदेवकस्स
एसो व धम्मो यदिदं अनिच्चता"ति।।

2. एवं च पन वत्वा सा (किसा गोतमी) सत्थु सन्तिकं अगमासि।

3. अथ नं सत्था "लद्धो ते गोतमि, सिद्धत्थ को"ति आह।

4. सा पन "निट्ठितं भन्ते, सिद्धत्थकेन कम्मं, पतिट्ठानं में होथा"ति आह।

(ग)

पालि में अनुवाद कीजिये–

1. मैं प्रातःकाल निद्रा से जागता हूँ।

2. मैं उठ कर बैठता हूँ।

3. हाथ मुँह धोता हूँ।

4. पैर धोकर बैठ जाता हूँ।

5. तब याद करते हुऐ श्वाँस लेता हूँ।

6. स्मरण रखते श्वाँस फेंकता हूँ।

7. लोक में लोभ को छोड़कर मैत्री भावना करता हूँ।

8. सभी शीलवान् लोग ऐसा ही करते हैं।

9. हम लोग भी ऐसा ही करेंगे।

10. वे लोग भी ऐसा ही करेंगे।

बोध प्रश्न

25. सा एकं पुत्त विजायि– हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

26. 'गोतमी' ति अस्सा नामं अहोसि – हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

27. तेन अस्सा सोकुम्मादो उप्पजि– हिन्दी में अनुवाद कीजिये।

4.13 दसमो पयोग पाठो

(क)

अधोलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिये–

1. ब्रह्मा भगवन्तं याचि।

2. भगवा धम्मचक्कं पवत्तयि।

3. बहूनं देव-मनुस्सानं अभिसमयो अहु।
4. भगवा हि सब्बं ददाति।
5. भगवा हि चतु-सच्चं पकासेति।
6. भगवा पाणिनं अनुकम्पति।
7. भिक्खू भगवन्तं परिवारेन्ति।
8. पापकारी सोचति।
9. पुञ्ञकारी मोदति।
10. भगवा भिक्खं गण्हाति।

(ख)

हिन्दी में अनुवाद कीजिये–

1. भगवान् एक सप्ताह बैठे।
2. सारिपुत्त ने भगवान् से पूछा।
3. राजा ने बुद्ध को अभिवादन किया और दान भी दिया।
4. लड़कियाँ गा रही हैं।
5. बुद्ध ने ब्रह्मा की याचना स्वीकार की।
6. मैं शील का पालन करता हूँ।
7. मैं पुस्तक खरीदता हूँ।
8. मनुष्य बुड्ढा होता है।
9. सभी लोग दंड से त्रस्त होते (तसन्ति) हैं।
10. सभी लोग मौत से डरते (भायन्ति) हैं।

बोध प्रश्न

28. भगवा धम्मचक्कं पवत्तयि - हिन्दी में अनुवाद कीजिए।
29. पुञ्ञकारी मोदति - हिन्दी में अनुवाद कीजिए।
30. सभी लोग मौत से डरते हैं - पालि में अनुवाद कीजिए।

4.14 सारांश

भाषा विशेष में दक्षता के लिए उस भाषा की वर्णमाला, शब्दरूप, धातुरूप, अव्यय, वाक्य प्रयोग, अनुवाद आदि में ज्ञान और गति का होना आवश्यक है। प्रस्तुत पाठ में पालि-भाषा से सम्बन्धित उपर्युक्त विषयों की सरलतम विधि से प्रस्तुति हुई है।

4.15 शब्दावली

1. उरग = सर्प, साँप।
2. खत्तियानं = क्षत्रियों का।

3.	झानं	=	ज्ञान।
4.	चीवर	=	बौद्ध भिक्षुओं के वस्त्र।
5.	सद्धा	=	श्रद्धा।
6.	सरणं	=	शरण।
7.	पोत्थकं	=	पुस्तक, किताब।
8.	रुक्खो	=	वृक्ष, पेड़।
9.	पुत्तो	=	पुत्र, बेटा।
10.	भाता	=	भ्राता, भाई।
11.	निच्चं	=	नित्य।
12.	अत्ता	=	आत्मा।
13.	अस्सो	=	अश्व, घोड़ा।
14.	अग्गि	=	अग्नि, आग।
15.	भगवा	=	भगवान्।
१६.	अनत्ता	=	अनात्म

4.16 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. कच्चान-व्याकरणं- कच्चान, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्या, वाराणसी।
2. मोग्गल्लान-व्याकरणं- मोग्गल्लान, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर।
3. पालि-महाव्याकरण- भिक्षु जगदीश कश्यप, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
4. बालावतार- धम्मकीत्ति, बौद्ध भारती, वाराणसी।
5. पालि व्याकरण- भिक्षु धर्मरक्षित, बौद्ध आकर ग्रन्थमाला, वाराणसी।

4.17 सहायक-ग्रन्थ

1. पालि साहित्य का इतिहास- राहुल सांकृत्यायन, उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
2. पालि साहित्य का इतिहास- भरत सिंह उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।
3. पालि-हिन्दी कोश- भदन्त आनन्द कौशल्यायन, सिद्धार्थ बुक्स, शाहदरा, दिल्ली।

4.18 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. पुल्लिङ्ग, तृतीया विभक्ति, एकवचन।

2. बुद्धों का धर्म।
3. भिक्खूनं संघो।
4. गंगा में नहाते हैं।
5. बुद्धानं सरणं।
6. बुद्धानं सासनं।
7. सभी धर्म अनात्म हैं।
8. सब्बे मनुस्सा मरणधम्मा।
9. अहं पोत्थकानि पठामि।
10. वैर से वैर शान्त नहीं होता है।
11. मयं धम्मं जानीम।
12. तत्थ रुक्खो अत्थि।
13. यह भिक्षु इस वन में रहता है।
14. बुद्धानं सासनमेव अम्हाकं धम्मो।
15. इमानि फलानि सन्ति।
16. ध्यान की भावना करता हूँ।
17. बुद्धं सरणं गच्छामि।
18. भिक्खूनं दानं।
19. स्वयं अपना मालिक होता है, स्वयं अपनी गति के लिए जिम्मेवार होता है।
20. सब्बे देवा बुद्धे वन्दन्ति।
21. एसो एको अस्सो अत्थि।
22. मायादेवी ने बोधिसत्त्व को जन्म दिया।
23. उस देवी ने सालवन में प्रवेश लिया।
24. मुनियो गामं गच्छन्ति।
25. उसने एक पुत्र को जन्म दिया।
26. 'गोतमी' ऐसा इसका नाम पड़ा।
27. उससे उसे शोकोन्माद उत्पन्न हुआ।
28. भगवान ने धर्मचक्र प्रवर्तन किया।
29. पुण्य करने वाला प्रसन्न होता है।
30. सब्बे मच्चुनो भायन्ति।

4.19 अभ्यास प्रश्न

1. वर्तमालकाल का प्रयोगकर पाँच वाक्य लिखें।

....

....

....

....

....

2. तुम्ह, अम्ह, त, इम शब्द के पठमा एवं ततिया विभक्ति के रूप लिखें।

....

....

....

....

3. लभ धातु के भविस्सतकाल के रूपों का प्रयोग कर पाँच वाक्य बनाइए।

....

....

....

....

4. निम्नलिखित पदों से पालि में वाक्य बनाइये।

गामो ....

बुद्धानं ....

भिक्खु ....

दारको ....

भगवा ....

5. निम्नलिखित क्रिया- पदों से पालि में वाक्य बनाइये।

गच्छामि ....

होति ....

भवति ....

विहरति ....

जानाति ....

पञ्चमः पाठः (Unit-V)
पालि गद्यांश (अनुवाद के लिए)

पाठ संरचना

5.1 प्रस्तावना

इस पाठ में अनुवाद के माध्यम से पालि भाषा के ज्ञान के लिये अनेक पालि गद्यांश दिये गये हैं। पालि गद्यांश का हिन्दी अथवा अंग्रेजी में अनुवाद से पालि भाषा को समझने की कौशल का विकास हो सकेगा। अपठित पालि पाठों से छात्रों में पालि के अनेक नवीन शब्दावलियों का ज्ञान हो सकेगा। इस पाठ में पालि कथा साहित्य एवं भगवान बुद्ध के विचरण के समय दिये गये समाजोययोगी मूल्यपरक शिक्षाओं का संकलन किया गया है। प्रस्तुत गद्यांश पालि जातक अट्टकथा, दीघनिकाय, तथा खुद्दक निकायों के विविध लधु पालि पाठों का संकलन है।

5.2 उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन से आप–

- पालि के विविध शब्दावलियों से परिचित हो सकेंगे।
- भगवान् बुद्ध द्वारा प्रतिपादित मूल्यपरक शिक्षाओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- पालि में अनुवाद कौशल का विकास कर सकेंगे।
- कथाओं के माध्यम से पालि समझने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

5.3 लोभसुत्तं

"एकधम्मं, भिक्खवे, पजहथ; अहं वो पाटिभोगो अनागामिताय। कतमं एकधम्मं? लोभं, भिक्खवे, एकधम्मं पजहथ; अहं वो पाटिभोगो अनागामिताया"ति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति–

"येन लोभेन लुद्धासे, सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं।
तं लोभं सम्मदञ्ञाय, पजहन्ति विपस्सिनो।
पहाय न पुनायन्ति, इमं लोकं कुदाचनं"ति।।

बोधप्रश्न

१. अनागामिता कब प्राप्त होती है?

२. लोभ में पड़ने पर क्या परिणाम होता है?

३. लोभ के त्याग कर देने पर क्या अनागामिता प्राप्त होती है?

5.4 अविज्जानीवरणसुत्तं

"नाहं, भिक्खवे, अञ्ञं एकनीवरणं पि समनुपस्सामि येन नीवरणेन निवुता पजा दीघरत्तं सन्धावन्ति संसरन्ति यथयिदं, भिक्खवे, अविज्जानीवरणं। अविज्जानीवरणेन हि, भिक्खवे, निवुता पजा दीघरत्तं सन्धावन्ति संसरन्ती"ति।

बोधप्रश्न

४. प्राणी के संसारबन्धन की बाधा क्या है?

५. अविद्या का क्या परिणाम होता है?

5.5 मूलसुत्तं

"तीणिमानि, भिक्खवे, अकुसलमूलानि। कतमानि तीणि? लोभो अकुसलमूलं दोसो अकुसलमूलं, मोहो अकुसलमूलं – इमानि खो, भिक्खवे, तीणि अकुसलमूलानी"ति। एतमत्थं भगवा अवोच। तत्थेतं इति वुच्चति।

"लोभो दोसो च मोहो च, पुरिसं पापचेतसं।
हिंसन्ति अत्तसम्भूता, तचसारं व सम्फलं"ति।।

बोधप्रश्न

६. अकुशलमूल कितने हैं?

७. प्रथम अकुशलमूल क्या है?

८. तृतीय अकुशलमूल क्या है?

5.6 सुलभसुत्तं

"चत्तारिमानि, भिक्खवे, अप्पानि चेव सुलभानि च, तानि च अनवज्जानि। कतमानि चत्तारि? पंसुकूलं, भिक्खवे, चीवरानं अप्पं च सुलभं च, तं च अनवज्जं; पिण्डियालोपो, भिक्खवे, भोजनानं अप्पं च सुलभं च, तं च अनवज्जं; रुक्खमूलं, भिक्खवे, सेनासनानं अप्पं च सुलभं च, तं च अनवज्जं; पूतिमुत्तं, भिक्खवे, भेसज्जानं अप्पं च सुलभं च तं च अनवज्जं; इमानि खो, भिक्खवे, चत्तारि अप्पानि चेव सुलभानि च तानि च अनवज्जानि। यतो खो, भिक्खवे, भिक्खु अप्पेन च तुट्ठो होति सुलभेन च अनवज्जेन च, इमस्साहं अञ्ञतरं सामञ्ञङ्गं ति वदामी"ति।

बोधप्रश्न

९. कितनी वस्तुएँ अल्प, परन्तु सुलभ एवं निर्दोष होते हैं।

१०. वस्त्रों में कौन सुलभ एवं निर्दोष होते हैं?

११. औषधियों में कौन सी वस्तुएँ सर्वसुलभ एवं निर्दोष हैं?

5.7 सारांश

प्रस्तुत पाठ में पालि गंद्याश के माध्यम से छात्रों में अनुवाद कौशल के विकास के लिये प्रयास किया गया है। इस पाठ के अध्ययन से सुत्तपिटक में संग्रहीत बुद्धवचन से भी छात्र अवगत हो सकेंगे। लोभसुत्त में लोभ के गुण-दोष, मुलसुत्त में अकुशल मूल, अविज्जानवरणसुत्तं में प्राणी के संसारबंधन का कारण तथा परिणाम एवं सुलभसुत्तं में सुलभ एवं निर्दोष वस्तुओं का विवेचन किया गया है।

5.8 शब्दावली

१.	पजहथ	-	छोड़ दो।
२.	अनागामिताय	-	इस संसार में पुनः न आना।
३.	पाटिभोगो	-	प्राप्त होना।
४.	वुच्चति	-	कहता हूँ।
५.	लुद्धासे	-	वश में होकर।
६.	विपस्सिनो	-	अन्तः साधक।
७.	सम्मदञ्ञाय	-	वास्तविकता भलीभाँति।
८.	अविद्या	-	अपने आप का ज्ञान न होना।
९.	नीवरण	-	बाधा।
१०.	निवुता	-	आबद्ध होकर, बँधकर।
११.	सन्धावन्ति	-	दौड़ते हैं।
१२.	दीघरत्तं	-	अधिक समय तक।
१३.	अकुशलमूलानि	-	अकुशलधर्म के उत्पादक।
१४.	दोषो	-	द्वेष।
१५.	तचसारं	-	कदली के फल।
१६.	सम्फलं	-	वृक्ष।
१७.	पापचेतसं	-	पाप चिन्तन करने वाला।
१८.	अनवज्जानि	-	निर्दोष।
१९.	पुंसकुलं	-	पांशुकुल (फटे चिथड़े)।
२०.	चत्तारि	-	चार।
२१.	अनवज्जेन	-	प्रव्रज्या।
२२.	रुक्खमूलं	-	वृक्षमूल।
२३.	तुट्ठो	-	सन्तुष्ट।

5.9 सन्दर्भ ग्रन्थ

१. दीघनिकाय भाग – स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, बौद्ध भारती, वाराणसी १९९७।

२. खुद्दकनिकाय – स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, बौद्ध भारती, वारणसी २००३।

३. पालिजातक अट्टकथा – भदन्त आनन्द कौशलनायन, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग २००७।

5.10 सहायक ग्रन्थ

१. जातकपालि – भिक्खु जगदीश कश्यप – पालि प्रकाशन समिति नव नालन्दा विहार।

२. पालि साहित्य का इतिहास – भरतसिंह उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।

३. पालि प्रवेशिका – कोमलचंद जैन, तारा प्रकाशन, वाराणसी।

5.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

१. लोभ रूप एक धर्म को छोड़ देने पर अनागामिता प्राप्त होती है।

२. लोभ में पड़ने पर साधारण जन दुर्गति को प्राप्त होते रहते हैं।

३. लोभ के त्याग करने पर वे इस लोक में पुनः कभी नहीं आते।

४. प्राणी के संसारबन्धन की बाधा 'अविद्या' है।

५. अविद्यारूपी बाधा से बंधे हुए (धिरे हुए) प्राणी चिरकाल तक इस संसार में दौड़ते रहते हैं, संसरण करते रहते हैं।

६. अकुशलमूल तीन हैं।

७. प्रथम अकुशलमूल लोभ है।

८. तृतीय अकुशलमूल मोह है।

९. चार वस्तुएँ अल्प परन्तु सुलभ एवं निर्दोष होते हैं।

१०. वस्त्रों में पांशकूल (फटे चिथड़े) सुलभ एवं निर्दोष हैं।

११. औषधियों में मुत्रभावित हर्रे आदि औषधियाँ सर्वसुलभ एवं निर्दोष होती हैं।

5.12 अभ्यासप्रश्न

१. "येन लोभेन लुद्धासे .... कुदाचनं ति।" की व्याख्या करें।

....

....

....

....

२. पुनर्जन्म के क्या कारण हैं?

....

....

....

....

३. अविद्या को कैसे दूर किया जा सकता है?

....

....

....

....

४. सुलभसुत्तं पाठ से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

....

....

....

....

५. अकुशलधर्म के उत्पादक मूल कारण कौन-कौन से हैं? विवेचन करें।

....

....

....

....

६. कौन-कौन सी चार वस्तुएँ अल्प, परन्तु सुलभ एवं निर्दोष होती हैं? विवेचन करें।

....

....

....

....

प्रायोगिक प्रश्न (Assignments)

30 अंक

इस पाठ्यक्रम में 30 अंकों का एक प्रायोगिक (Assignment) कार्य रखा गया है। निम्नोक्त विषयों में से किसी एक पर विवेचनात्मक विस्तृत निबन्ध अध्येता से लिखने की अपेक्षा है। उससे सम्बन्धित ग्रन्थों का निर्देश भी किया गया है।

- पालि साहित्य के विकास में तत्कालीन राजाओं का योगदान/ पालि भाषा को राजाश्रय

अथवा

- पालि साहित्य से सम्बद्ध पत्रिकाओं का सूचीकरण

अथवा

- पालि कोश साहित्य पर निबन्ध लेखन

अथवा

- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में धम्मपद की प्रासंगिकता

सहायक ग्रन्थ निर्देश –

1. पालि साहित्य का इतिहास – भरतसिंह उपाध्याय, भरतसिंह उपाध्याय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद।
2. पालि साहित्य का इतिहास – राहुल सांकृत्यायन, उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
3. धम्मपद – सम्यक् प्रकाशन, पाकेट–03, क्लब रोड, पश्चिम पुरी, नई दिल्ली।
4. एशिया के महान् बौद्ध सम्राट् – भिक्खु मेधंकर।